सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 203, नई दिल्ली, मंगलवार 30 सितम्बर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

समझनी है जिंदगी तो पिछे देखो, जीनी है जिंदगी तो आगे देखो...

03 बॉलीवुड स्टार बॉबी देओल करेंगे लाल किले पर रावण वध

06 ध्वनि प्रदूषण का गहराता संकट

08 गैंगस्टरों से जुड़े अपराधों की रिपोर्ट हेल्पलाइन '1800-330-1100' पर करें – पुलिस प्रमुख

रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव से नई दिल्ली और पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशनों पर भीड कम करने के प्रति बादली रेलवे स्टेशन, पर कुछ ट्रेनों को हाल्ट (रोकने) का अनुरोध

संजय बाटला

बादली रेलवे स्टेशन पर ट्रेनों के ठहराव हेतु नई दिल्ली और पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशनों पर भीड़भाड़ कम करने के लिए बादली रेलवे स्टेशन पर कुछ ट्रेनों को रोकने का अनुरोध।

नई दिल्ली और पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशनों पर भीड़भाड़ कम करने के लिए पंजाब की ओर जाने वाली कुछ ट्रेनों को बादली रेलवे स्टेशन पर रोका जाए। इस कदम से न केवल रेल परिचालन की समग्र दक्षता में सुधार होगा, बल्कि यात्रियों के अनुभव में भी सुधार होगा।

अनुरोध के कारण:

1. नई दिल्ली और पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशनों पर भीड़भाड़ कम करने से देरी कम करने और समय की पाबंदी में सुधार करने में मदद मिलेगी।

2. बादली रेलवे स्टेशन यात्रियों के लिए ट्रेन पकड़ने के लिए एक सुविधाजनक विकल्प के रूप में काम कर सकता है, जिससे मुख्य स्टेशनों पर भार कम हो जाएगा।

3. इस कदम से क्षेत्र में रेलवे बुनियादी ढांचे के संतुलित विकास को भी बढ़ावा मिलेगा।

ठहराव के लिए पात्र ट्रेनें: बादली रेलवे स्टेशन पर रुकने के लिए विचार की जा सकने वाली कुछ ट्रेनें हैं:

1. 12450 चंडीगढ़ - मडगाओं जं. गोवा संपर्क, क्रांति एक्सप्रेस

2. 12484 अमृतसर - कोचुवेली एक्सप्रेस

नए ठहराव के लिए मानदंड: रेल मंत्रालय की नीति के अनुसार, नए ठहरावों पर निम्नलिखित कारकों के आधार पर विचार किया जाता है:

1. लागत वसूली: नए ठहराव से 12,716 रुपये से 24,506 रुपये तक की लागत वसूल होगी।

2. यात्री यातायात: 500 किमी की दूरी के लिए प्रति ट्रेन प्रति दिन न्यूनतम 40 स्लीपर श्रेणी टिकट या अन्य श्रेणियों में इसके समतुल्य किराया।

3. परिचालन व्यवहार्यता: ठहराव से लाइन क्षमता और ट्रेनों की समयपालनता प्रभावित नहीं होनी चाहिए।

आपसे अनुरोध करता हूँ कि इस प्रस्ताव पर विचार करें और बादली रेलवे स्टेशन पर कुछ ट्रेनों के ठहराव के लिए आवश्यक कदम उठाएँ। इससे हज़ारों यात्रियों को लाभ होगा और समग्र रेल नेटवर्क में सुधार होगा। जसपाल सिंह

जीएसटी कम होने से किसको मिला फायदा, जनता को या दूध और दूध निर्मित सामान बनाने और बेचने वालों को

संजय बाटला

भारत सरकार ने जनहित में जीएसटी की नई दर लागू कर जनता में एक विश्वास जगाया पर उसका फायदा क्या मिला जनता को बड़ा सवाल ?

दूध और दूध निर्मित सामानों पर जीएसटी के कम होने से धार्मिक एवम् सामाजिक त्योहारों पर जनता को एक अच्छा फायदा होने की आशा जागी थी पर दूध और दूध से निर्मित सामान बनाने वालों ने सरकार को ही ठेंगा दिखा दिया और अपने किसी भी प्रोडक्ट की कीमत नहीं घटाई।

दूध, दही, खोया, पनीर, धाप मिठाइयां, घी या अन्य किसी भी प्रोडक्ट का रेट नहीं कम किया गया और इन सभी बातों को देखने के बाद भी चुप है सरकार और विभाग जिनका दायित्व है इस पर नजर रखना और कार्यवाही करना।

आख़िर क्यों, क्या अमूल, मदर डेयरी या अन्य दूध और दूध से निर्मित प्रोडक्ट निर्मित करने वालों पर सरकार या विभाग का दबाव डालना संभव नहीं।

जनता को जीएसटी की दर कम कर के वाहवाही लूटना ही सिर्फ सरकार का ध्येय था, जनता को उसका फायदा पहुंचवाना नहीं।

दूध और दूध से निर्मित सामान बनाने वालों ने पिछले दो सालों में ही अपने प्रोडक्ट के दामों में 100% से अधिक की वृद्धि कर जनता को खर्चों के बुझ में डाला है और सरकार तब भी चुप रही थी पर अब तो सरकारी राजस्व में आने वाली दर पर सरकार द्वारा ही कटौती की घोषणा की गई है फिर इन सभी के द्वारा 22 तारीख से ही

1. अपने प्रोडक्ट के दामों में कटौती की घोषणा या कटौती क्यों नहीं की, बड़ा सवाल?

2. सरकार और विभाग द्वारा अब तक कोई कार्यवाही क्यो नहीं की गई, बड़ा सवाल ?

"टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत" सेवा ही संकल्प है!

पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट

हमारा मकसद सिर्फ मदद नहीं, बदलाव लाना है।

A voice for the voiceless, and a hand for the helpless.

हमारा उद्देश्य है समाज के उन हिस्सों तक पहुँचना जो आज भी भूख, शिक्षा और आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं। हम जरूरतमंदों को बिना भेदभाव के भोजन, बच्चों को मुफ़्त शिक्षा, और समाज को जागरूकता देने का कार्य कर रहे हैं।

क्या मिलेगा हमसे जुड़कर

Ground-level food distribution,

Getting children free education,

हम मानते हैं – छोटा कदम भी बड़ा बदलाव ला सकता है।

If you believe in humanity, equality, and service — then you're already a part of our family.

हमें सपोर्ट करें और एक आवाज़ बनें इस बदलाव की।

Together, let's serve. Together, let's change.

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से जुड़ने के लिए

SCAN ME

नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें और फार्म भरकर जुड़े,

www.tolwa.com/member.html

स्कैनर को स्कैन कर के भी आप टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से फार्म भर कर जुड़ सकते हैं,

वेब साइट पर www.tolwa.com पर भी जाकर आप फार्म भर के टोलवा ट्रस्ट से जुड़ सकते हैं। www.tolwa.com

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत
tolwaindia@gmail.com
www.tolwa.com

स्टॉल प्रस्ताव :
सिंगल साइड ओपन स्टोल : 2000
कॉर्नर साइड स्टोल : 3500
तीन साइड ओपन स्टोल : 4500
सिर्फ एक टेबल : 1000
सिर्फ दो टेबल : 1250

कार्यक्रम विवरण :
रक्षा गरबा–डांडिया और दुर्गा पूजा महोत्सव
स्थान : डीडीए ग्राउंड, रामलीला ग्राउंड के सामने, स्टेट ट्रांसपोर्ट अथॉरिटी के बगल में, PNB बैंक के पीछे, सेक्टर 10, द्वारका, नई दिल्ली 110075

तारीखें : 22 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025
* दुकान का आकार : 10 फीट x 10 फीट
* शामिल सुविधाएँ :
* 2 कुर्सियाँ * 2 टेबल
*लाइट व चार्जिंग प्वाइंट

भुगतान की शर्तें :
* अग्रिम भुगतान आवश्यक
* बुकिंग के समय 50% भुगतान
* कब्जे के समय 50% भुगतान

संपर्क : इंदु राजपूत
मोबाइल : 9210210071

विशेष सूचना
नवरात्रि में माता‌रानी की खंडित मूर्तियाँ, टूटे हुए फ़ोटो, पुरानी चुनरियाँ और नवरात्रि में बोए गए जवारों का विसर्जन
● दशहरे के दूसरे दिन
● दिनांक : 3 अक्टूबर की सुबह
● स्थान : रक्षा नवरात्रि गरबा एवं दुर्गा पूजा ग्राउंड
स्थान विवरण :
रामलीला मैदान के सामने,
आरटीओ ऑथोरिटी के पास,
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली
संपर्क सूत्र : इंदु राजपूत, मोबाइल : 9210210071
सभी श्रद्धालुओं से निवेदन है कि इस पावन विसर्जन में सहभागी बनें।

"श्री श्री दुर्गा शरणम" तैंतीसवां सार्वजनिन दुर्गोत्सव

प्रिय महोदय,

आपको यह जानकर अति हर्ष होगा कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी आपके शहर उत्तम नगर में 'उत्तम नगर कालीबाड़ी द्वारा शनिवार दिनांक 27 सितंबर, 2025 से 2 अक्टूबर, 2025 बृहस्पतिवार तक सी-50, मनसा राम पार्क, नई दिल्ली-59 में श्री श्री दुर्गा माँ की पूजा एवम् 20 अक्टूबर, 2025 सोमवार श्री श्री काली माँ की पूजा का भव्य आयोजन किया जा रहा है। अतः आप सबसे हार्दिक निवेदन है कि आप सब इस विशाल आयोजन में सम्मिलित होकर माँ दुर्गा एवम् काली माँ का आर्शीवाद प्राप्त करें और इस आयोजन को सफल बनायें।

प्रिय भक्तों!

हमें आपको यह सूचित करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि उत्तम नगर कालीबाड़ी, सी-50, मनसा राम पार्क, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059 में 33वें वर्ष दुर्गा पूजा एवं काली पूजा समारोह का आयोजन कर रही है। हम आपके परिवार और मित्रों को 27 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025 तक हमारे काली मंदिर में आयोजित होने वाले इस समारोह में शामिल होने के लिए सादर आमंत्रित करते हैं।

आइए एक बार फिर खुशियाँ बाँटें, अपनी आत्मा को समृद्ध करें और पारिवारिक माहौल में त्योहार का आनंद लें। आप सभी के उदार सहयोग और भागीदारी की हम बहुत सराहना करते हैं। दुर्गा पूजा पर और हमेशा आप पर ईश्वर की कृपा बनी रहे।

भवदीय

उत्तम नगर कालीबाड़ी,
मलय डे (अध्यक्ष) 7217666618
जयंत डे (सचिव) 9654385888
पिंकी कुंडू (सदस्य)

पूजा कार्यक्रम-2025

27 सितंबर 2025, (शनिवार). बोधन अधिबास

28 सितंबर 2025, (रविवार) षष्ठी आमंत्रण और

29 सितंबर 2025, (सोमवार) सप्तमी पूजा

30 सितंबर 2025, (मंगलवार) अष्टमी और संधि पूजा

1 अक्टूबर 2025, (बुधवार) नवमी पूजा

2 अक्टूबर 2025, (गुरुवार) दशमी पूजा और विसर्जन

पुष्पांजलि 11.00 बजे से 1:00 बजे तक,
प्रसाद वितरण 1.00 बजे से 1:30 बजे तक,
भोग वितरण 1.30 बजे से 3.00 बजे तक।
संध्या आरती- 7.00 बजे
श्री श्री काली पूजा सोमवार, 20 अक्टूबर, 2025

कार्यक्रम का स्थान:

कालीबाड़ी, सी-50, मनसा राम पार्क, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059

जय माँ चिंतपूर्णी देवी

माँ चिंतपूर्णी देवी जी का मंदिर भारत का प्राचीन मंदिर है चिंतपूर्णी गांव जिला ऊना हिमाचल प्रदेश राज्य में स्थित है। चिंतपूर्णी मंदिर सोला सिग्ही श्रेणी की पहाड़ी पर स्थित है। भरवाई गांव जो होशियारपुर-धर्मशिला रोड पर स्थित है वहा से चिंतपूर्णी 3 कि॰मी॰ की दूरी पर है। यह रोड राज्य मार्ग से जुड़ा हुआ है। पर्यटक अपने निजी वाहनो से चिंतपूर्णी बस स्टैण्ड तक जा सकते हैं। बस स्टैण्ड चिंतपूर्णी मंदिर से 1.5 कि॰मी॰ की दूरी पर स्थित है। चढाई का आधा रास्ता सीधा है और उसके बाद का रास्ता सीढीदार है।

माँ चिंतपूर्णी देवी जी का मंदिर 51 सिद्व पीठों में से एक है तथा मुख्य 7 में से एक है। माँ चिंतपूर्णी देवी के दर्शनों के लिए भक्त पूरे भारत से आते है। नव रात्रि के त्यौहार के दौरान बड़ी संख्या में लोग दर्शनों के लिए मंदिर में आते है। ऐसा माना जाता है कि चिंतपूर्णी मंदिर की स्थापना पंडित माई दास जो एक सारस्वत ब्राह्मण थे, ने कि थी। आज भी उनके वंशज चिंतपूर्णी में रहते है और मंदिर में पूजा व प्रार्थना करते है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार, देवी सती ने उनके पिता दक्षेस्वर द्वारा किये यज्ञ कुण्ड में अपने प्राण त्याग दिये थे, तब भगवान शंकर देवी सती के मृत शरीर को लेकर पूरे ब्रह्माण चक्कर लगा रहे थे इसी दौरान भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से सती के शरीर को 51 भागों में विभाजित कर दिया था, जिसमें से सती की माथा इस स्थान पर गिरा था।

पौराणिक कथाओं के अनुसार छिन्नमस्ता देवी के मंदिर को चारों दिशाओं से रुद्र महादेव ने सुरक्षित कर रखा है। चाराओं दिशाओं मे भगवान शिव के मंदिर है कैलाश्वर महादेव मंदिर पूर्व दिशा में, नारायण महादेव मंदिर पश्चिम में, मचकण्ड महादेव उतर दिशा में और शिव बाड़ी मंदिर दक्षिण दिशा में स्थित है।

मार्कंडेय पुराण के अनुसार देवी चंडी एक युद्ध में राक्षसों को हरा दिया लेकिन मांता की योगिनी से उत्पति जया और विजया दोनों को अभी रक्त की प्यास थी तो मां ने उनकी प्यास बुझाने के लिए अपने सर को काट दिया।

ज्यादातर तस्वीरों में देखा गया कि चंडी देवी ने अपने हाथों में अपना सर पकडा है तथा उनकी गर्दन की धमनियों से रक्त की धार निकल रही है जिसको दोनों योगिनी पीकर अपने प्यास बुझाती होती।

चिंतपूर्णी धाम और चार शिवलिंग का रहस्य

चिंतपूर्णी चालीसा में लिखा है की माता चिंतपूर्णी चार शिवलिंग में घिरी हुई हैं जिसकी बहुत कम लोगों को जानकारी है।

इनमें से एक मंदिर शिववाड़ी जो गग्रेट के पास है बहुत प्रसिद्ध है

दूसरा मंदिर कालेश्वर धाम जोकि अम्ब में पड़ता है। सतलुज दरिया बनने के समय यह दो मंदिर अलोप हो गए थे। जोकि बहुत खोज करने के उपरांत मिले।

तीसरा मंदिरः- जिसकी लोगों को जानकारी नहीं है। वो मंदिर है नारायण देव मंदिर ज्वाला जी रोड पर डेरा चौंक से हरिपुर रोड पर बीस किलोमीटर की दूरी पर कासब मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है। जोकि असल में नारायण देव ही है।

चौथा मंदिर मचकूंद महादेवः- मंदिर ज्वाला जी रोड पर डल्यिरा चौंक से बाएं होकर आगे एक किलोमीटर दूरी पर पुली आती है पुली से बाएं हाथ होकर पांच कीलोमीटर की दूरी पर मचकूंद महादेव मंदिर आएगा। मान्यता है कि जो भक्त इन चारों मंदिरों के दर्शन करने के उपरांत माता चिंतपूर्णी के दर्शन करेगा उसकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होंगी।

मान्यता है कि इस स्थान पर सती माता के चरण गिरे थे। पिंडी रूप में मां के दर्शन होते हैं। मंदिर एक बरगद के वृक्ष के नीचे बना हुआ है। मंदिर के चारों तरफ सोने का आवरण लगा हुआ है। दर्शनों को प्राप्त कर मनुष्य सभी सुखों का भागी बनता है और उसके जीवन में आने वाली सभी चिंताओं का अंत होता है।

नवरात्रि और सावन के पावन समय में तो यहां का नजारा देखते ही बनता है। मान्यता है कि मां चिंतपूर्णी के दर्शन करने वाले भक्तों की न केवल चिंताएं समाप्त होती हैं बल्कि भक्तों के असंभव कार्य भी पलक झपकते ही पूर्ण हो जाते हैं।

महाष्टमी आज

नवरात्र की अष्टमी तिथि विशेष महत्व रखती है, जिसे हम सभी महाष्टमी या दुर्गाष्टमी के रूप में जानते हैं। कई लोग इस दिन पर नवरात्र व्रत का पारण भी करते हैं और कन्या पूजन करते हैं।

कब है अष्टमी तिथि

==========

वैदिक पंचांग के अनुसार, शारदीय नवरात्र की अष्टमी तिथि की शुरुआत 29 सितंबर को दोपहर 4 बजकर 31 मिनट से हो रही है। वहीं इस तिथि का समापन 30 सितंबर को शाम 6 बजकर 6 मिनट पर हो रहा है। ऐसे में महाष्टमी मंगलवार 30 सितंबर को मनाई जाएगी।

महाष्टमी का महत्व

==========

नवरात्र की अष्टमी तिथि पर मां दुर्गा की पूजा का विधान है। पौराणिक कथा के अनुसार, महाअष्टमी पर देवी दुर्गा ने राक्षस महिषासुर का वध किया था। इसलिए इस दिन को बुराई पर अच्छाई की जीत के प्रतीक के रूप में भी देखा जाता है। इस दिन पर मां दुर्गा के आठवें रूप, महागौरी की पूजा-अर्चना का विधान है। कई साधक नवरात्र के 8वें दिन कन्या पूजन करते हैं। इस दौरान छोटी कन्याओं को देवी दुर्गा का रूप मानकर उनकी पूजा की जाती है और उन्हें भोजन करवाया जाता है।

कन्याओं को विदा करते समय उन्हें उपहार या धन दिया जाता है। मान्यता है कि ऐसा करने से साधक को मनोवांछित फल की प्राप्ति हो सकती है। साथ ही माता रानी की कृपा से स्वास्थ्य, धन और आध्यात्मिक उन्नति का भी आशीर्वाद मिलता है। इतना ही नहीं किसी नए काम की शुरुआत के लिए भी नवरात्र की अष्टमी तिथि को बहुत ही शुभ माना गया है।

मां महागौरी की आराधना

==========

अष्टमी के दिन माता महागौरी की आराधना की जाती है। मां मातृत्व, आशीर्वाद और आध्यात्मिक शक्ति देने वाली देवी मानी जाती हैं। उनकी पूजा से भक्त भय और संकट से मुक्ति पाते हैं। माता को अन्नपूर्णा भी कहा जाता है, इसलिए इस दिन कन्याओं को भोजन करवा कर उनका सम्मान किया जाता है, जिससे घर में कभी अन्न की कमी न हो।

अष्टमी तिथि के दिन पूजा से मिलने वाले लाभ

==========

अष्टमी तिथि, जिसे महाष्टमी या दुर्गा अष्टमी भी कहा जाता है, नवरात्र के नौ दिन विशेष रूप से पवित्र माने जाते हैं। इस दिन माता महागौरी की विधिपूर्वक पूजा करने से भक्तों को अनेक प्रकार के आध्यात्मिक और सांसारिक लाभ प्राप्त होते हैं।

भय और रोग से मुक्ति

==========

माता महागौरी का आशीर्वाद भक्तों को भय, मानसिक तनाव और शारीरिक रोगों से मुक्ति दिलाता है। उनकी कृपा से जीवन में आने वाली कठिनाइयां, दुःख और संकट कम होते हैं। भक्त मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ एवं सशक्त महसूस करते हैं।

बुद्धि और शक्ति में वृद्धि

माता महागौरी बुद्धि और बल प्रदान करने वाली देवी मानी जाती हैं। उनके आशीर्वाद से व्यक्ति जीवन के कठिन निर्णय आसानी से ले पाता है और मानसिक, शारीरिक तथा आध्यात्मिक शक्ति का अनुभव करता है। इससे घर-परिवार और व्यवसायिक जीवन दोनों में सफलता और सकारात्मक बदलाव आते हैं।

इस प्रकार अष्टमी तिथि का पूजा और व्रत केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि यह जीवन में शक्ति, सुरक्षा, समृद्धि और आध्यात्मिक उन्नति का माध्यम भी बन जाता है। भक्तों का विश्वास है कि इस दिन माता महागौरी की उपासना करने से जीवन के सभी क्षेत्र में अनंत लाभ और कल्याण प्राप्त होता है।

मनोरंजन जगत की बड़ी खबर - ब्रजभाषा संगीत में धमाका

डंडा पर ना बैठूंगी – बना सुपरहिट, दर्शकों का दिल जीत रहा ब्रजभाषा लांगुरिया गीत

आगरा, संजय साग़र सिंह। ब्रजभाषा लोकसंगीत को एक नई पहचान दिलाते हुए, हाल ही में रिलीज़ हुआ डंडा पर ना बैठूंगी दर्शकों के बीच जबरदस्त लोकप्रियता हासिल कर रहा है। ब्रज No.1 म्यूज़िक के बैनर तले प्रस्तुत यह लांगुरिया गीत सोशल मीडिया और यूट्यूब पर धूम मचा रहा है, और क्षेत्रीय संगीत प्रेमियों के बीच चर्चा का केंद्र बना हुआ है।

गीत के निर्माता सावन चौहान ने इसे भव्यता और गुणवत्ता का नया स्तर प्रदान किया है, जबकि निर्देशक दीपक सेन ने अपने अनूठे दृष्टिकोण और कलात्मक निर्देशन से गीत को दृश्यात्मक रूप से बेहद प्रभावशाली बनाया है।

गीतकार व गायक कबीर सिंहोरा ने अपने शब्दों में ब्रज की मिठास और भावनात्मक गहराई को खूबसूरती से पिरोया है। उनके स्वर में रची बसी लोकभावना को गायिका राधिका तमन्ना की सुरीली आवाज़ ने और भी प्रभावशाली बना दिया है। संगीत संयोजन की जिम्मेदारी JPS म्यूज़िक हिमांशु ने निभाई, जिनका संगीतिक स्पर्श गीत को एक अलग ही ऊँचाई पर ले जाता है।

देवकांत त्यागी और मनीषा त्यागी की दमदार अदायगी ने वीडियो में जान फूंक दी, वहीं D.O.P. अशोक शर्मा की सिनेमेटोग्राफी और एडिटर सत्यम गुप्ता की कुशल संपादन कला ने इस प्रोजेक्ट को तकनीकी दृष्टि से भी सशक्त बना दिया।

गीत के प्रचार-प्रसार की जिम्मेदारी अभिनव (आगरा) ने बखूबी निभाई, और प्रोडक्शन टीम में राकेश त्यागी, रवि श्रीवास्तव व रवि शर्मा का योगदान भी अत्यंत सराहनीय रहा। इस परियोजना में विनु यादव ब्रजवासी को विशेष धन्यवाद अर्पित किया गया है, जिनका सहयोग इस गीत के निर्माण में अहम रहा।

इस अवसर पर गीत के निर्माता सावन चौहान ने कहा कि यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि डंडा पर ना बैठूंगी न केवल एक सफल गीत है, बल्कि यह ब्रजभाषा लोकसंगीत को एक नई ऊर्जा और पहचान दिलाने वाला सांस्कृतिक अभियान बनता जा रहा है। ब्रज संस्कृति और लोकगायन से जुड़े ऐसे बेहतरीन गीतों का बढ़ता प्रभाव यह संकेत है कि हमारी क्षेत्रीय भाषाएं, ब्रज की संस्कृति और अनमोल परंपराएं अब वैश्विक मंच पर अपनी जगह बना रही हैं।

लो ब्लड प्रेशर के लिए घरेलू उपचार

1.तुलसी निम्न रक्तचाप में फायदेमंद

तुलसी के पत्ते निम्न रक्तचाप को सही करने में मदद करते है। हर दिन सुबह पांच से छह तुलसी के पत्तों को चूसने से ब्लड प्रेशर नार्मल हो जाता हैं। तुलसी के पत्ते में पोटेशियम, मैग्नीशियम और विटामिन सी उच्च स्तर में होता हैं जो आपके रक्तचाप को नियंत्रित करने में मदद करता हैं। तुलसी में यूजीनोल नामक एक एंटीऑक्सिडेंट होता है जो रक्तचाप को नियंत्रण में रखता है और कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करता है।

2.किशमिश निम्न रक्तचाप में फायदेमंद

50 ग्राम देशी चने व 10 ग्राम किशमिश को रात में 100 ग्राम पानी में किसी भी कांच के बर्तन में रख दें। सुबह चनों को किशमिश के साथ अच्छी तरह से चबा-चबाकर खाएं और पानी को पी लें। केवल किशमिश का प्रयोग भी कर सकते हैं।

3.गाजर निम्न रक्तचाप में फायदेमंद

गाजर और पालक का रस लो ब्लडप्रेशर फायदेमंद हो सकती है। इसके लिए लगभग 200 ग्राम गाजर के रस में एक चौथाई पालक का रस मिलाकर पिएं।

4.छाछ निम्न रक्तचाप में फायदेमंद

छाछ में नमक, भुना हुआ जीरा और हींग मिलाकर, इसका सेवन करते रहने से भी ब्लड प्रेशर नियंत्रित रहता है और प्रेशर के नॉर्मल अवस्था में रहने में मदद मिलती है।

5.दालचीनी निम्न रक्तचाप में फायदेमंद

दालचीनी के पाउडर को प्रतिदिन गर्म पानी के साथ लेने से भी आपको इस समस्या में लाभ मिल सकता है, इसके लिए सुबह-शाम यह प्रयोग करें।

6.आंवला का रस निम्न रक्तचाप में फायदेमंद

लो बीपी के काराण अगर चक्कर आने की शिकायत हो, आंवले के रस में शहद मिलाकर खाने से बहुत जल्दी राहत मिलती है। इसके अलावा आंवले का मुरब्बा भी ब्लडप्रेशर के रोगियों के लिए एक बेहतर विकल्प बन सकता है।

7.खजूर निम्न रक्तचाप में फायदेमंद

खजूर को दूध में उबालकर पीने से भी निम्न रक्तचाप की समस्या में लाभ होता है। आप खजूर खाकर भी दूध पी सकते हैं।

8.अदरक का मिश्रण निम्न रक्तचाप में फायदेमंद

अदरक के छोटे-छोटे टूकड़े करके, उनमें नींबू का रस और सेंधा नमक मिलाकर रख दें। अब इसे प्रतिदिन भोजन से पहले थोड़ी-थोड़ी मात्रा में खाते रहें। दिनभर में 3 से 4 बार भी इसका सेवन आप कर सकते हैं। ऐसा करने से रक्तचाप की समस्या कुछ ही दिनों में समाप्त हो जाएगी।

9.टमाटर निम्न रक्तचाप में फायदेमंद

टमाटर के रस में थोड़ी-सी काली मिर्च और नमक डालकर पिएं। इससे कुछ ही समय में निम्न रक्तचाप में लाभ होगा।

10.चुकंदर का रस रक्तचाप में फायदेमंद

लो ब्लड प्रेशर को सामान्य बनाये रखने में चुकंदर का रस काफी फायदेमंद साबित होता है। प्रतिदिन सुबह-शाम इसका सेवन करने से एक सप्ताह में ब्लड प्रेशर में सुधार होता है।

खांसी के लिए अनुभूत योग

पीपली 5 ग्राम

ककड़ा शिंगी 5ग्राम

काली मिर्च 1 ग्राम

शीतोप्लाद चूर्ण आधा ग्राम

मात्रा. दो खुराक बना कर दे शहद के साथ मे सुबह शाम औषधि को आवश्यकता अनुसार घटा या बढ़ा सकते हैं।

किसी भी प्रकार के बुखार के लिए

फिटकरी 3 ग्राम

गोदंती 3 ग्राम

अष्टमूर्ति रसायन 2 ग्राम

पीपल 2 ग्राम

12 पुड़िया बनाकर दे....

सुबह शाम शहद के साथ और महा सुदर्शन चूर्ण आधा चम्मच खाना खाने के बाद दे

देश को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए शिक्षा प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन आवश्यक - सामाजिक चिंतकों ने उठाई इंडस्ट्री आधारित करिकुलम की मांग

अब शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन की नहीं, बल्कि एक समग्र और दूरगामी शैक्षणिक क्रांति की जरूरत है – जो भारत के युवा मन को भविष्य के लिए तैयार कर सके

अब समय आ गया है कि युवाओं को केवल किताबों तक सीमित न रखा जाए, बल्कि उन्हें इंडस्ट्री-रेडी स्किल्स से लैस किया जाए

आगरा, संजय सागर सिंह। तेजी से बदलती तकनीक और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के युग में शिक्षा व्यवस्था को पारंपरिक ढांचे से बाहर लाने की आवश्यकता अब पहले से कहीं अधिक महसूस की जा रही है। इसीक्रम में शहर में आयोजित एक विचार गोष्ठी में विशेषज्ञों और सामाजिक चिंतकों एवं वक्ताओं ने जोर देकर कहा कि अब समय आ गया है कि युवाओं को केवल किताबों तक सीमित न रखा जाए, बल्कि उन्हें इंडस्ट्री-रेडी स्किल्स से लैस किया जाए।

सिलेबस को 'स्थिर दस्तावेज' मानने की सोच छोड़नी होगी : राजेश खुराना

सामाजिक चिंतक राजेश खुराना ने कहा कि भारत की शिक्षा प्रणाली को आज ऐसे बिंदु पर पुनर्विचार की आवश्यकता है, जहां हम युवाओं को सिर्फ किताबी ज्ञान देने की बजाय उन्हें टेक्नोलॉजी और इंडस्ट्री की वास्तविक जरूरतों के अनुसार प्रशिक्षित करें। उन्होंने कहा, अगर हमें भारत को विकसित राष्ट्र की श्रेणी में लाना है, तो हमें सिलेबस को स्थिर दस्तावेज मानने की सोच छोड़नी होगी। बदलती इंडस्ट्री डिमांड के अनुसार पाठ्यक्रम को समय-समय पर अपडेट करना आज की आवश्यकता बन गया है। श्री खुराना का मानना है कि कॉलेजों को चाहिए कि वे 'कंटेंट बियॉन्ड सिलेबस' पर फोकस करें और छात्रों को इंडस्ट्री से जुड़े नए विषयों की जानकारी दें। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि विदेशी फैकल्टी और विशेषज्ञों की मदद से कोर्स को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाया जा सकता है।

डायनामिक करिकुलम और शॉर्ट टर्म कोर्स समय की जरूरत : मुसरफ खान

वरिष्ठ समाजसेवी मुसरफ खान ने कहा कि शिक्षा को अधिक व्यावहारिक और परिणामोन्मुखी बनाने के लिए शॉर्ट टर्म कोर्सेज, एक्स्ट्रा स्किल टूल्स और इंडस्ट्री प्रैक्टिकल्स को प्रमुखता देनी चाहिए। उन्होंने कहा - डिग्री के साथ-साथ छात्रों को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग, और अन्य उभरती तकनीकों की भी जानकारी होनी चाहिए। इसके लिए शिक्षा व्यवस्था में डायनामिक करिकुलम की अवधारणा को अपनाना होगा। इसके साथ ही श्री खान ने यह भी कहा कि देशभर में स्कूलों की किताबें और ड्रेस एक समान होनी चाहिए। इससे शिक्षा व्यवस्था में पारदर्शिता बढ़ेगी, कालाबाजारी पर अंकुश लगेगा और समाज में समानता का संदेश जाएगा।

इंडस्ट्री से निरंतर संवाद बनाए रखें संस्थान : संजीव कुमार सिंह

सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता संजीव कुमार सिंह ने कहा कि आज के दौर में केवल डिग्री हासिल करना पर्याप्त नहीं है। छात्रों को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डेटा साइंस, और अन्य एडवांस टेक्नोलॉजीज की समझ होनी चाहिए। उन्होंने सुझाव दिया कि शिक्षण संस्थानों को चाहिए कि वे उद्योगों से निरंतर संवाद बनाए रखें और उनके इनपुट के आधार पर पाठ्यक्रम तैयार करें। इससे छात्र इंडस्ट्री की मांगों के अनुरूप प्रशिक्षित हो सकेंगे। उन्होंने 'कंटेंट बियॉन्ड सिलेबस' पर विशेष जोर दिया और कहा कि शिक्षकों को पारंपरिक पद्धतियों से आगे बढ़कर छात्रों को नवीनतम तकनीकों और वैश्विक ट्रेंड्स से परिचित कराना चाहिए।

उदाहरण बन रहे हैं तकनीकी संस्थान - ट्रिपल आईटी की पहल सराहनीय : पंकज जैन

समाजसेवी पंकज जैन ने ट्रिपल आईटी जैसे अग्रणी तकनीकी संस्थानों की पहल की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे संस्थानों ने इंडस्ट्री आधारित पाठ्यक्रम को प्राथमिकता देकर एक मिसाल पेश की है। उन्होंने कहा - ट्रिपल आईटी जैसे संस्थानों ने अब चार साल का पाठ्यक्रम पहले से तय करने की बजाय इंडस्ट्री डिमांड के अनुसार इसे लगातार अपडेट करना शुरू कर दिया है, जिससे छात्र जब पास हों तो वे पूरी तरह से इंडस्ट्री के लिए तैयार हों। जैन ने भी देशभर में स्कूलों की किताबें और ड्रेस एक समान करने की मांग दोहराई, जिससे शिक्षा में समानता और पारदर्शिता सुनिश्चित की जा सके।

शिक्षा में परिवर्तन नहीं, क्रांति की जरूरत - अरविन्द पुष्कर

सामाजिक चिंतक अरविन्द पुष्कर एडवोकेट का मानना है कि यदि भारत को एक विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित करना है, तो शिक्षा प्रणाली को उद्योगों की मांग और भविष्य की जरूरतों के अनुरूप तैयार करना अनिवार्य है। शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। भारत को यदि वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा में आगे लाना है तो शिक्षा प्रणाली को लचीला, व्यावहारिक और उद्योगोन्मुखी बनाना होगा। डिग्री से आगे बढ़कर इंडस्ट्री से जुड़े नए विषयों, तकनीकी कौशल और वैश्विक ट्रेंड्स की जानकारी अब आवश्यक हो चुकी है। यह स्पष्ट है कि अब शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन की नहीं, बल्कि एक समग्र और दूरगामी शैक्षणिक क्रांति की जरूरत है - जो भारत के युवा मन को भविष्य के लिए तैयार कर सके।

सभी लग रहें पराए...!

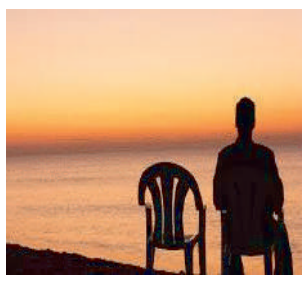

मैंने सुना तुम टूटकर गई थी बिखर,
फिर शून्य से शुरू किया यह सफर।
हिम्मत दिखाई 'किस्मत' से लड़कर,
तुम फिर चल दी हौसला बुलंद कर।

मैं तुम्हारी तारीफ कैसे! क्या? करूं,
अधूरे ख्वाब को कैसे साकार करूं।
मुझे स्वीकार करोगी यह कैसे कहूँ,
जमाने का डर फिर मांग कैसे भरू।

जिंदगी में बहुत से बदलाव आये है,
वर्तमान में भी भूतकाल के साए हैं।
कल लोग हमें अपने से ही लगते थे,
आज वो भी सभी लग रहें पराए हैं।

संजय एम तराणेकर

बीमारियां कैसे आती हैं? शरीर तो हमें बताता है।

बीमारियां कैसे आती हैं? शरीर तो हमें बताता है। अपने आंसुओं को भींच लेने से, कड़वी बातों को चुपचाप निगल जाने से, अपनी जुबान को बंद रखने से, अपने दिल के दरवाज़े पर सांकल लगाने से कुछ बंद नहीं हो जाता, शरीर तो बोलता है।

शरीर के बोलने के बहुत से तरीके है। बिस्तर पर बेचैन पैरों की हरकत से बोलता है। गले में रूंध गई आवाज से बोलता है। दिमाग़ पर माइग्रेन के हमले से बोलता है। आंतों में भर गई हवा से बोलता है। पेट में भर गई आग से बोलता है। माथे पर तनी हुई लकीरों और सलवटों से बोलता है। अनिद्रा और अतिनिद्रा से बोलता है। हम अपनी आवाज पर लगाम तो लगा सकते हैं पर भीतर संवाद शुरू हो जाता है। हम बीमार इसलिए होते हैं क्योंकि न पचने वाले रेशों को दिल में समेट कर रख लेते हैं। दर्द हमेशा-हमेशा हमारे साथ रहने के लिए नहीं आता, वह तो केवल एक अर्ध विराम है, पूर्ण विराम नहीं। बोलना हमारी आत्मा को सुकून पहुंचाता है। इसलिए कुछ लिखो। कुछ भी लिखो। चाहे एक खत लिखो, डायरी लिखो। अपनी कथा/व्यथा लिखो। एक कविता/किताब लिखो। गीत गाओ। पैरों को नृत्य के लिए तैयार करो। एक कलाकार बन जाओ, एक कैनवास पर मनचाहे रंग उतार दो। दोस्तों से मिलो, भले फोन पर ही सही। पार्क में दौड़ लगाओ। अपने से बात करो। पेड़-पौधों से बात करो। गली के कुत्ते से बतियाओ। गाय को रोटी खिलाओ। कुछ नहीं तो आसमान की ओर देखकर जोर से चिल्लाओ। बस चुप मत रहो। यदि हमने इसे झेला, निगल लिया तो डूबने के अलावा कोई चारा नहीं हमारे पास। आखिर हमारा दिल एक गोदाम/कबाड़खाना तो नहीं है न। शरीर यह जानता है, इसीलिए बोलता है। हंसिए और हंसाइए। स्वस्थ रहिए और मस्त रहिए, यही स्वस्थ रहने का राज़ है।

चार दिन की सम्पूर्ण रामायण का शुभ आरम्भ

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली, सनातन प्रचार ट्रस्ट (रजि.) रामलीला मैदान, वेस्ट एन्क्लेव पीतम पुरा में आज से अंतर्राष्ट्रीय कलाकारों द्वारा सम्पूर्ण रामायण का शुभ आरम्भ शुरू हो गया है जो चार दिनों तक लगातार चलेगा I कमेटी के महासचिव धीरज गोयल ने बताया है कि आज रामलीला की शुरुआत गणेश वंदना के साथ शुरू हुई, जिसके बाद कमेटी के लोगो ने आरती की है जिसके बाद कलाकारों ने सम्पूर्ण रामायण की शुरुआत की है ए आई से लेस इस सम्पूर्ण रामायण में हाई टेक्निक ग्राफीक का इस्तेमाल किया गया है जिसको देखने के लिए आज हज़ारो लोग पंडाल में पहुंचे है इससे पहले खाटू श्याम और हनुमंत लीला का बहुत सुन्दर नज़ारा भक्तों को देखने को मिला है इसके बाद हमारे यहाँ डांडिया का प्रोग्राम होगा जो चार दिनों तक चलेगा जिसमे बॉलीवुड के सिंगर भाग लेंगे इस मोके पर कमेटी के दीपक कुमार, अशोक जिंदल, अभय गुप्ता महाजन, भीमसेन और दीपक अग्रवाल मोजूद रहे है रामलीला के पुरे रामलीला पंडाल को सीसीटीवी से कवर किया गया है।

बॉलीवुड स्टार बॉबी देओल करेंगे लाल किले पर रावण वध

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। विश्व प्रसिद्ध लव कुश रामलीला इस वर्ष एक और ऐतिहासिक क्षण की गवाह बनेगी। दशहरा के दिन लाल किला मैदान में असत्य पर सत्य की विजय के प्रतीक रावण वध का मंचन बॉलीवुड के लोकप्रिय अभिनेता बॉबी देओल द्वारा किया जाएगा।

बॉबी देओल फिल्म इंडस्ट्री के उन चुनिंदा सितारों में शामिल हैं, जिन्होंने अपने करियर के तीन दशक पूरे कर लिए हैं। हाल ही में उन्होंने अपनी अदाकारी और अनोखे स्टाइल से दर्शकों का दिल जीता है और वे एक बार फिर सुर्खियों में हैं।

लव कुश रामलीला कमेटी के अध्यक्ष अर्जुन कुमार ने बताया कि जब बॉबी देओल को दशहरे पर रावण वध करने का आमंत्रण दिया गया तो उन्होंने इसे पूरे उत्साह के साथ स्वीकार कर लिया। समिति का मानना है कि बॉबी देओल का इस ऐतिहासिक मंच पर आना रामलीला को और भी भव्य और यादगार बना देगा।

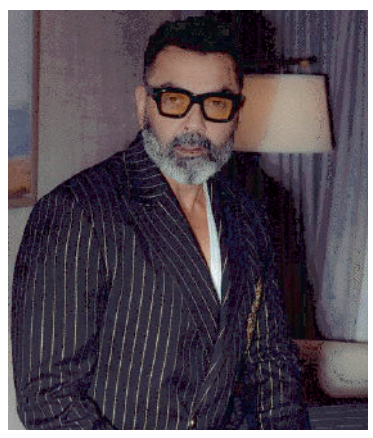

दशहरे की इस संध्या को देखने के लिए राजधानी समेत देशभर से लाखों दर्शक लाल किले पर जुटते हैं। इस बार बॉबी देओल की मौजूदगी से कार्यक्रम की शोभा और बढ़ने वाली है।

स्वास्थ्य, शिक्षा और पर्यावरण के प्रहरी के हैं : डॉ हृदयेश कुमार

अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट के संस्थापक डॉ हृदयेश कुमार हाल ही में अचानक दिल का दौरा पड़ने के कारण फरीदाबाद के बड़े अस्पताल में भर्ती हैं हालांकि अब उनका स्वास्थ्य खतरे से बाहर है फिर भी अस्पताल के प्रबंधकों द्वारा सलाह दी गई है कि डॉ हृदयेश कुमार को चिंता और विशेष सोच नहीं रखनी चाहिए उनके दिमाग में कुछ टेंशन है जिस कारण से उनका स्वास्थ्य काफी ऊपर नीचे हो रहा है हमारे एक पत्रकार साथी के पूछने पर डॉ हृदयेश कुमार ने बताया कि मैने अपना पूरा जीवन समाज हित में समर्पित किया है मुझे अपनी चिंता नहीं है असल चिंता तो आज कल के पर्यावरण और लोगों की सोच पर है कि वे सब जानते हुए भी नादानी करते हैं मेरा मुख्य उद्देश्य स्वास्थ्य भारत समृद्ध भारत है इसके लिए मैं समाज को समय समय पर जागरूक कर रहा हूं

शिक्षा उच्च आय की ओर ले जाती है, जिससे बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच आसान होती है और लोग अच्छे स्वास्थ्य से

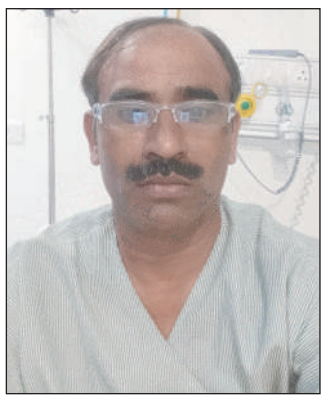

जुड़े निर्णय ले पाते हैं।

जागरूकता पर्यावरण शिक्षा लोगों को पर्यावरण के प्रति और उन्हें पर्यावरण की रक्षा के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल प्रदान करती है। प्रदूषित हवा, पानी और मिट्टी कैंसर, हृदय रोग और अस्थमा जैसी बीमारियों का जोखिम बढ़ा सकते हैं।

स्वच्छ हवा, स्वस्थ मिट्टी और स्वच्छ जल श्वसन संबंधी बीमारियों को कम करते हैं और समग्र कल्याण को बेहतर बनाते हैं।

लोगों को पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य के बीच के संबंधों के बारे में सीखना चाहिए । भोजन और पानी की स्वच्छता पर ध्यान केंद्रित करना होगा

हम सब लोगों को पर्यावरण के महत्व के बारे में शिक्षित होना और जैव विविधता जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं को संरक्षित करने के तरीके सीखना होगा

पर्यावरणीय स्वास्थ्य, जन स्वास्थ्य की वह शाखा है जो मानव स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले प्राकृतिक और निर्मित पर्यावरण के सभी पहलुओं से संबंधित है।

मानव ही पर्यावरण को स्वच्छ या प्रदूषित करता है तथा उसका प्रभाव मानव को ही उसी रूप में प्रभावित करता है। मानव समाज के लिए स्वच्छ तथा स्वथयवर्धक पर्यावरण बहुत ही आवश्यक है। परन्तु पर्यावरण को स्वच्छ व स्वास्थयवर्धक बनाना मनुष्यो पर ही निर्भर करता है।

स्वास्थ्यशिक्षा के मुख्य उद्देश्य हैं स्वास्थ्य के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाना, लोगों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करना, और उन्हें रोगों की रोकथाम व स्वास्थ्य सेवाओं के सही उपयोग के बारे में शिक्षित करना है। लोगों को स्वस्थ जीवनशैली के महत्व के बारे में सूचित करती है और उन्हें स्वस्थ रहने के लिए प्रेरित करते हैं और व्यक्तियों में स्वस्थ खान-पान, नियमित व्यायाम, स्वच्छता और हानिकारक आदतों जैसे धूम्रपान से बचने के व्यवहार से बचाव के लिए और लोगों को विभिन्न रोगों के कारणों और उनसे बचाव के तरीकों की जानकारी देते हुए , साथ ही उन्हें सही समय पर स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ उठाने के लिए मार्गदर्शन भी प्रदान करती है।

संतुलित आहार और नियमित व्यायाम के महत्व को समझाना चाहिए और तनाव प्रबंधन और सकारात्मक मानसिक दृष्टिकोण विकसित करना चाहिए व स्वच्छ वातावरण के महत्व और उसे बनाए रखने के तरीकों के बारे में समझना होगा । शराब, तंबाकू और अन्य नशीली दवाओं के दुष्परिणामों और उनसे बचाव करना जरूरी है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के हाथ से दिल्ली भाजपा के निजी कार्यालय के लोकार्पण ने कार्यकर्ताओं के नये कार्यालय के उद्घाटन के जोश को दो गुणा किया

सुषमा रानी

नई दिल्ली : भारत के यशस्वी प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी ने आज सांय दीनदयाल उपाध्याय मार्ग पर आयोजित एक भव्य समारोह में दिल्ली प्रदेश भारतीय जनता पार्टी के नवनिर्मित निजी कार्यालय का पार्टी कार्यों में उपयोग के लिए लोकार्पण किया।

समारोह में प्रधान मंत्री के साथ मंचासीन रहे भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा, दिल्ली की मुख्य मंत्री रेखा गुप्ता, दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा, दिल्ली भाजपा की सह प्रभारी डा. अल्का गुर्जर, केन्द्रीय राज्य मंत्री हर्ष मल्होत्रा, सांसद मनोज तिवारी, रामवीर सिंह बिधूड़ी, योगेन्द्र चांदोलिया, कमलजीत सहरावत, प्रवीन खंडेलवाल एवं बाँसुरी स्वराज, दिल्ली सरकार के मंत्री प्रवेश साहिब सिंह, आशीष सूद, मनजिंदर सिंह सिरसा, कपिल मिश्रा, डा. पंकज सिंह एवं इन्द्रराज सिंह, महापौर सरदार राजा इकबाल सिंह, एन.डी.एम.सी. उपाध्यक्ष कुलजीत सिंह चहल एवं प्रदेश महामंत्री विष्णु मित्तल।

आज ही प्रातः राष्ट्रीय संगठन महामंत्री बी.एल. संतोष एवं वरिष्ठ नेताओं की उपस्थिती में प्रदेश अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र सचदेवा ने सपत्नीक नये भवन में प्रवेश पूर्व हवन पूजन किया।

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा ने 9 जून 2023 को इस नवनिर्मित भवन का शिलान्यास किया था और आज 29 सितम्बर 2025 को शारदीय नवरात्र के बीच प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी ने दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा की अध्यक्षता में आयोजित समारोह में लोकार्पण किया।

दिल्ली में जनसंघ काल हो या वर्तमान भाजपा की लगभग 45 वर्ष की यात्रा भाजपा कार्यकर्ताओं को हमेशा पार्टी के पास निजी कार्यालय ना होना कुचेटता था और आज प्रधान मंत्री द्वारा लोकार्पण ने यह कमी भी पूरी कर दी।

समारोह के मंच से प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा कार्यालय लोकार्पण ने जहां समारोह स्थल से बाहर दीनदयाल उपाध्याय मार्ग पर उपस्थित लगभग 20 हजार कार्यकर्ताओं के उत्साह को दुगना कर डाला पर समारोह मंच के सामने बैठे लगभग 250 ऐसे बुजुर्ग एवं वरिष्ठ नेताओं एवं कार्यकर्ताओं जिनमे से अनेक ने जनसंघ काल से या 1980 में भाजपा स्थापना वर्ष से पार्टी को नेतृत्व दिया के लिए यह निजी संगठन कार्यालय भवन लोकार्पण समारोह एक भावुकता भरा पल था। अनेक बुजुर्ग एवं वरिष्ठ नेताओं की आंख में आंसू छलकते दिखे।

वहीं दिल्ली भाजपा की वर्तमान पदाधिकारी टीम जिसमे प्रमुख थे संगठन महामंत्री पवन राणा, कोषाध्यक्ष सतीश गर्ग, सभी उपाध्यक्ष, मंत्री, मीडिया प्रमुख एवं प्रवक्ता जिनके कार्यकाल में कार्यालय निर्माण हुआ के लिए आज का दिन एक गौरवशाली दिन बना। नवनिर्मित कार्यालय के उत्साह में भरे कार्यकर्ताओं ने कहा की निजी कार्यालय की खुशी दिवाली पूर्व ही दिवाली आने जैसी खुशी है।

आज के लोकार्पण समारोह में राष्ट्रीय पदाधिकारी बी.एल. संतोष, वी. सतीश, बैजयंत जय पांडा, अरूण सिंह, विनोद तावड़े, दुष्यंत गौतम, अनिल बलूनी, ओमप्रकाश धनखड़ आदि उपस्थित रहे।

केन्द्रीय मंत्री पियूष गोयल एवं एस.पी.एस. बघेल की गरिमापूर्ण उपस्थिती रही।

प्रदेश पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डा. हर्षवर्धन, विजय गोयल, सतीश उपाध्याय, मनोज तिवारी एवं आदेश गुप्ता एवं पूर्व संगठन महामंत्री विजय शर्मा एवं पवन शर्मा के साथ ही अधिकांश विधायक एवं पार्षद उपस्थित रहे।

उपस्थित बुजुर्ग एवं वरिष्ठ कार्यकर्ताओं में प्रमुख थे वेदव्यास महाजन, ओ.पी. बब्बर, जगदीश मुखी, रामभज, श्याम लाल गर्ग, लाल बिहारी तिवारी, मूलचंद चावला, चांद राम, जीत राम सोलंकी, अनिता आर्या, राधेश्याम शर्मा, सुमन कुमार गुप्ता आदि। निवर्तमान सांसद मीनाक्षी लेखी एवं रमेश बिधूड़ी भी उपस्थित रहे।

भाजपा सरकार से नाराज हड़ताल पर बैठे 5200 एमटीएस/ सीएफडब्ल्यू कर्मचारियों की मांगों को "आप" का समर्थन

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली: दिल्ली नगर निगम के एमटीएस/सीएसडब्ल्यू कर्मचारी सोमवार को अपनी मांगों को लेकर हड़ताल पर चले गए। आम आदमी पार्टी ने लंबे समय से लंबित इनकी मांगों का समर्थन किया है। एमसीडी में नेता प्रतिपक्ष अंकुश नारंग ने हड़ताल पर बैठे कर्मचारियों से मुलाकात कर कहा कि भाजपा सरकार को कर्मचारियों की सारी मांगे तत्काल पूरी करनी चाहिए। कर्मचारियों की सामान वेतन, मेडिकल अर्न लीव और अनुकंपा के आधार परिवार के एक सदस्य को नौकरी देने की मांग जायज़ है। मैने इनकी मांग पूरी करने के लिए मेयर को कई बार पत्र लिखा है, सदन में भी यह मुद्दा उठाया। लेकिन मेयर ने कोई कार्रवाई नहीं की। दिल्ली में मौसमी बीमारियां कहर बरसा रही हैं। 5 हजार दो सौ कर्मचारियों के हड़ताल पर जाने से हालात और खराब होंगे।

उन्होंने कहा कि भाजपा शासित एमसीडी वित्तीय बहाने बनाकर इन कर्मचारियों को न्यूनतम की मांग को नजरअंदाज कर रही है। ये कर्मचारी दिल्लीवासियों को मलेरिया, चिकनगुनिया और डेंगू जैसी बीमारियों से बचाने का काम करते हैं, लेकिन भाजपा उनकी बुनियादी जरूरतें ही पूरी नहीं कर पा रही है। एमसीडी सदन में भी मैंने इस मुद्दे को उठाया था कि कर्मचारी न्यूनतम वेतन की मांग कर रहे हैं। दिल्ली में मच्छर जनित बीमारियों का खतरा चरम पर है। डेढ़ महीने पहले भी इन कर्मचारियों ने एक दिन की हड़ताल की थी,

जिसमें तीन मुख्य मांगें रखी गई थीं। पहली मांग एक समान वेतन की है। वर्तमान में एमटीएस/सीएफडब्लयू कर्मचारियों को छह अलग-अलग वेतन स्केलों में भुगतान किया जाता है, जो असमानता पैदा करता है। यह मांग पूरी तरह जायज़ है और सभी को एक समान वेतन मिलना चाहिए।

अंकुश नारंग ने बताया कि दूसरी मांग मेडिकल अर्न लीव से जुड़ी है। ये कर्मचारी 25-30 वर्षों से लगातार सेवा दे रहे हैं, लेकिन उन्हें मेडिकल अवकाश का लाभ नहीं मिल रहा। तीसरी मांग सबसे संवेदनशील है, जिसमें कर्मचारियों ने कम्पैशनेट ग्राउंड पर नौकरी की व्यवस्था की बात कही है। अंकुश नारंग ने स्पष्ट किया कि ये लोग रोजाना टंकियों, छतों, सड़कों और कूलरों पर जाकर पानी की जांच करते हैं, फॉगिंग करते हैं और दवाइयां डालते हैं। इस दौरान वे मच्छरों और लार्वा के सबसे ज्यादा संपर्क में आते हैं, जिससे उन्हें बीमारियों का खतरा रहता है। अगर किसी कर्मचारी को कुछ हो जाता है, तो उनके परिवार से एक सदस्य को नौकरी देने की मांग में क्या गलत है?

उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी के लंबे संघर्ष के बाद डीबीसी कर्मचारियों ने एमटीएस का दर्जा हासिल किया था, लेकिन भाजपा सरकार से एक समान वेतन की उम्मीद तक पूरी नहीं हुई। मैंने 26 सितंबर को महापौर को पत्र लिखकर इनका समाधान करने की मांग की थी। सदन में भी यह मुद्दा रखा। लेकिन भाजपा मेयर ने कोई भी समाधान निकालने पर बात नहीं की। उन्होंने एमसीडी अधिकारियों के रवैये की आलोचना की। यूनियन के साथ एमएचओ (मेडिकल हेल्थ ऑफिसर) की बैठक में पहले दिल्ली सरकार का पत्र मांगा गया, जो दे दिया गया। फिर सभी जोनों से पत्र की मांग की गई। आम आदमी पार्टी के चार जोन चेयरमैन (पुनीत राय, अमृत जैन, विकास टांग और निर्मला कुमारी) के पत्र जमा करवाए गए, लेकिन फिर भी मांगें पूरी नहीं हुईं। उन्होंने मेयर राजा इकबाल सिंह पर निशाना साधते हुए कहा कि वह न केवल कर्मचारियों, बल्कि दिल्ली की जनता को मौसमी बीमारियों के कहर में धकेल रहे हैं।

अंकुश नारंग ने कहा कि दिल्ली की जनता ने भाजपा को गलती से दिल्ली में सात लोकसभा सीटें, 48 विधानसभा सीटें और एमसीडी में बहुमत दे दिया और भाजपा ने दिल्ली में "गूंगी-बहरी सरकार" और "डमी मेयर" बिठा दिया। अब मेयर कर्मचारियों को नौकरी से निकालने की धमकी दे रहे हैं। भाजपा के पास 10-15 सालों से एमसीडी थी और तब राजा इकबाल एक भर्ती तक नहीं करवा पाए। उन्होंने कहा कि मेयर की धमकियों से कर्मचारी डरने वाले नहीं हैं और "आप" उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी है। इन कर्मचारियों को निकालने का विचार लाने से पहले मेयर अपनी एसी गाड़ी और एसी कमरे से बाहर निकलकर कर्मचारियों हक में काम करें।

उन्होंने कहा कि आज सिविक सेंटर, एमसीडी मुख्यालय के बाहर एमसीडी के जन-स्वास्थ्य विभाग के 5200 एमटीएस/सीएफडब्ल्यू कर्मचारी अपनी जायज़ मांगों को लेकर हड़ताल पर बैठे हैं। लेकिन भाजपा मेयर राजा इकबाल सिंह अपनी अकड़पन में कर्मचारियों के हक की बात सुनने को तैयार ही नहीं। जब मैंने सदन में इस मुद्दे पर चर्चा करनी चाही। तो भाजपा मेयर ने कर्मचारियों के मुद्दे पर कोई चर्चा नहीं की। और न ही कोई समाधान निकाला। मेयर को न दिल्ली की जनता की परवाह है और न ही कर्मचारियों की। मेयर राजा इकबाल सिंह भाजपा के डमी मेयर है उन्हें तत्काल प्रभाव से मेयर पद से इस्तीफा दे देना चाहिए।

आम आदमी पार्टी ने हमेशा से निगम कर्मचारियों के हक में बात की है और आगे भी कर्मचारीयों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सड़क से सदन तक मुद्दे उठाती रहेगी।

जो कहा वो किया, लगातार जनसेवा करने की प्रेरणा मुझे मोदी जी से मिली : दीपक तंवर वाल्मीकि !

हार कर जीतने वाले को ₹दीपक तंवर वाल्मीकि कहते हैं!

नई दिल्ली! दक्षिण दिल्ली देवली के तिगड़ी क्षेत्र में आज महाऋषि भगवान वाल्मीकि जी के एक शानदार भव्य मंदिर का लोकार्पण किया गया ! इस भव्य मंदिर का निर्माण कार्य पूर्व विधायक प्रत्याशी (देवली विधानसभा) "दीपक तंवर वाल्मीकि " द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत मंदिर द्वार पर मंत्रोचार करते हुए रिबन काटने के साथ हुई !

उसके बाद सभी भगवानों की प्रतिमाओं की प्रदीक्षणा करते हुए, विधिवत पूजा पाठ के बाद उनके द्वारा मंदिर जनता को सौंप दिया गया ! दरअसल दीपक तंवर वाल्मीकि नें चुनाव प्रचार के दौरान स्थानीय जनता से वायदा किया था कि, वे चुनाव जीते अथवा नहीं इन मंदिरों का जीर्णोद्धार अवश्य कराएंगे, और जनता के बीच रह कर जनसेवा के कार्य करते रहेंगे ! इसी क्रम में उन्होंने आज DDA मार्किट तिगड़ी स्थित इस भव्य मंदिर का जीर्णोद्धार करा जनता को सौंप दिया !

दीपक तंवर वाल्मीकि नें लगभग आधा दर्जन मंदिरों के जीर्णोद्धार का वायदा किया था ! बड़ी बात यह कि, चुनाव हारने के बाद भी दीपक तंवर जनता के बीच लगातार बने हुए हैं और जनसेवा के कार्यों में जुटे हुए हैं !

वंही पूर्व विधायक प्रत्याशी दीपक तंवर वाल्मीकि नें अपने द्वारा किए जा रहे कार्यों का श्रेय प्रधानमंत्री मोदी जी को देते हुए कहा : ₹मैं स्वंय कुछ नहीं हुँ, यशस्वी प्रधानमंत्री आदरणीय मोदी जी का छोटा

सा अदना सिपाही हुँ, मोदी जी की प्रेरणा उनके आशीर्वाद और भगवानों की कृपा के कारण ही मैं यह सेवा कार्य कर पा रहा हुँ और आगे भविष्य मैं भी, जब भी मौका मिलेगा इसी प्रकार जनसेवा के कार्य करने का प्रयास करता रहूंगा, जय भगवान वाल्मीकि, जय श्रीराम, जय बजरंगबली, हर हर महादेव.. ! इस कार्यक्रम में शिरकत करने पहुंची MCD डिप्टी चेयरमैन (साऊथ जोन) श्रीमती अनीता सिंहल नें दीपक तंवर वाल्मीकि द्वारा क्षेत्र में लगातार किए जा रहे जनसेवा कार्यों की जमकर तारीफ की !

बीजेपी नेता सतपाल सिंघल नें भी दीपक तंवर वाल्मीकि की खूब तारीफ की ! वहीँ सुनील तंवर नें भी दीपक तंवर की तारीफ करते हुए कहा कि, क्षेत्र में किसी जरूरतमंद को बेटी के विवाह के लिए मदद की आवश्कता हो, या दवाओं व राशन आदि के लिए, दीपक तंवर हमेशा मदद के लिए तैयार रहते हैं ! मंदिर कमेटी के अध्यक्ष देवराज नें दीपक तंवर वाल्मीकि द्वारा किए मंदिर निर्माण कार्यों की जम कर तारीफ की और इसे वाल्मीकि समाज के लिए गौरव की बात कहा ! कार्यक्रम में विशेष तौर पर पहुँचनें वाली नेत्री रोहिणी राज नें दीपक तंवर वाल्मीकि की तारीफ करते हुए कहा :आज कल के नेता चुनाव जीत कर भी जनता से किए वायदे पूरे नहीं करते और दीपक तंवर भाई चुनाव हार कर भी जनता के बीच बने हुए हैं, और जनसेवा में लगे हुए हैं₹समाजसेवी मनीष लाल, इंजिनियर नंद किशोर बैरवा नें भी दीपक तंवर वाल्मीकि को आदर्श नेता बताया !

कार्यक्रम में शिरकत करने MCD डिप्टी चेयरमेन (साऊथ जोन) अनीता सतपाल सिंघल, बीजेपी नेता सतपाल सिंघल, नवल किशोर वरिष्ठ पत्रकार, समाजसेवी मनीष लाल वाल्मीकि, इंजिनियर नन्द किशोर बैरवा, समाजसेविका रोहिणी राज, सुनील तंवर, अध्यक्ष देवराज, सहित बड़ी संख्या मैं लोग पहुंचे, उनके में कुछ प्रमुख नाम इस प्रकार हैं :सतीश कुमार कोषाध्यक्ष, नवीन कुमार , मुकेश कुमार, मुक्की, राहुल चौहान, आशीष बाल गुहेर, अभिषेक उज्जैनवाल, प्रदीप चौधरी, विक्की वैद, मनीष बैरवा सरफराज सैफी , सलमा , राजरानी , सतीश मरोठिया , सोनपाल , नियाज खान , लियाकत भाई , अल्ताफ , अशोक गुप्ता बाबा, एवं विजय चाचा , लल्लू भाई, यामिन चौधरी, दीपक बुहाड़िया आदि उपस्थित रहे।

श्रीराम का संपूर्ण जीवन अनुकरणीय: गर्ग

राहुल कुमार

नई दिल्ली: आदर्श रामलीला कमेटी अशोक विहार फेस-2 में राम-सुग्रीव मित्रता, अशोक वाटिका में सीता हनुमान भेंट, लंका दहन की लीला का मंचन निपुण कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया गया। जहां अशोक वाटिका के मनभावक दृश्य तो वही लंका दहन का सजीव दृश्य दिखाया गया। मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय राज्य मंत्री निमुबेन बाभनिया व भारतीय जनता पार्टी प्रदेश कोषाध्यक्ष सतीश गर्ग उपस्थित हुए।

इस अवसर पर निमुबेन बाभनिया ने कहा कि श्रीराम के आदर्शों के साथ धर्म नीति, राजनीति, कूटनीति, अर्थनीति, सत्य, त्याग , सेवा, प्रेम, क्षमा, परोपकार, शौर्य, दान, हित-चिंतन आदि मूल्यों का सुंदर आदर्श हमें श्री राम के जीवन से सीखने को मिलता है।

सतीश गर्ग ने कहा कि श्रीराम का संपूर्ण जीवन हर पहलू पर मानव समाज के लिए अनुकरणीय हैं। अध्यक्ष अशोक गर्ग व महामंत्री अनिल यादव ने कलाकारों के मंचन को सराहा।

कार्यक्रम में पूर्व निगम पार्षद देवराज, चंदन शर्मा, नितिन बत्रा, प्रदीप गोयल, संदीप गुप्ता, राकेश गुप्ता, उषा गोयल, रजनी गुप्ता, रश्मि राजपाल, अनुज जैन, बृजेश शर्मा, लाखन सिंह कुशवाहा उपस्थित रहे।

कालातीत पदाधिकारियों वाला निरस्त, कानपुर में अब रजिस्ट्रार कराएंगे यूपी एमटीए का चुनाव

सुनील बाजपेई

कानपुर। कालातीत घोषित पदाधिकारियों द्वारा संस्था के संविधान, नियमों के खिलाफ सैकड़ों फर्जी सदस्यों की भागेदारी भी सुनिश्चित करते हुए बीते 21 सितंबर को यूपीएमटीए के कराए गए चुनाव को अवैध घोषित कर निरस्त करने के साथ ही रजिस्ट्रार ने उसे खुद कराए जाने आदेश दिया है।

अवगत कराते चलें कि यहां के रजिस्ट्रार ने यूपी एम टी ए के पदाधिकारियों को नियमों संविधान का हवाला देते हुए कालातीत घोषित कर दिया था ,जिसके मुताबिक इस चुनाव को रजिस्ट्रार द्वारा ही कराया जाना था लेकिन कालातीत घोषित किए गए संस्था के पदाधिकारी नहीं माने और उन्होंने बीते 21 सितंबर को यूपीएमटीए का चुनाव नियम संविधान के खिलाफ जाकर करवा दिया था ,जिसके बाद अध्यक्ष महामंत्री व अन्य पदाधिकारी भी चुन लिए गए थे। अब संस्था के नियमों और संविधान के खिलाफ 21 सितंबर को कराए गए इसी चुनाव को डिप्टी रजिस्ट्रार ने रद्द कर दिया है। अब यूपीएमटीए के इस चुनाव को रजिस्ट्रार खुद करायेंगे। इसके लिए तारीख की घोषणा भी जल्द किए जाने की उम्मीद है।

गणपति रोड कैरियर के डायरेक्टर प्रवीण जैन, और कालातीत महामंत्री, मनीष कटारिया को प्रेषित आदेश निर्देश के मुताबिक

रजिस्ट्रार कार्यालय में संस्था से सम्बन्धित प्रचलित प्रकरण का निस्तारण मा० उच्च न्यायालय में योजित रिट याचिका संख्या-31018/2025 में पारित आदेश दिनांक 08 सितंबर 2025 के अनुपालन में कार्यालय आदेश संख्या -1809 दिनांक 16. सितंबर 2025 द्वारा किया जा चुका है। सोसा रजि. अधि०- 1860 की धारा-25(2) के अन्तर्गत संस्था का चुनाव अधोहस्ताक्षरी यानी डिप्टी रजिस्ट्रार द्वारा सम्पन्न कराया जाना है।

इसमें आगे यह भी कहा गया है कि यदि इस सम्बन्ध में संस्था के कालातीत अध्यक्ष / महामंत्री द्वारा कार्यालय आदेशों का उल्लंघन करते हुये चुनाव सम्पन्न कराया गया है तो वह न केवल कार्यालय आदेशों का उल्लंघन है अपितु सोसा रजि.अधि - 1860 की अवहेलना भी है। ऐसी स्थिति में उपरोक्त कार्य न केवल असंवैधानिक अपितु विधि विरूद्ध भी है। जिसे स्वीकार नहीं किया जा सकता।

वहीं इस बारे में हुई महत्वपूर्ण बैठक में रजिस्ट्रार के आदेश को ट्रांसपोर्टरों के हित में सच्चाई की जीत बताया गया। संस्था के नियमों और संविधान के खिलाफ 21 सितंबर वाले को अवैध घोषित कर यूपीएमटीए दोबारा चुनाव कराए जाने के आदेश के पालन को लेकर हुई इस महत्वपूर्ण बैठक में ट्रांसपोर्टर प्रवीन जैन, राकेश कुमार गुप्ता रम्मू, श्याम शुक्ला, श्याम गर्ग, लवी गांधी , आदित्य तिवारी, विक्की नारंग, संतोष शुक्ला, अमरजीत सिंह सलूजा, सौरभ सक्सेना, सचिन मिश्रा ,राजकुमार सारंग, महावीर जिंदल और पारिख आदि मौजूद रहे।

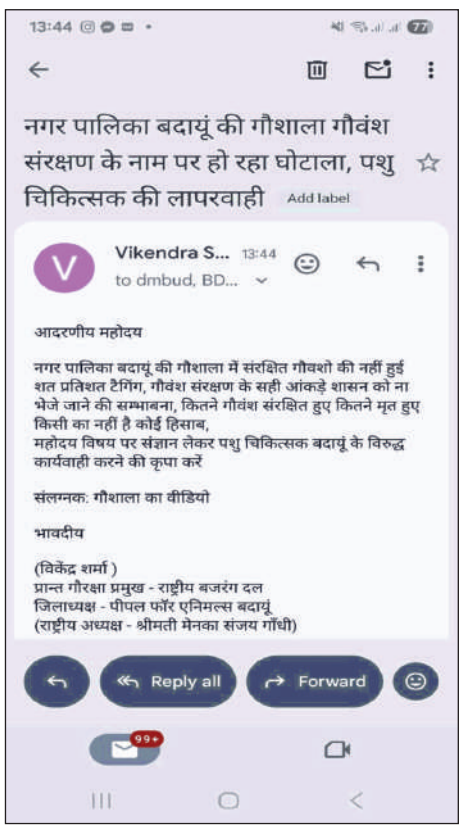

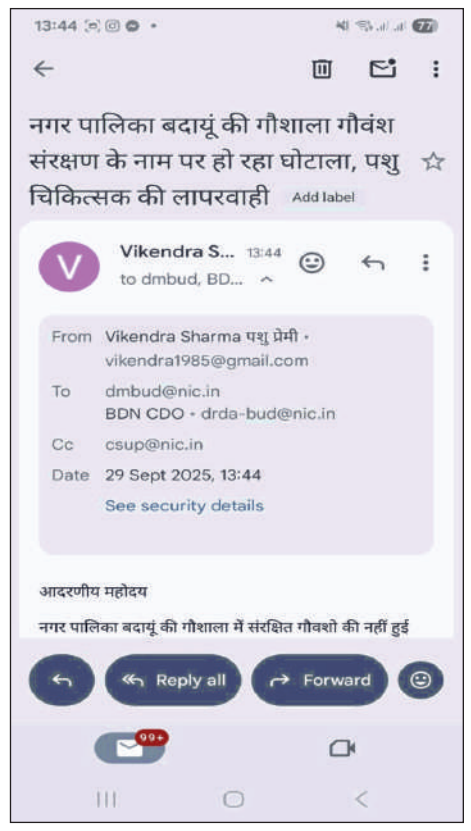

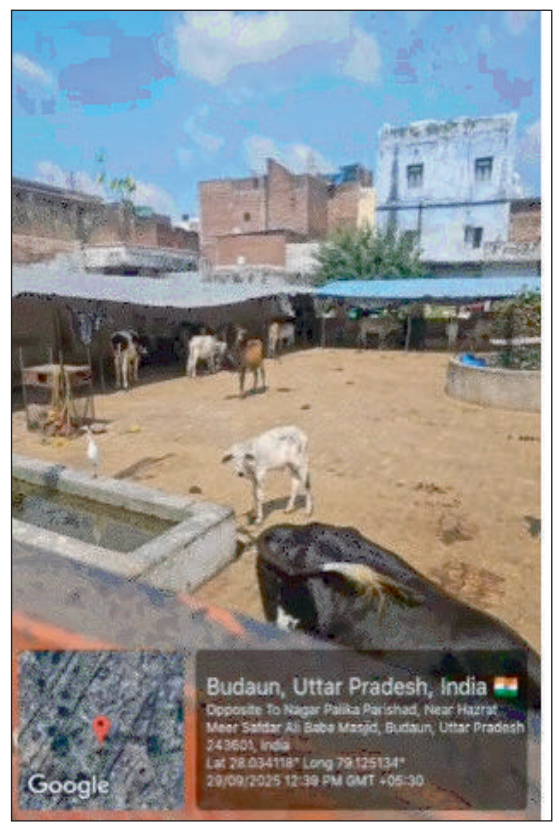

नगर पालिका बदायूं की गौशाला में गौवंश संरक्षण के नाम पर हो रहा घोटाला, पशु चिकित्सक और नगर पालिका गौशाला संचालक की मिलीभगत से गौवंश संरक्षण के नाम पर हो रहा है खेल, गौशाला में संरक्षित गौवशो की नहीं हुई शत प्रतिशत टैगिंग, पशु पालन विभाग गौवशो के आंकड़ों के साथ कर रहा खेल, टैगिंग ना होने के कारण संरक्षित और मृत गौवशो के सही आंकड़े शासन को ना भेजे जाने की सम्भावना, पशु प्रेमी विकेंद्र शर्मा ने टैगिंग ना होने पर पशु चिकित्सक की शिकायत जिलाधिकारी और अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका बदायूं से की।

"यूपी रत्न" से अलंकृत हुए प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी

लखनऊ में पूर्व उप-मुख्यमंत्री व राज्यसभा सांसद डॉ. दिनेश शर्मा ने प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह देकर व पगड़ी पहनाकर किया सम्मानित

वृन्दावन। लखनऊ के गोमती नगर स्थित सी.एम.एस. के ऑडिटोरियम में सम्पन्न हुए ऑल इंडिया कॉन्फ्रेंस ऑफ इंटलेक्टुअलस (ए.आई.सी.ओ.आई.) के 47वाँ वार्षिक समारोह में नगर के प्रख्यात साहित्यकार, पत्रकार, अध्यात्मविद् व समाजसेवी डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, एडवोकेट को, उनके द्वारा देश व समाज के प्रति की गई अविस्मरणीय सेवाओं के लिए ₹यूपी रत्न₹ सम्मान प्रदान किया गया।उन्हें यह सम्मान समारोह के अध्यक्ष नैनीताल हाईकोर्ट की लोक अदालत के न्यायाधीश, उत्तराखंड आर्बीट्रेशन काउंसिल के चेयरमैन जस्टिस राजेश टंडन, मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश के पूर्व उप-मुख्यमंत्री व राज्यसभा सांसद डॉ. दिनेश शर्मा, प्रयागराज उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश जस्टिस राकेश शर्मा, ए.आई.सी.ओ.आई. के राष्ट्रीय महासचिव व सर्वोच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता प्रकाश निधि शर्मा एवं भारतीय प्रशासनिक सेवा के पूर्व वरिष्ठ अधिकारी व प्रख्यात समाजसेवी देवदत्त शर्मा (रिटायर्ड आई.ए.एस.) व ए.आई.सी.ओ.आई के उपाध्यक्ष डॉ. एस. फारुख आदि ने संयुक्त रूप से प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह, अंगवस्त्र आदि भेंट करके व पगड़ी पहनाकर प्रदान किया।

इस अवसर पर ₹यूपी रत्न₹ से अलंकृत हुए डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने समारोह के आयोजकों को धन्यवाद देते हुए कहा कि प्रख्यात समाजसेवी व सर्वोच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता स्व. भव्य निधि शर्मा द्वारा संस्थापित ऑल इंडिया कॉन्फ्रेंस ऑफ इंटलेक्टुअलस (ए.आई.सी.ओ.आई.) पिछले 46वर्षों से समाजसेवा एवं विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली विभूतियों को ₹यूपी रत्न₹ सम्मान प्रदान करके अत्यन्त महत्वपूर्व कार्य कर रही है।इसके लिए संस्था के समस्त पदाधिकारी अत्यन्त प्रशंसा व धन्यवाद के पात्र हैं।

समारोह में लखनऊ विश्वविद्यालय की कार्यवाहक कुलपति प्रोफेसर (डॉ.) मनुका खन्ना, किंग जॉर्ज मेडीकल कॉलेज के स्त्री रोग विभाग की प्रोफेसर डॉ. अमिता पाण्डेय, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक डॉ. रेनू सिंह (आई.एफ.एस.) समारोह की संयोजिका श्रीमती अनु श्री, अटल भारतीय हिन्दू फाउंडेशन के जिलाध्यक्ष अरुण कुमार द्विवेदी आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।संचालन लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. अशोक दुबे ने किया।

महावीर व्यायामशाला, देवघर में हुआ भव्य डांडिया-उत्सव

परिवहन विशेष न्यूज

देवघर। शारदीय नवरात्र के पावन अवसर पर महिलाओ व कन्याओं द्वारा माँ दुर्गा के प्रति श्रद्धा, आस्था, समर्पण, उपासना व भागीदारी हेतू भव्य डांडिया उत्सव श्री श्री 108 महावीर व्यायामशाला सार्वजनिक दुर्गा पुजा समिति द्वारा व्यायामशाला परिसर में आयोजित किया गया। इस अवसर पर रंग-बिरंगे परिधानों में डांडिया की ताल पर कन्याओं और महिलाओं ने मनमोहक प्रस्तुतियां दी। पूजा परिसर रंग-बिरंगे आकर्षक लाईटो, सजावट व डांडिया की धुनों से गूंज उठा और पूरे माहौल को सांस्कृतिक उल्लास और उत्साह से भर दिया। डांडिया की मनमोहक प्रस्तुति से पूरा परिसर मंत्र मुग्ध हो गया। पुजा समिति ने कहा कि आने वाले वर्षों में यह उत्सवऔर भी भव्यता के साथ मनाया जाएगा। पूरे आयोजन मे भक्तों और स्थानीय लोगों की भारी भीड़ रही। मौके पर भारतीय वैश्य महासभा के जिला अध्यक्ष श्री प्रभाष गुप्ता ने कहा कि समाज को एक सूत्र में जोड़ने और नई पीढी को अपनी संस्कृति और परंपरा का बोध कराने हेतू यह डांडिया उत्सव महत्वपूर्ण व अहम है।

सजग रहें, सतर्क रहें, साइबर धोखाधड़ी से बचें

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज

मिशन शक्ति अभियान 5.0 के तहत महिलाओं एवं बालिकाओं को साइबर फ्राड व ऑनलाइन धोखाधड़ी से बचाना और उन्हें डिजिटल सुरक्षा के प्रति जागरूक बनाना है।*

क्षेत्राधिकारी नगर सुश्री आंचल चौहान द्वारा महिला थाना एवं भागीरथी इंटर कॉलेज सोरों पर, क्षेत्राधिकारी पटियाली श्री संदीप वर्मा द्वारा थाना पटियाली के ग्राम करनपुर में एवं क्षेत्राधिकारी सहावर सुश्री शाहिदा नसरीन द्वारा थाना सुन्नगढ़ी के रघुवीर सिंह इंटर कॉलेज महमूदपुर में महिलाओं एवं बालिकाओं को मिशन शक्ति अभियान के तहत जागरूक किया गया।*

अभियान के तहत जागरूकता प्रयासः-

1. डिजिटल सुरक्षा कार्यशालाएं: स्कूलों, कॉलेजों, और संस्थानों में जागरूकता कार्यक्रम
2. सोशल मीडिया प्रचारः साइबर फ्रॉड से बचने के उपायों का प्रचार
3. हेल्पलाइन नंबरः 1930 पर शिकायत दर्ज कर सकते हैं
4. सुरक्षा ऐपः सरकार द्वारा सिफारिशित साइबर सुरक्षा ऐप्स का उपयोग

साइबर फ्रॉड से बचने के उपायः-

1. अपने बैंक डिटेल्स या ओटीपी किसी से साझा न करें।
2. अज्ञात लिंक पर क्लिक करने से बचें।
3. मजबूत पासवर्ड का उपयोग करें।
4. सार्वजनिक वाई-फाई पर संवेदनशील जानकारी साझा न करें।
5. साइबर सुरक्षा टिप्स का पालन करें।

पटियाली {अनिल राठौर}

उत्तर प्रदेश शासन द्वारा महिलाओं/बालिकाओं की सुरक्षा, सम्मान एवं स्वालंबन हेतु चलाये जा रहे मिशन शक्ति अभियान फेज-05 के तहत पुलिस अधीक्षक कासगंज सुश्री अंकिता शर्मा के निर्देशन एवं नोडल अधिकारी/अपर पुलिस अधीक्षक कासगंज श्री सुशील कुमार के पर्यवेक्षण में जनपद के समस्त थाना क्षेत्रांतर्गत महिला बीट पुलिस अधिकारियों द्वारा स्कूल-कॉलेजों, गांव, कस्बा, बस स्टैण्ड सहित विभिन्न सार्वजनिक स्थानों पर भ्रमण कर प्राथमिकता के आधार पर महिला एवं बालिकाओं को जागरुक करने के साथ ही महिला संबंधित समस्याओं के निस्तारण कराने के संबंध में जनजागरुकता अभियान चलाया जा रहा है तथा महिलाओं एवं बालिकाओं के साथ जुड़कर उन्हें सशक्त एवं सुरक्षित वातावरण देने का प्रयास किया जा रहा है।

इसी क्रम में आज दिनांक 29.09.2025 को महिला बीट पुलिस अधिकारियों द्वारा थाना कासगंज क्षेत्रांतर्गत चामुण्डा मन्दिर, थाना सोरों क्षेत्रांतर्गत भागीरथ इ०कॉ० मौ० बदरिया, थाना ढोलना क्षेत्रांतर्गत पंचायत/प्राइमरी स्कूल बड़ा गांव उर्फ बरौली, थाना सहावर क्षेत्रांतर्गत शिवालय मन्दिर बौदर रोड कस्बा सहावर, थाना अमांपुर क्षेत्रांतर्गत मौ० राजीबनगर कस्बा अमांपुर, थाना सुन्नगढ़ी क्षेत्रांतर्गत रघुवीर सिहं यादव इ० कॉ०/ बनवारी लाल सिंह इण्टर कॉ० महमूदपुर, थाना पटियाली क्षेत्रांतर्गत बरदराज महाराज मन्दिर कस्बा पटियाली, थाना गंजडुण्डवारा क्षेत्रांतर्गत पंचायत भवन धुबियाई, थाना सिढ़पुरा क्षेत्रांतर्गत काली मन्दिर धुमरी रोड कस्बा सिढ़पुरा, थाना सिकन्दरपुर वैश्य क्षेत्रांतर्गत ग्राम पंचायत इन्दाजशनपुर, महिला थाना क्षेत्रांतर्गत चामुण्डा मन्दिर पर प्राथमिकता के आधार पर सरकार द्वारा महिलाओं और बालिकाओं के सशक्तिकरण और कल्याण के लिए चलाई जा रही कई योजनाएँ के संबंध में विस्तृत जानकारी देकर जागरूक किया गया।

थाना गंजडुण्डवारा पुलिस द्वारा चैकिंग के दौरान 01 अभियुक्त को किया गिरफ्तार, कब्जे से 22 क्वार्टर अवैध देशी शराब बरामद

गंजडुण्डवारा (अनिल राठौर)

पुलिस अधीक्षक कासगंज सुश्री अंकिता शर्मा के निर्देशन व अपर पुलिस अधीक्षक कासगंज श्री सुशील कुमार के पर्यवेक्षण में जनपद में अवैध शराब के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में दिनांक 29 .09 .2025 को क्षेत्राधिकारी पटियाली श्री संदीप वर्मा के नेतृत्व में थाना गंजडुण्डवारा पुलिस द्वारा चैकिंग के दौरान अभियुक्त कुलदीप पुत्र अतर सिह निवासी ग्राम सिरोठी थाना सहावर जनपद कासगंज को 22 क्वार्टर अवैध देशी शराब के साथ गिरफ्तार किया गया है । अभियुक्त की गिरफ्तारी एवं बरामदगी के आधार पर थाना गंजडुण्डवारा पर धारा 60 आबकारी अधिनियम के तहत अभियोग पंजीकृत कर नियमानुसार विधिक कार्यवाही की गयी है।

गिरफ्तार अभियुक्त का विवरण--

1. कुलदीप पुत्र अतर सिंह निवासी ग्राम सिरोठी थाना सहावर जनपद कासगंज

बरामदगी--

* 22 क्वार्टर अवैध देशी शराब

पुलिस टीम--

* श्री भोजराज अवस्थी , प्रभारी निरीक्षक थाना गंजडुण्डवारा जनपद कासगंज मय पुलिस टीम

अंतर्राष्ट्रीय अनुवाद दिवस 2025 -भाषाओं के सेतु, संस्कृतियों का संगम और वैश्विक संवाद का आधार अनुवादक,दुभाषिए और भाषा विशेषज्ञ दुनियाँ को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करते हैं

जब शब्दों का सही अनुवाद न हो तो गलत संदेश फैल सकता है, अनुवादक इन गलतफहमियों को रोककर राष्ट्रों को आपसी विश्वास और शांति की ओर ले जाते हैं-

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर मानव सभ्यता के विकास में भाषा की भूमिका हमेशा ही केंद्रीय रही है। भाषा वह माध्यम है जो विचारों, भावनाओं, ज्ञान और अनुभवों को पीढ़ी दर पीढ़ी तथा राष्ट्र से राष्ट्र तक पहुँचाती है। किंतु विश्व की 7,000 से अधिक भाषाओं के बीच संचार स्थापित करना स्वाभाविक रूप से कठिन है। यहीं पर अनुवादक (ट्रांसलेटर्स), दुभाषिए (इंटरपरेटर्स) और भाषा विशेषज्ञ दुनियाँ को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करते हैं। वे भाषाई दीवारों को तोड़कर आपसी समझ, संवाद और सहयोग की नींव रखते हैं। इन्हीं भाषा पेशेवरों के योगदान को सम्मान देने हेतु प्रतिवर्ष 30 सितंबर को "अंतर्राष्ट्रीय अनुवाद दिवस" (इंटरनेशनल ट्रांसलेशन डे) मनाया जाता है। वर्ष 2025 में इसकी थीम है-"अनुवाद, एक ऐसे भविष्य को आकार देना जिस पर आप भरोसा कर सकें" (ट्रांसलेशनः शेपिंग द फ्यूचर यू कैन ट्रस्ट) मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि भाषाओं की जंजीरों को तोड़ने में अनुवादकों की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। वैश्विक मंचों पर नेताओं की बात को यदि उनकी ही भाषा में समझा पाना संभव न होता, तो अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति कभी सफ़ल नहीं हो पाती। उदाहरणस्वरूप, जब अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप, भारतीय प्रधानमंत्री मोदी, रूसी राष्ट्रपति पुतिन, इज़राइल के प्रधानमंत्री नेतन्याहू या ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर किसी वैश्विक शिखर सम्मेलन में बोलते हैं, तो उनकी बातों को विभिन्न भाषाओं में तुरंत अनुवादितकिया जाता है। यही अनुवादक सुनिश्चित करते हैं कि विश्व के हर प्रतिनिधि तक संदेश सही और सटीक रूप से पहुँचे। इस प्रकार अनुवादक सिर्फ शब्दों का नहीं, बल्कि संस्कृतियों, दृष्टिकोणों और विचारों का आदान-प्रदान संभव बनाते हैं।वर्ष 2025 की थीम "अनुवाद, एक ऐसे भविष्य को आकार देना जिस पर आप भरोसा कर सकें" यह संदेश देती है कि आने वाले समय में विश्व व्यवस्था, शिक्षा, विज्ञान, कूटनीति और सांस्कृतिक संवाद सब अनुवादकों के माध्यम से ही संभव होंगे। इस भविष्य पर भरोसा तभी किया जा सकता है जब भाषा पेशेवर अपनी निष्ठा, सटीकता और मानवीय संवेदनाओं के साथ कार्य करें।इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, अंतर्राष्ट्रीय अनुवाद दिवस 2025 भाषाओं के सेतु संस्कृतियों का संगम और वैश्विक संवाद का आधार।

साथियों बात अगर हम अनुवादः संस्कृतियों को जोड़ने वाला सेतु को समझने की करें तो, अनुवाद केवल शब्दों का परिवर्तन नहीं है, बल्कि यह संस्कृतियों, परंपराओं और मान्यताओं को जोड़ने की प्रक्रिया है। जब जापान की कोई साहित्यिक कृति हिंदी में पढ़ी जाती है, या भारत का कोई उपन्यास स्पेनिश में पहुँचता है, तो यह सिर्फ भाषाई रूपांतरण नहीं बल्कि सांस्कृतिक आदान- प्रदान भी होता है।यही कारणहै कि अनुवादक सटीक ₹संस्कृति-दूत" (कल्चरल अम्बास्साडोर्स) भी माने जाते हैं। भारत और अनुवाद की परंपरा,-भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है जहाँ 22 अनुसूचित भाषाएँ और सैकड़ों बोलियाँ प्रचलित हैं।भारतीय सभ्यता में अनुवाद की परंपरा प्राचीन काल से रही है-चाहे वह संस्कृत ग्रंथों का फारसी और अरबी में अनुवाद हो या फिर उपनिषदों का लैटिन में अनुवाद।आधुनिक भारत में संविधान भी 22 भाषाओं में उपलब्ध है, जो अनुवादकों की भूमिका की महत्ता को और सटीकता से स्पष्ट करता है।

साथियों बात अगर हम वैश्विक कूटनीति और अनुवाद का संगम तथा संयुक्त राष्ट्र और 2025 की प्रासंगिकता को समझने की करें तो संयुक्त राष्ट्र ,यूरोपीय संघ, जी20, ब्रिक्स या अन्य किसी अंतरराष्ट्रीय संगठन की बैठकों में अनुवादकों की भूमिका आधारशिला की तरह होती है। वे न केवल भाषाई संदेशों का आदान-प्रदान करते हैं, बल्कि शांति, विश्वास और सहयोग की प्रक्रिया को भी जीवित रखते हैं। संयुक्त राष्ट्र की छह आधिकारिक भाषाएँ-अरबी, अंग्रेजी, चीनी, फ्रेंच, रूसी और स्पेनिश, साथ ही अनेक क्षेत्रीय भाषाओं का भी उपयोग किया जाता है। ऐसे में यदि पेशेवर अनुवादक न हों तो संवाद और निर्णय-

प्रक्रिया ठहर सी जाएगी।संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2025 को "शांति और विश्वास का वर्ष" घोषित किया है। इस घोषणा का सीधा संबंध अनुवादकों की भूमिका से है, क्योंकि संवाद और कूटनीति के माध्यम से ही संघर्षों को कम किया जा सकता है।भाषा पेशेवर यह सुनिश्चित करते हैं कि कोई भी राष्ट्र या संस्कृति गलतफ़हमी का शिकार न हो, और हर संवाद पारदर्शिता और स्पष्टता से संपन्न हो।आज की दुनिया में बहु भाषावाद शिक्षा, अनुसंधान, सांस्कृतिक संरक्षण और सामाजिक समावेशन की कुंजी बन चुका है। अनुवादक इस बहुभाषिक दुनिया में सबको जोड़ने का कार्य करते हैं। यूनेस्को और यूएन लगातार इस बात पर बल देते रहे हैं कि बहुभाषावाद न केवल सांस्कृतिक विविधता को बचाता है, बल्कि ज्ञान समाज के निर्माण में भी बहुत हद तक सहायक है।

साथियों बात अगर हम प्रौद्योगिकी और अनुवाद का भविष्य तथा अनुवाद और विश्व शांति को समझने की करें तो, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन ट्रांसलेशन और स्वचालित अनुवाद उपकरणों ने अनुवाद की दुनियाँ में क्रांति ला दी है। गूगल ट्रांसलेट, डीपल जैसे उपकरणों ने आम लोगों के लिए भाषा अवरोध को कम किया है। फिर भी, मशीन कभी भी मानवीय संवेदना, सांस्कृतिक संदर्भ और भावनात्मक सूक्ष्मताओं को पूरी तरह नहीं समझ सकती। यही कारण है कि 2025 की थीम "अनुवाद, एक ऐसे भविष्य को आकार देना जिस पर आप भरोसा कर सकें" मानवीय अनुवादकों की अपरिहार्यता को रेखांकित करती है।दुनियाँ में अधिकांश युद्ध और संघर्ष गलतफहमियों और संवादहीनता से उत्पन्न होते हैं। जब शब्दों का सही अनुवाद न हो तो गलत संदेश फैल सकता है। अनुवादक इन गलतफहमियों को रोककर राष्ट्रों को आपसी विश्वास और शांति की ओर ले जाते हैं। इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो अनुवादक केवल भाषा विशेषज्ञ ही नहीं, बल्कि विश्व शांति के निर्माता भी हैं।

साथियों बात अगर हम अंतर्राष्ट्रीय अनुवाद दिवस के इतिहास को समझने की करें तो, 30 सितंबर को अनुवाद दिवस मनाने की परंपरा सेंट जेरोम के सम्मान में शुरू हुई थी, जिन्हें बाइबिल का लैटिन भाषा में अनुवादक माना जाता है। लेकिन इसे आधिकारिक मान्यता 2017 में मिली, जब संयुक्त राष्ट्र महासभा ने ए/आरईएस/71/288 प्रस्ताव पारित कर 30 सितंबर को आधिकारिक "अंतर्राष्ट्रीय अनुवाद दिवस" घोषित किया। यह प्रस्ताव सभी पेशेवर अनुवादकों, दुभाषियों और शब्दावलीविदों की मेहनत को वैश्विक स्तर पर मान्यता देने की दिशा में ऐतिहासिक मील का पत्थर था।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि अंतर्राष्ट्रीय अनुवाद दिवस केवल अनुवादकों को सम्मानित करने का अवसर नहीं है, बल्कि यह दिन हमें यह याद दिलाता है कि यदि भाषाओं के बीच सेतु न बने होते, तो मानव सभ्यता कभी भी वैश्विक नहीं बन पाती।अनुवादकों ने न केवल विचारों का आदान-प्रदान संभव बनाया है, बल्कि उन्होंने शांति, सहयोग और विकास की राह भी प्रशस्त की है। 2025 में जब विश्व "शांति और विश्वास" का वर्ष मना रहा है, तो यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हम उन अनुवादकों को सम्मान दें, जो हर दिन अपनी निष्ठा और परिश्रम से दुनिया को जोड़ने का कार्य करते हैं।

वैश्विक कूटनीति का चातुर्य काल, मोदी डॉक्ट्रिन से मजबूत हुआ भारत

कमलेश पांडेय

वैश्विक कूटनीति के चातुर्य काल का तात्पर्य इस दौर से है जब विश्व के देशों के बीच कूटनीति (राजनय) और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में निपुणता, समझदारी और रणनीतिक कुशलता अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। इस काल में देशों को सीमाओं के पार जटिल राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक संदर्भों में अपनी शर्तों को रखने और विस्तार के लिए सूझ-बूझ, संतुलन, संवाद, और मध्यस्थता करनी पड़ती है। 21वीं सदी में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी वैश्विक कूटनीति के चातुर्य काल के अधिष्ठाता समझे जाते हैं। उन्होंने समकालीन विश्व को जो कूटनीतिक संदेश दिया है, वह मोदी डॉक्ट्रिन यानी मोदी सिद्धांत के नाम से मशहूर है।

[illegible] अंतरराष्ट्रीय कूटनीति का यह काल वैश्विक सत्ता संघर्ष, क्षेत्रीय विवाद, आर्थिक साझेदारी, तकनीकी और आर्थिक सहयोग तथा बहुपक्षीय कूटनीतिक पहलों के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय शांति को स्थिर और सकारात्मक बनाए रखने के लिए दक्षता और चतुराई की आवश्यकता पर जोर देता है। उदाहरण के रूप में, भारत की हाल की विदेश नीति में अमेरिका-चीन प्रतिद्वंद्विता, मध्य पूर्व संघर्ष, रूस-यूक्रेन युद्ध जैसे वैश्विक तनावों के बीच तटस्थता और संतुलन बनाए रखने की रणनीति, और क्षेत्रीय सहयोग जैसे क्वाड पहल शामिल हैं जो वैश्विक कूटनीति के चातुर्य काल की एक झलक है।

निःसंदेह, इस काल में कूटनीतिक क्रियाकलाप [illegible] अपने राष्ट्रों के योगदान और सुरक्षा सुनिश्चित करने पर केंद्रित होते हैं। इसलिए, वैश्विक कूटनीति के चातुर्य काल का मतलब समग्र वैश्विक वातावरण में सूझ-बूझ और सामंजस्यपूर्ण कूटनीतिक प्रयासों के माध्यम से अपने और वैश्विक हितों को संतुलित और सुरक्षित रूप से आगे बढ़ाने की क्षमता को कहा जाता है। यह मोदी डॉक्ट्रिन यानी मोदी सिद्धांत से प्रभावित है।

दरअसल, मोदी डॉक्ट्रिन का मतलब है प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की वह नीति-संहिता, जिसमें भारत अपनी विदेश नीति, सुरक्षा नीति और आतंकवाद के खिलाफ रणनीति में पहले से काफी ज्यादा आक्रामक, आत्मनिर्भर और सक्रिय हो गया है। इस सिद्धांत के तहत भारत अंतरराष्ट्रीय मसले में 'भारत के हित' को सर्वोपरि रखता है। भारत अब किसी एक गुट का हिस्सा नहीं बनता, बल्कि सभी देशों से कूटनीतिक संबंध मजबूत करता है। भारत 'मल्टी-अलाइनमेंट' को प्रोत्साहित करता है ताकि उसकी रणनीतिक स्वतंत्रता बनी रहे।

लिहाजा, 'मेक इन इंडिया' और आर्थिक-तकनीकी आत्मनिर्भरता का भी इसमें खास महत्व है। मोदी डॉक्ट्रिन के अनुसार, भारत अब आतंकवाद के खिलाफ सिर्फ डिफेंसिव नहीं, बल्कि आक्रामक रणनीति अपनाता है। सर्जिकल स्ट्राइक, बालाकोट एयर स्ट्राइक और ऑपरेशन सिंदूर जैसी कार्रवाइयों ने यह दिखाया है कि भारत अब अपनी सुरक्षा के लिए सीमा-पार कार्रवाई करने से नहीं डरता। [illegible] भारत की संप्रभुता के खिलाफ किसी भी कार्रवाई पर तत्काल और कठोर जवाब दिया जाता है। [illegible]

[illegible] भारतीय संस्कृति, सभ्यता और योग जैसे वैश्विक अभियान भी इसी नीति का हिस्सा हैं। मोदी डॉक्ट्रिन का मतलब है - निर्णायक, निर्भीक, आक्रामक, बहुपक्षीय, आत्मनिर्भर और भारत-हित केंद्रित नीति, [illegible]

आधुनिक संकटों में चातुर्य काल की अवधारणा को लागू करने का मतलब है जीवन में अनुशासन, संयम, और सूझ-बूझ से सभी संकटों का सामना करना। [illegible] आत्मसंयम, [illegible] सामाजिक नियमों का पालन, और मानसिक संतुलन बनाए रखना महत्वपूर्ण होता है।

इसी प्रकार, आधुनिक संकटों में- जैसे आर्थिक संकट, पर्यावरणीय समस्याएं, सामाजिक अस्थिरता या वैश्विक तनाव- इन गुणों का पालन करके स्थिरता और समाधान की दिशा में काम किया जा सकता है।

चातुर्य काल की तरह, जब हम सीमित संसाधनों में संयमित और विवेकपूर्ण निर्णय लेते हैं, अपने जीवन में नियम और संतुलन बनाए रखते हैं, तो कठिनाइयों का सामना करना आसान हो जाता है। [illegible] आधुनिक संकटों में धैर्य, समझदारी, और संतुलित दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है। [illegible]

आधुनिक दुनिया में यह वैश्विक कूटनीति, पर्यावरण संरक्षण, आर्थिक नीति, और सामाजिक सौहार्द जैसे क्षेत्रों में लागू किया जा सकता है, [illegible]

वाकई वैश्विक कूटनीति के 'चातुर्य काल' के बाबत भारत के प्रधानमंत्री मोदी सिद्धांत को इस अद्भुत 'चातुर्य काल' का श्रेय देना ज्यादा प्रासंगिक होगा, क्योंकि समकालीन विश्व में चाहे अमेरिका हो, चीन हो, रूस हो, यूरोपीय संघ हो, [illegible] सभी भारत के युगांतरकारी कूटनीतिक प्रयासों की मुरीद बने हुए हैं। चाहे ऑस्ट्रेलिया हो, अफ्रीकी देश हों या दक्षिण अमेरिकी देश, लगभग सभी भारत की तरह संतुलित राह पर अग्रसर रहना चाह रहे हैं। भारत की बढ़ती प्रगति और मजबूत होते आर्थिक व सैन्य सामर्थ्य से उनकी परिवर्तित निष्ठा भी स्वाभाविक है।

[illegible]

करना व होना कि पश्चिमी देश भले ही लोकतंत्र व शांति की माला जपते हैं लेकिन पर्दे के पीछे वे अशांति पैदा करने के लिए आतंकवाद, नक्सलवाद और ड्रग्स कारोबार के मुख्य संरक्षक भी यही हैं ताकि उनके हथियार व गोली बारूद का कारोबार चमकता रहे। [illegible]

[illegible]

यदि पुरानी प्रतिद्वंद्विता की बात छोड़ भी दें तो मौजूदा दौर में जी-7, जी-20 बनाम ब्रिक्स व ग्लोबल साउथ के देशों में [illegible]

[illegible]

उधर, सम्भवतः रूस, भारत, चीन गठजोड़ को कमजोर करने के लिहाज से [illegible] कभी ताइवान को भड़काया जाता है तो कभी तिब्बत के मसले की हवा दी जाती है। कभी चीन के शिनजियांग प्रांत के मुस्लिम उइगरों को उकसाने की कोशिश की जाती है [illegible]

हालांकि, इसी प्रतिक्रियास्वरूप अमेरिका पूरी दुनिया में जहां-जहां भी खड़ा होने के लिए मेहनत करता है, वहां-वहां रूस-चीन-ईरान भी उसके पांव उखाड़ने में लगे रहते हैं। यदि वियतनाम, लीबिया, इराक युद्ध में अमेरिकी विफलता की बात भूल भी दी जाए तो [illegible] नाटो की तर्ज पर इस्लामिक नाटो बनाना इस नज़रिए से एक बड़ा संकेत है। [illegible]

[illegible]

इसी तरह से भारत और इजरायल की बढ़ती मित्रता से भी अमेरिका वाकिफ है क्योंकि दोनों के अस्तित्व को मुस्लिम एकजुटता से खतरा है। यह भारतीय कूटनीति का ही कमाल है कि इजरायल के दुश्मन ईरान से भी भारत की अच्छी समझदारी भरी मित्रता है। [illegible]

भारत एक साथ अमेरिका, रूस, चीन, फ्रांस, जर्मनी, इंग्लैंड, इटली, जापान, ऑस्ट्रेलिया, [illegible] आदि को साधकर अपनी विकास की ओर अग्रसर है। इससे अमेरिका के पेट में मरोड़ उठता रहता है, जबकि रूस भारतीय मित्रता भाव से संतुष्ट रहता है। यही भारत की ताकत भी है।

देखा जाए तो दुनियावी देशों की इन सब द्विपक्षीय कोशिशों का एक मात्र ध्येय यही है कि खुद के आर्थिक व सैन्य दृष्टि से निरंतर मजबूत कीजिए, और अपने हित साधन के लिए दूसरे देशों को परस्पर उलझाए रहने दीजिए। [illegible] विकास की माला जपिए, लेकिन कहीं तानाशाहों को बढ़ावा दीजिए तो कहीं चरणरज मूर्ख नेताओं को जनतांत्रिक गद्दी दिलवाइए ताकि उनकी मदद की आड़ में वहां के प्राकृतिक संसाधनों को लूटा जा सके और अपना लाभदायक व्यापार उन पर थोपा जा सके।

सावधान! फर्जी धमकियां भी आतंक का रूप हैं

दिल्ली की सुबह सन्नाटे में डूबी थी, तभी एक ईमेल ने शांति को चकनाचूर कर दिया। 'टेरराइजर्स 111' नामक रहस्यमयी समूह ने इंदिरा गांधी हवाई अड्डे, सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल, और सरवोदय विद्यालय को 24 घंटे में विस्फोट की धमकी दी। "खून का समंदर" और "नफरत का प्रतीक" जैसे शब्दों ने दिलों में दहशत भर दी। उसी दिन जम्मू हवाई अड्डे को भी ऐसी ही धमकी मिली। पुलिस, बम निरोधक दस्ते, और डॉग स्क्वायड ने तुरंत मोर्चा संभाला, पर जांच में धमकी झूठी निकली। मगर यह "झूठ" समाज, सुरक्षा, और संसाधनों पर भारी बोझ डालता है। 28 सितंबर की यह घटना डिजिटल युग में आतंक के नए चेहरे को बेनकाब करती है। सवाल यह है—क्या हम इस अदृश्य खतरे से निपटने को तैयार हैं?

यह कोई पहली घटना नहीं। मई 2023 और अप्रैल 2024 में भी "टेरराइजर्स 111₹ ने दिल्ली और जम्मू के स्कूलों को ऐसी ही धमकियों से दहलाया था, जो फर्जी साबित हुईं। इस बार भी वही शैली—नाटकीय भाषा, विदेशी सर्वर, और गुमनाम प्रेषक। साइबर विशेषज्ञों का अनुमान है कि ये ईमेल रूस या पूर्वी यूरोप से आ सकते हैं, जहां सस्ते वीपीएन और टॉर नेटवर्क गुमनामी की ढाल बनते हैं। डार्क वेब पर "बम थ्रेट सर्विसेज" मात्र 500-1000 रुपये में मिलती हैं, जो भय को व्यापार बना चुकी हैं। भारतीय साइबर क्राइम कोऑर्डिनेशन सेंटर (आई4सी) के अनुसार, 2024 में ऐसी धमकियां 40% बढ़ीं। यह साइबर आतंकवाद का नया रूप है—हथियारों की नहीं, दहशत की जंग।

इन धमकियों का असर सिर्फ डर तक सीमित नहीं। स्कूलों में बच्चे सहमे हैं, माता-पिता परेशान, और शिक्षक तनावग्रस्त। 2023 के एक अध्ययन के मुताबिक, ऐसी घटनाओं से बच्चों में पीटीएसडी (पोस्ट-ट्रॉमेटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर) के लक्षण 25% बढ़े हैं। आर्थिक नुकसान भी भारी है—हर धमकी पर 5-10 लाख रुपये का खर्च, और 2025 में ऐसी 100 से ज्यादा घटनाएं हो चुकी हैं। हवाई अड्डों पर उड़ानें रुकती हैं, ट्रैफिक जाम होता है, और अफवाहें सामाजिक ताने-बाने को कमजोर करती हैं। यह "सॉफ्ट टारगेट" रणनीति है—स्कूल और हवाई अड्डे, जहां भीड़ है और सुरक्षा जटिल।

भारत का साइबर सुरक्षा तंत्र मजबूत है। CERT-In (इंडियन कंप्यूटर इमरजेंसी रिस्पांस टीम) और NCIIPC (नेशनल क्रिटिकल इंफॉर्मेशन इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रोटेक्शन सेंटर) सक्रिय हैं, और दिल्ली पुलिस की त्वरित कार्रवाई सराहनीय है। फिर भी, कमियां साफ दिखती हैं। वीपीएन और टॉर के चलते ईमेल ट्रेस करना टेढ़ी खीर है। 2024 के आईटी एक्ट संशोधन ने सजा को सख्त किया, पर अंतरराष्ट्रीय सहयोग और प्रवर्तन कमजोर है। स्कूलों के पुराने ईमेल सिस्टम स्पैम फिल्टर को चकमा दे देते हैं। जम्मू और दिल्ली को एक साथ निशाना बनाना बताता है कि यह सुनियोजित और केंद्रीकृत साजिश है।

वैश्विक स्तर पर देखें तो 2023 में अमेरिका में 2000 से अधिक स्कूलों को ऐसी धमकियां मिलीं, ज्यादातर रूसी हैकर्स से। यूक्रेन युद्ध के बाद "हाइब्रिड वारफेयर" ने भारत को भी निशाने पर लिया है। समाधान के लिए बहुस्तरीय रणनीति जरूरी है। पहला, तकनीकः एआई-आधारित ईमेल स्कैनर और क्लाउड-बेस्ड सुरक्षित सिस्टम अनिवार्य हों। दूसरा, कानूनः साइबर धमकियों के लिए कम से कम 10 साल की सजा और अंतरराष्ट्रीय डेटा साझेदारी की संधियां। तीसरा, जागरूकताः स्कूलों में "साइबर सेफ्टी वीक" और बच्चों को फर्जी खबरों की पहचान सिखाना। चौथा, खुफियाः रीयल-टाइम मॉनिटरिंग और साइबर फॉरेंसिक को और मजबूत करना।

यह घटना एक सख्त चेतावनी है। फर्जी धमकियां भी आतंक का रूप हैं—वे भरोसा तोड़ती हैं, संसाधनों को नष्ट करती हैं और समाज में भय फैलाती हैं। सोचिए, अगर एक दिन "फर्जी" असली हो जाए? 26/11 ने सिखाया कि खुफिया विफलता कितनी विनाशकारी हो सकती है। 5जी और आईओटी के इस युग में खतरे और जटिल हो गए हैं। फिर भी, आशा की किरण दिखती है। नेशनल साइबर कोऑर्डिनेशन सेंटर (एनसीसीसी) ने 70% खतरों को ट्रेस किया, और दिल्ली पुलिस की त्वरित सतर्कता प्रशंसनीय है।

यह डिजिटल युद्ध का दौर है। दिल्ली की यह घटना चीख-चीखकर कहती है कि साइबर सुरक्षा अब राष्ट्रीय सुरक्षा की रीढ़ है। हमें अटूट सतर्कता, तकनीकी नवाचार और सामूहिक एकजुटता की जरूरत है। "टेरराइजर्स 111₹ जैसे नाम अंधेरे में छिप सकते हैं, लेकिन हमारी ताकत एकजुटता के प्रकाश में है। इस भय को अवसर में बदलें—एक सुरक्षित, सशक्त और स्मार्ट भारत के लिए। डर से नहीं, दृढ़ तैयारी से विजय मिलेगी।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत",

ट्रंप की नई ब्लॉकबस्टरः "टैरिफ रिटर्न्स"

'अमेरिका फर्स्ट' से 'कला लास्ट' तकः टैरिफ का तमाशा

ट्रंप साहब ने फिर पटाखा नहीं, सीधे तोप दाग दी—और इस बार निशाना है सिनेमा की वो दुनिया, जो सपनों को रील पर बुनती है। आदेश साफ़, विदेश में बनी हर फिल्म पर सौ फीसदी टैरिफ। मतलब, जो फिल्म अमेरिका की सरहद के बाहर शूट हुई, उसकी टिकट अब दुगुनी कीमत पर। सोशल मीडिया पर छाती ठोकते हुए फरमाया—ये विदेशी चोर हमारे हॉलीवुड को ऐसे लूट रहे हैं, जैसे भूखा बच्चा मेले में लड्डू झपट ले। फिर सुरक्षा का नगाड़ा बजाया और वाणिज्य विभाग को सीधी लाइन दी। लेकिन यह हॉलीवुड को बचाने की कोशिश कम, गला घोंटने वाला इलाज ज़्यादा लगता है।

हॉलीवुड—जहां 'स्पाइडरमैन' जाल बुनता है, 'बैटमैन' मर्दानगी झाड़ता है—अब टैरिफ की भट्टी में फूंका जा रहा है। ट्रंप का दर्शन बड़ा सादा है—कनाडा, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड—ये सब डाकुओं का अड्डा, जो सस्ती लागत पर हमारे डायरेक्टरों को फुसलाते हैं। तो हल? हर विदेशी फिल्म पर टैक्स का पहाड़। अरे, यह तो वैसा ही है जैसे कोई कहे—पड़ोस की चाय सस्ती है, तो अपने चायवाले की दुकान पर हम दोगुना वसूलेंगे। 'अवतार' न्यूजीलैंड की हरियाली में शूट हुई, तो टिकट की कीमत आसमान छूएगी। 'जेम्स बॉन्ड' ने लंदन की सड़कों पर पीछा किया, तो दर्शक की जेब लुटेगी। और अगर कोई 'पैरासाइट' जैसी कोरियाई फिल्म सामने आई, तो ट्रंप गरजेंगे—"ये तो राष्ट्रविरोधी साजिश है!" अरे साहब, साजिश तो आपकी 'टॉप गन' में भी थी, जब आसमान में जेट गरजते थे और अमेरिका हीरो बनता था। पर ट्रंप को तो हर विदेशी चीज़ में शैतान नज़र आता है, मानो हर छींक में भूत-प्रेत ढूँढने वाला कोई अंधविश्वासी पंडित।

टैरिफ का यह तमाशा कोई नया अध्याय नहीं। ट्रंप की किताब में हर दर्द की दवा सिर्फ़ टैक्स है—दवा पर सौ फीसदी, ट्रक पर पच्चीस, कुर्सी-मेज पर तीस। अब बारी फिल्मों की। लेकिन भई, फिल्म कोई आलू-प्याज नहीं कि आयात करो और टैक्स ठोंक दो। यह तो कला है, कहानी है, सपनों का जादू है। दुनिया कहती है—कला पर टैक्स नहीं लगता। पर ट्रंप? वे तो गर्जते हैं, "यह तो देश की इज्जत का सवाल है!" अरे भई, 'गॉडजिला' टोक्यो में बना तो क्या व्हाइट हाउस ध्वस्त हो जाएगा? या 'ड्यून' दुबई में शूट हुआ तो क्या अमेरिकी फौज रेगिस्तान में रास्ता भटक जाएगी? यह तो वैसा ही हुआ जैसे कोई बोले—"हमारी बिरयानी हैदराबाद से बाहर बनी तो राष्ट्र संकट में पड़ जाएगा!" हंसी भी आती है, और अफसोस भी, लेकिन ट्रंप की दुकान में यही माल बिकता है।

हॉलीवुड के सेठ लोग माथा पकड़कर बैठे हैं। डिज़्नी, वार्नर, नेटफ्लिक्स—सबके दफ्तरों में भगदड़ मची है। विदेश में शूटिंग सस्ती पड़ती थी—न्यूजीलैंड के पहाड़, आयरलैंड की घाटियाँ, थाईलैंड के समंदर—ये सब हॉलीवुड की रीढ़ थे। अब ट्रंप ने फतवा दे दिया—या तो अमेरिका में बनाओ, या टैरिफ भरकर रोओ। अमेरिका में बनाओ तो बजट फूटेगा, और उसका बोझ गिरेगा टिकट पर। बेचारे दर्शक? जो पॉपकॉर्न का ठेला लादे सिनेमा हॉल पहुँचते हैं, उनकी जेब पहले ही हल्की है। कोविड ने थिएटरों को कब्रिस्तान बना दिया; बारह अरब का धंधा अब सात अरब पर हांफ रहा है। अब इस पर टैरिफ का तड़का! सोचिए, 'स्पाइडरमैन' अगर मेक्सिको में शूट हुई, तो टिकट अस्सी का। चार लोग गए, तो वॉलेट में झाड़। फिर जनता का ठिकाना? टॉरेंट की अंधेरी गली। ट्रंप शायद सोचते हैं कि लोग उनकी "मेक अमेरिका ग्रेट" टोपी पहनकर 'रॉकी' की रीमेक देखने टूट पड़ेंगे। लेकिन भाई, जनता को 'आयरन मैन' चाहिए—जो आसमान में उड़ता है, न कि ग्रीन स्क्रीन पर रस्सी से लटका। मगर अगर कोई हॉलीवुड वाला मुंबई में 'पठान' की रीमेक सोचे, तो ट्रंप का टैरिफ डंडा टूटेगा। शाहरुख की फिल्म अमेरिका में रिलीज़ हुई, तो दर्शक दुगुना चुकाएँ। यह तो वैसा ही है जैसे कोई कहे—"जलेबी सस्ती चाहिए तो चीनी पर टैक्स ठोंको!"

ट्रंप ने तो बाकायदा अपनी "फ़िल्मी फ़ौज" तैनात कर दी—मेल गिब्सन, स्टैलोन, जॉन वॉयट। अब यही हॉलीवुड की रखवाली करेंगे। पर हंसी तब आती है जब याद पड़ता है—गिब्सन की ब्रेवहार्ट स्कॉटलैंड की देन थी। अगर उस वक्त टैरिफ होता, तो फिल्म पोस्टर तक न बनती। स्टैलोन का रैंबो भी विदेशी जंगलों की गवाही है। तो अब क्या, ये सब स्टूडियो की चारदीवारी में खड़े होकर "फ्रीडम!" चिल्लाएँगे? या ट्रंप खुद कैमरा पकड़कर टैरिफ मैन बनाएँगे, जिसमें हीरो हर विदेशी चीज़ पर टैक्स ठोके और खलनायक कोई जापानी डायरेक्टर हो, जो ऑस्कर उड़ा ले जाए।

जब यह टैरिफ बम फटेगा, तो धमाका दूर-दूर तक जाएगा। थिएटर खाली होंगे, पाइरेसी महफ़िल जमाएगी, स्ट्रीमिंग कंपनियाँ ताली बजाएँगी। दर्शक पॉपकॉर्न घर पर ही सेंकेंगे, और ट्रंप चिल्लाएँगे—"फेक न्यूज़!" यही उनका फॉर्मूला है—हर बीमारी की गोली टैक्स, और हर टैक्स का नतीजा तमाशा। अब इंतज़ार बस इस बात का है कि अगला बम कहाँ गिरेगा—गानों पर या किताबों पर। क्योंकि ट्रंप का अमेरिका फर्स्ट असल में है टैक्स इज़ बेस्ट।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत",

स्लाइट में प्रो.लिन (मलेशिया) द्वारा नैनोमैटेरियल्स पर प्रेरणादायी व्याख्यान

लोगोंवाल,29 सितंबर (जगसीर सिंह)-

संत लोंगोवाल इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (स्लाइट), लोंगोवाल में निदेशक प्रो. (डॉ.) मणिकांत पासवान के नेतृत्व में नैनोमैटेरियल्स पर एक ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायी सत्र का सफल आयोजन किया गया। इस विशेष व्याख्यान का नेतृत्व मलेशिया यूनिवर्सिटी के प्रतिष्ठित वैज्ञानिक प्रो. (डॉ.) लिन ने किया, जिसका आयोजन इलेक्ट्रॉनिक्स एवं कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग विभाग द्वारा किया गया।

इस अवसर पर संकाय सदस्य, शोधार्थी और विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे और नैनोमैटेरियल्स के क्षेत्र में नवीनतम प्रगति से अवगत हुए। प्रो. लिन, जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मटेरियल साइंसेज़ में अपने अग्रणी शोध कार्य के लिए प्रसिद्ध हैं, ने नैनोमैटेरियल्स की भविष्य की भूमिका पर गहन विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा कि नैनोमैटेरियल्स केवल अध्ययन का विषय नहीं बल्कि एक वैज्ञानिक क्रांति हैं, जो प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य, ऊर्जा और पर्यावरण जैसे क्षेत्रों में वैश्विक समाधान देने की क्षमता रखते हैं।

व्याख्यान के दौरान विद्यार्थियों ने नैनोमैटेरियल्स के उपयोग पर प्रश्न पूछे, जिनमें अगली पीढ़ी के सेमीकंडक्टर्स, नवीकरणीय ऊर्जा प्रणालियाँ और स्मार्ट डिवाइस प्रमुख रहे। प्रो. लिन ने छात्रों को शोध एवं नवाचार में अग्रसर होने और अंतरराष्ट्रीय सहयोग की दिशा में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि "नैनोमैटेरियल्स आने वाले कल की खोजों की आधारशिला हैं और युवा शोधकर्ता अपनी सृजनशीलता से मानवता के लिए नई संभावनाएँ खोल सकते हैं।" निदेशक प्रो. (डॉ.) मणिकांत पासवान ने इस आयोजन की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे वैश्विक सहयोग छात्रों को अंतरराष्ट्रीय शोध मानकों से जोड़ते हैं और उनकी वैज्ञानिक दृष्टि को विकसित करते हैं। उन्होंने कहा – स्लाइट में हम जिज्ञासा, सृजनशीलता और अनुसंधान-प्रधान सोच को प्रोत्साहित करते हैं। इस प्रकार के कार्यक्रम विद्यार्थियों को भविष्य की चुनौतियों से निपटने के लिए तैयार करते हैं। कार्यक्रम का समापन ई.सी.ई. विभाग के संकाय द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। यह आयोजन स्लाइट की शैक्षणिक उत्कृष्टता और वैश्विक सहयोग की दिशा में एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि सिद्ध हुआ, जिसने विद्यार्थियों को नैनोटेक्नोलॉजी की असीम संभावनाओं को खोजने के लिए प्रेरित किया।

फांसी के फंदे पर लटका मिला अधेड़ का शव।

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज

कासगंज। : सदर कोतवाली के नदरई गेट इलाके में एक अधेड़ का शव उसके ही घर में फांसी के फंदे पर लटका मिलने से इलाके में सनसनी फैल गई, सूचना पर पहुंची पुलिस ने अध्ययन के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है वहीं पुलिस के मुताबिक अधेड़ की मृत्यू तीन दिन पूर्व हुई बताई जा रही है।

बतादें कि मृतक का नाम 58 वर्षीय प्रदीप सक्सेना पुत्र प्रकाश चंद्र सक्सेना है, जोकि कासगंज कोतवाली के नदरई गेट स्थित चित्रगुप्त का रहने वाला है, परिजनों के अनुसार मृतक प्रदीप कासगंज कोतवाली क्षेत्र के अहरौली गांव में मेडिकल चलता था। परिजनों के अनुसार मृतक की पत्नी शोभा अपने पुत्र आयुष के साथ 4 दिन पूर्व दिल्ली आंखों का ऑपरेशन करने गई थी वहीं प्रदीप घर में अकेला था, परिजनों ने बताया कि प्रदीप पर बैंक का कुछ कर्ज था, जिसको लेकर में डिप्रेशन में रहता था और शराब का सेवन अधिक करता था, परिजनों के मुताबिक दो दिन पूर्व आयुष की अपने पिता प्रदीप से बात हुई थी, आज सुबह जब आयुष ने अपने पिता प्रदीप को फोन किया, तो फोन नहीं उठा, जिस पर उसने पड़ोसियों को कॉल करके अपने पिता से बात कराने की बात कही, जब प्रदीप ने पड़ोसियों द्वारा दरवाजा खटखटाया तो दरवाजा नहीं खुला, और घर के अंदर से बदबू आने पर पड़ोसियों ने इसकी सूचना पुलिस को दी।

सूचना पर पहुंची पुलिस ने दरवाजा तोड़कर अंदर जाकर देखा, तो प्रदीप अपने कमरे में फांसी के फंदे पर लटका हुआ था, वहीं पुलिस ने प्रदीप के शब्द को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और अग्रिम कार्रवाई में छूट गई है। पुलिस के मुताबिक प्रदीप की मृत्यु लगभग 3 दिन पूर्व हुई है वही प्रदीप की मौत से उसके घर में कोहराम मचा हुआ है।

मेंढकों के टर्राने से वनराज कभी राह नहीं बदला करते

सुशील कुमार 'नवीन'

आज लिखने का मन बना तो एक पुराना किस्सा याद हो आया। एक अकडू और अड़ियल परिवार रेलयात्रा कर रहा था। पति-पत्नी,बेटा-बेटी कुल चार सदस्य। टिकट चार थी। कब्जा छह सीट पर किए बैठे थे। कोई सरकने की कहता तो उलझ पड़ते। एक स्टेशन पर एक पहलवान रेल में सवार हुआ। उसने बैठने के लिए सीट मांगी तो परिवार के मुखिया ने आदतन पहलवान को झिड़क दिया। पहलवान को गुस्सा आया और उसने एक जोरदार मुक्का हेड ऑफ द फैमिली के मुंह पर जड़ दिया। मुक्का लगते ही हेड का सिर चकरा गया। शेष मेंबर देखते रह गए पर किसी की हिम्मत नहीं पड़ी कि पहलवान को कुछ कह दे।

पिटाई के शिकार बने हेड ने सोचा कि पहलवान से मुकाबला तो हो ही नहीं सकता। चुप रहा तो घर जाकर पत्नी मजाक उड़ाएगी कि बड़े हीरो बने फिरते हो। एक मुक्के ने सारी हीरोगिरी निकाल दी। हिम्मत जुटाई और पहलवान को ललकारा। ओ पहलवान! तुमने मेरे मारा, मैने सहन कर लिया। हिम्मत है तो मेरी पत्नी को मारकर दिखा। फिर बताता हूं। पत्नी कुछ कह पाती, इतनी देर में पहलवान ने उसके मुंह पर एक धर दिया। पत्नी के मुक्का लगते ही हेड चुप बैठ गया।

अब पत्नी ने सोचा कि पति तो चाल चल गया। बेटा तेरा जरूर मजाक उड़ाएगा कि पापा पर तो अकड़ दिखाती रहती हो। आज एक पहलवान ने तुम्हारी सारी अकड़ ढीली कर दी। दर्द को सहन करती हुई गुस्से में उसने पहलवान को ऐसे ललकारा मानो अब खैर नहीं। बोली- सुन ले पहलवान! तुमने मेरे पति को मारा, मैं चुप रही। मुझे मारा, चलो यहां तक भी चुप हूं। तुम इतने ही बड़े पहलवान हो तो मेरे बेटे को मारकर दिखाओ वो तेरा एक बार में हो कल्याण कर देगा।

अब बेटे का चेहरा देखने लायक था। समझ आ गया कि मम्मी ने उसे फंसा दिया। कुछ बोलता, इससे पहले पहलवान ने उसके भी मुक्का जड़ दिया। अब बिना मार खाए सिर्फ बहन बची थी। घर पर तो वह शेरनी बनी रहती है, पापा मम्मी से कई बार पिटवाया हुआ था। आज मौका मिल गया। पहलवान को ललकारा। पहलवान! ये मत समझना कि मेरे मम्मी-पापा को मारकर तुमने कोई बड़ी जंग जीत ली है। वे तो शरीफ हैं , पर मैं ऐसा नहीं हूं। तेरा इलाज पक्का होगा। इससे पहले तू मेरी शेरनी बहन को मारकर दिखा। एक झटके में तेरा काम न कर दें, तो फिर कहना। बहन कुछ समझ पाती इससे पहले एक मुक्का उसे भी जा लगा। अब चारों पिटाई के मामले में बराबर हो चुके थे। अब डिब्बे में सन्नाटा था।

पहलवान को सीट मिल गई। तीन-चार स्टेशन के बाद वह उतर गया। साइड की सीट पर बैठे बुजुर्ग ने हेड को कहा- भले मानस, तुम तो पिट लिए थे, ये सारे घर वाले क्यों पिटवाए। सीट पहले ही उसे दे देते। कम से कम इन्हें तो मार नहीं पड़ती। जवाब मिला कि बाबा! अगर मैं अकेला पिट जाता तो घर जाकर ये सब मेरा मजाक उड़ाते। अब अब पिट गए हैं तो कोई किसी का मजाक नहीं बनाएगा।

कुछ ऐसा ही इस बार एशिया कप में पाकिस्तान के साथ हुआ है। टीम की तो जलालत तीनों मैचों में हुई ही है,जाते जाते उनके बोर्ड मुखिया भी करवा गए। अब अब बराबर हो गए हैं कोई किसी को कुछ नहीं कहेगा। महाभारत में महात्मा विदुर ने कहा है-

कृते प्रतिकृतिं कुर्याद्विंसिते प्रतिहिंसितम्।
तत्र दोषं न पश्यामि शठे शाठ्यं समाचरेत॥

भाव है कि जो जैसा करता है, उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए। हिंसा करता है, तो हिंसा करनी चाहिए। यदि दुष्ट(शठ) के साथ दुष्टता(शठता) की जाए, तो इसमें कोई दोष नहीं माना जाता।

एशिया कप की शुरुआत से ही भारत इस बार पाकिस्तान के खिलाफ मुखर रहा है। टूर्नामेंट में खेलने या न खेलने पर भी अंतिम समय तक संशय था। न खेलते तो सीधा फायदा पाकिस्तान को होना था। जो भारत के हर क्रिकेट प्रेमी को नागवार गुजरता। इसलिए इस बार कुछ अलग ही खेल खेलना तय हुआ। उधर, एशिया कप की शुरुआत से पहले दूसरी तरफ से बयानबाजी जोरों पर थी, हम ये कर देंगे, वो कर देंगे। बुमराह की छह की छह गेंदों पर छक्के मारेंगे। हमारे आफरीदी के आगे बुमराह कुछ नहीं है। कप पर हमारा हक है। इसे हम हर हाल में जीतकर लौटेंगे। पर दावा भारत के साथ पहले ही मैच में फुस्स हो गया। जलालत में कोई कमी नहीं छोड़ी गई। न टॉस पर, न मैच के बाद पाकिस्तानी टीम से हाथ मिलाया गया। हाथ मिलाना तो दूर उनकी तरफ देखा तक भी नहीं गया। मिर्ची लगी तो शिकायत भी की गई, एशिया कप के बायकॉट करने के ड्रामे का भी भारतीय टीम पर कोई असर नहीं पड़ा। मैच में भी छेड़खानी का प्रयास किया तो बल्ले के साथ जुबान से जोरदार जवाब मिला। साथ ही पहले ही ये कह दिया गया था कि भारत एशिया कप जीतता है तो एसीसी और पीसीबी प्रमुख मोहसिन नकवी के हाथों ट्रॉफी स्वीकार नहीं करेगा।

फाइनल मैच जीतकर भारतीय टीम ने इस कथन को मात्र कथन न रखकर चरितार्थ भी करके दिखा दिया। पोडियम पर अन्य अतिथियों के हाथों मिलने वाले प्रत्येक सम्मान को इज्जत के साथ ग्रहण किया गया। नकवी इंतजार करते रहे। बार बार बुलाया जाता रहा पर भारतीय टीम अपने फैसले पर अड़ी रही। अंत में ट्रॉफी नकवी अपने साथ वापस ले गए। टीम ने बिना ट्रॉफी विक्ट्री सेलिब्रेशन किया।

अब सीधे मुद्दे पर आते हैं। भारतीय टीम कोई खैरात, मान मनौव्वल, सेटिंग या किसी छल प्रपंच से नहीं जीती है। हर एक मैच को केवल जीता नहीं है, उसे पूर्ण रूप से अपने अंदर आत्मसात किया है। भारत ने लगातार दस मैच जीते हैं और पाकिस्तान ने केवल चार। अंतराष्ट्रीय स्तर तक सबको पता था कि भारतीय टीम अंत तक अपने फैसले पर अड़ी रहने वाली है तो फिर धक्काशाही क्यों। बार-बार जलील होने की क्या जरूरत थी। टॉस पर हाथ नहीं मिलाया तो शिकायत, मैच जीतने के बाद हाथ नहीं मिलाया तो शिकायत। सीधी सी बात है मेंढकों के टर्राने से शेर कभी राह नहीं बदलते। अब चीखते रहो, चिल्लाते रहो।

सुशील कुमार 'नवीन', हिसार

ध्वनि प्रदूषण का गहराता संकट

विजय गर्ग

"भारत में ध्वनि प्रदूषण एक अदृश्य संकट के रूप में लगातार गहरा रहा है, जो न केवल मानव स्वास्थ्य, बल्कि जैव विविधता को भी प्रभावित कर रहा है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार, देश के प्रमुख महानगरों में दिन के समय ध्वनि स्तर औसतन 65–75 डेसिबल (ए) तक पहुंच जाता है जबकि रात में यह स्तर 55–65 डेसिबल (ए) तक बना रहता है, जो नींद, तनाव और हृदय पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। 'लांसेट' के एक अध्ययन में पाया गया है कि लगातार उच्च ध्वनि स्तर बीच रहने से हृदय से रोग का जोखिम बीस फीसद तक बढ़ जाता है तब नींद की का गुणवत्ता में तीस फीसद तक गिरावट आती है।

ध्वनि प्रदूषण पर अंकुश लगाने के लिए बड़े शहरों में निगरानी तंत्र स्थापित किए गए हैं। इसके बावजूद करोड़ों लोग अब भी ध्वनि प्रदूषण की गिरफ्त में हैं। इसका कारण पर्यावरण को लेकर शासन-प्रशासन का उदासीन रवैया और राजनीतिक इच्छाशक्ति का अभाव है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और पर्यावरण मंत्रालय की ओर से वर्ष 2011 में शुरू की गई 'नेशनल एंबिएंट नाइज मानिटरिंग नेटवर्क' ('(एनएएनएमएन) योजना का उद्देश्य शुरुआत में देश के सात प्रमुख महानगरों में सत्तर यांत्रिक तंत्र स्थापित कर ध्वनि प्रदूषण की वास्तविक समय में निगरानी करना था, ताकि आंकड़ों के आधार पर उचित नीतिगत हस्तक्षेप संभव हो सके। मगर धरातल पर इस योजना का कोई प्रभाव नजर नहीं आ रहा है।

इस योजना की की शुरुआत देश के सात शहरों में पैंतीस 'रियल टाइम मानिटरिंग स्टेशनों' के साथ हुई थी। योजना के दूसरे और तीसरे चरण में इसका विस्तार क्रमशः पैंतीस नए केंद्रों के साथ करने की बात कही गई थी, लेकिन वर्ष 2021-23 तक यह तंत्र केवल आठ शहरों तक ही पहुंच पाया। जिनमें दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, लखनऊ और बंगलुरु भी शामिल हैं। ।हालांकि, इसमें भी जमीनी हकीकत काफी अलग है। उत्तर प्रदेश राजधानी लखनऊ जैसे शहरों में यह प्रणाली एक निष्क्रिय 'डैशबोर्ड' तक 'तक सीमित रह गई, जहां न तो ध्वनि प्रदूषण के आंकड़े वास्तविक समय में दर्ज हो रहे हैं, 'आम नागरिकों को इसकी जानकारी है। न ही कोई ठोस नीतिगत कार्रवाई सामने आई है। जिन केंद्रों पर यह तंत्र ठीक से काम कर रहा है, वहां आंकड़ों का अध्ययन करने और उसके आधार पर नीति बनाने की पहल कम ही नजर आती है। इस योजना के तहत तीन प्रमुख शांत क्षेत्रों में दर्ज ध्वनि स्तर दिन में 65-70 डेसिबल (ए) तक पहुंच गया, जबकि विश्व स्वास्थ्य संगठन की ओर से निर्धारित सीमा 40-50 डेसिबल (ए) है। यानी यह तंत्र अपने मूल उद्देश्य और नीतिगत हस्तक्षेप की नींव तैयार करने में विफल रहा है।

"भारत में ध्वनि प्रदूषण एक अदृश्य संकट के रूप में लगातार गहरा रहा है, जो न केवल मानव स्वास्थ्य, बल्कि जैव विविधता को भी प्रभावित कर रहा है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार, देश के प्रमुख महानगरों में दिन के समय ध्वनि स्तर औसतन 65-75 डेसिबल (ए) तक पहुंच जाता है जबकि रात में यह स्तर 55-65 डेसिबल (ए) तक बना रहता है, जो नींद, तनाव और हृदय पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। 'लांसेट' के एक अध्ययन में पाया गया है कि लगातार उच्च ध्वनि स्तर बीच रहने से हृदय से रोग का जोखिम बीस फीसद तक बढ़ जाता है तब नींद की का गुणवत्ता में तीस फीसद तक गिरावट आती है। शहरी क्षेत्रों में रहने वाले लगभग चालीस करोड़ लोग प्रतिदिन सीमा से अधिक शोर के संपर्क में आते हैं।

ध्वनि प्रदूषण का प्रभाव केवल मानव तक सीमित नहीं है। भारतीय वन्यजीव संस्थान के एक शोध के मुताबिक, सामान्य मैना जैसे पक्षी शहरी शोर के कारण रात में बार-बार जागते हैं, जिससे उनके प्रजनन व्यवहार और सामाजिक संचार पर असर पड़ता है। उनके स्वरों की विशेषता कम हो जाती है, जिससे उनकी पहचान और जोड़ी बनाने की क्षमता प्रभावित होती है नीतिगत स्तर पर पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 1986 के तहत बना ध्वनि प्रदूषण (विनियमन और नियंत्रण) अधिनियम, 2000 मौजूद है, लेकिन इनका क्रियान्वयन बेहद कमजोर है। ध्वनि प्रदूषण अब केवल एक पर्यावरणीय मुद्दा नहीं, बल्कि एक स्वास्थ्य आपातकाल बनता जा रहा है, जिसे तत्काल नीति, निगरानी और जन-जागरूकता से जोड़ना आवश्यक है।

पर्यावरण मंत्रालय ने इस योजना को शहरों में ध्वनि प्रदूषण से निपटने के लिए एक निर्णायक कदम बताया था, लेकिन अब यह सवाल उठ रहा है कि केवल ध्वनि प्रदूषण के आंकड़ों के संकलन का क्या फायदा है, अगर वह जन जागरूकता और नीति निर्माण में तब्दील न हो। जब निगरानी केवल दर्ज करने तक सीमित रह जाए और कार्रवाई अनुपस्थित हो, तो साफ है कि यह तंत्र शोर की गूंज को तो दर्ज है, लेकिन समाधान की दिशा में मौन साध लेता है। शहरी ध्वनि प्रदूषण पर सरकारी निगरानी तंत्र अक्सर निष्क्रिय 'डैशबोर्ड' तक सीमित रह जाता है, जबकि वास्तविक हस्तक्षेप की की जरूरत जमीन पर पर है। यूरोप में किए गए एक अध्ययन के अनुसार, ध्वनि प्रदूषण लाखों लोगों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को को प्रभावित कर रहा है, जिससे उच्च रक्तचाप, हृदय रोग और नींद संबंधी विकार बढ़ रहे हैं।

हाल में राष्ट्रीय हरित अधिकरण की पुर्ण पीठ पीठ ने 'साइलेंस जोन' में लाउडस्पीकर और सार्वजनिक उद्घोष प्रणालियों के उपयोग पर रोक लगाई थी। अधिकरण ने पुलिस और राज्य सरकार को निर्देशित किया कि शैक्षिक संस्थानों, अस्पतालों और न्यायालयों के आसपास के क्षेत्रों में 'साइलेंस जोन' की ' पहचान और नियमों का पालन सुनिश्चित किया जाए। इसी पृष्ठभूमि में नवाचारों का महत्त्व औ बढ़ जाता है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा वित्तपोषित और डीपीआइआइटी में नवउद्यम 'वाईहाक' पारंपरिक निगरानी से अलग एक नागरिक केंद्रित दृष्टिकोण अपनाता है। इसने एक आइओटी हार्डवेयर विकसित किया है, जिसे अभी तक छह शहरों में वाहनों के हार्न सर्किट में स्थापित किया जा चुका है। यह उपकरण वास्तविक समय में हार्न बजाने की समय- सीमा, स्थान, अवधि, स्वरूप (लघु, दीर्घ, बहु-हार्न) और वाहन की गति जैसे आंकड़ों के साथ-साथ चालक की आयु, शिक्षा, अनुभव और हा की। डेसिबल क्षमता जैसे आंकड़े भी दर्ज करता है। जून, 2022 आईओटी ने सरकार और निजी संस्थाओं के साथ मिल कर नौ परियोजनाएं पूरी की हैं, जिनमें सौ से अधिक वाहनों से बत्तीस लाख से अधिक आंकड़े एकत्र किए गए हैं।

जब सरकारी तंत्र अपारदर्शी बना रहता है, तब नवउद्यम 'वाईहाक' वाहनों के शोर को दर्ज करता है, इससे न केवल नीति निर्माण को दिशा मिलती है, बल्कि यह व्यवहार परिवर्तन और सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए भी एक ठोस आधार तैयार करता है। भारत के शहरी क्षेत्रों में ध्वनि प्रदूषण दशकों से निर्धारित मानकों से ऊपर बना हुआ है, जो नागरिकों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर गंभीर असर डाल रहा है। यह केवल मानव जीवन तक सीमित नहीं है; शहरी शोर पक्षियों की नींद और प्रजनन व्यवहार को भी प्रभावित कर रहा है, जिससे पारिस्थितिकी संतुलन । बाधित हो रहा है। । यह चुनौती सीधे सतत विकास लक्ष्यों, विशेषकर स्वास्थ्य और सुरक्षित शहरों से जुड़ी है। वर्तमान निगरानी तंत्र अक्सर निष्क्रिय या अपारदर्शी बने रहते हैं। अगर कहीं निगरानी सक्रिय भी है, तो उसके आंकड़ों का इस्तेमाल नहीं हो रहा है। इसलिए आवश्यक है कि तकनीकी नवाचारों को प्रभावी नीति हस्तक्षेप, शहरी नियोजन सुधार और सामुदायिक जागरूकता के साथ जोड़ा जाए, ताकि शहरी जीवन को प्रदूषण के दबाव से छुटकारा मिल सके और विकास लक्ष्यों को पर्यावरण के अनुकूल ठोस और सही दिशा मिल सके।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

संपादकीय

चिंतन-मनन

शब्दों के पार: अनुवादक, भावनाओं और संस्कृतियों के संरक्षक

अनुवाद एक ऐसी कला है, जो शब्दों को नहीं, बल्कि आत्माओं को एकाकार करती है। यह महज एक भाषा से दूसरी भाषा में शब्दों का हस्तांतरण नहीं, बल्कि विचारों, भावनाओं और संस्कृतियों को उनकी मूल गहराई के साथ दूसरी दुनिया तक पहुंचाने का पवित्र प्रयास है। हर साल 30 सितंबर को मनाया जाने वाला अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस इस कला की महत्ता को रेखांकित करता है और हमें इसे संजोने का अवसर प्रदान करता है। यह दिन उन अनाम नायकों को सम्मानित करने का पर्व है, जो भाषा की दीवारों को तोड़कर मानवता को एकता के सूत्र में बांधते हैं। यह न केवल अनुवादकों का उत्सव है, बल्कि उन सभी की गाथा है, जो भाषा के माध्यम से विश्व को अधिक संवेदनशील और समावेशी बनाने में योगदान देते हैं।

अनुवाद का इतिहास मानव सभ्यता जितना ही प्राचीन है। प्राचीन काल से ही लोग संवाद की खाई को पाटने के लिए अनुवाद का सहारा लेते आए हैं। चौथी शताब्दी में संत जेरोम ने बाइबिल का लैटिन में अनुवाद कर 'वुल्गेट' की रचना की, जो न केवल धार्मिक, बल्कि सांस्कृतिक और भाषाई एकीकरण की आधारशिला बनी। आज अनुवाद का दायरा धार्मिक या साहित्यिक ग्रंथों से कहीं आगे निकल चुका है। यह वैश्वीकरण, शिक्षा, विज्ञान, व्यापार और मानवीय रिश्तों की नींव बन गया है, जो दुनिया को एक साझा मंच पर लाता है।

यदि अनुवाद न होता, तो क्या उपनिषदों और भगवद्गीता जैसे भारतीय ग्रंथ विश्व मंच पर अपनी अमिट छाप छोड़ पाते? क्या रवींद्रनाथ टैगोर की कविताएं या प्रेमचंद की कहानियां वैश्विक साहित्य का अभिन्न हिस्सा बन पातीं? अनुवाद ने न केवल भारतीय साहित्य को विश्व तक पहुंचाया, बल्कि शेक्सपियर, दोस्तोयेव्स्की और गाब्रियल गार्सिया मार्केज जैसे साहित्यकारों को भारतीय पाठकों के दिलों तक लाया। यह एक ऐसा सेतु है, जो विचारों और भावनाओं का निर्बाध आदान-प्रदान करता है। अनुवादक इस सेतु के कुशल शिल्पकार हैं, जो प्रत्येक शब्द और भाव को इस तरह तराशते हैं कि वह नई भाषा में अपनी मूल आत्मा के साथ जीवंत हो उठता है।

अनुवाद एक ऐसी कला है, जो शब्दों को नहीं, बल्कि दिलों को जोड़ती है। यह केवल शब्दों का एक भाषा से दूसरी में रूपांतरण नहीं, बल्कि संस्कृतियों, भावनाओं और इतिहास को उनकी मूल संवेदनशीलता के साथ जीवंत करने का सृजनात्मक प्रयास है। उदाहरण के लिए, हिंदी का शब्द "आत्मीयता" अपने आप में एक गहरे मानवीय बंधन का प्रतीक है, जिसे अंग्रेजी के "warmth" या "affection" जैसे शब्द पूरी तरह व्यक्त नहीं कर पाते। अनुवादक को न केवल दोनों भाषाओं का गहन ज्ञान चाहिए, बल्कि उसे संस्कृतियों की सूक्ष्म बारीकियों को समझकर यह तय करना होता है कि कब शाब्दिक अर्थ को प्राथमिकता देनी है और कब भावनात्मक गहराई को। यह एक तार पर चलने जैसा संतुलन है, जहां रचनात्मकता और सटीकता का मेल अनिवार्य है।

डिजिटल युग ने अनुवाद की भूमिका को और भी विस्तृत कर दिया है। मशीन अनुवाद और कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जैसे गूगल ट्रांसलेट, त्वरित अनुवाद तो प्रदान करते हैं, पर क्या वे किसी कविता की लय, साहित्य की गहराई, या लोककथा की आत्मा को पकड़ सकते हैं? नहीं। मशीनें शब्द बदल सकती हैं, लेकिन संस्कृति की बारीकियां, भावनाओं का प्रवाह, और मानवीय संवेदनाएं केवल एक मानव अनुवादक ही समझ सकता है। उदाहरण के लिए, तमिल कवि तिरुवल्लुवर के "तिरुक्कुरल" का अनुवाद करते समय, अनुवादक को भाषा के साथ-साथ तमिल दर्शन, नैतिकता और सांस्कृतिक गहराई को भी आत्मसात करना पड़ता है। यहीं मानव अनुवादक की अपरिहार्य भूमिका उभरती है।

अनुवाद केवल साहित्य तक सीमित नहीं, बल्कि यह विज्ञान, चिकित्सा, कानून और राजनीति जैसे क्षेत्रों में भी आधारशिला है। कोविड-19 महामारी के दौरान, विश्व स्वास्थ्य संगठन की सलाह को विभिन्न भाषाओं में अनुवादित कर अनुवादकों ने लाखों लोगों तक जीवनरक्षक जानकारी पहुंचाई। अंतरराष्ट्रीय समझौते, व्यापारिक अनुबंध, और वैज्ञानिक शोध पत्रों का अनुवाद वैश्विक सहयोग को सशक्त बनाता है। अनुवादक इन क्षेत्रों में एक अदृश्य, परन्तु अपरिहार्य शक्ति की तरह कार्य करते हैं, जो दुनिया को एकजुट रखते हैं। अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस हमें याद दिलाता है कि भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि एक पहचान, एक संस्कृति और एक दृष्टिकोण है। भारत जैसे बहुभाषी देश में, जहां 22 आधिकारिक भाषाएं और सैकड़ों बोलियां हैं, अनुवाद एकता का प्रतीक बन जाता है। जब एक बंगाली कहानी तेलुगु में, या एक मलयालम कविता पंजाबी में अनुवादित होती है, तो यह केवल शब्दों का आदान-प्रदान नहीं, बल्कि संस्कृतियों का हृदयस्पर्शी संवाद है। यह विविधता को न केवल समझने, बल्कि उसका उत्सव मनाने की प्रेरणा देता है। फिर भी, अनुवादकों को वह सम्मान अक्सर नहीं मिलता, जिसके वे सच्चे हकदार हैं। वे पर्दे के पीछे कार्य करते हैं, और उनके योगदान को प्रायः अनदेखा कर दिया जाता है। कितनी बार हम किसी अनुवादित पुस्तक को पढ़ते समय अनुवादक का नाम याद रखते हैं? अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस हमें इस ओर ध्यान देने को प्रेरित करता है। यह हमें हर अनुवादित पंक्ति के पीछे छिपी मेहनत, संवेदनशीलता और रचनात्मकता को पहचानने का आह्वान करता है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

तीखा राइट ऑफ रिप्लाई

सचिन त्रिपाठी

पिछले दिनों संयुक्त राष्ट्र महासभा के मंच पर पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज़ शरीफ़ के भाषण के जवाब में भारत की ओर से पेटल गहलोत ने जो तीखा उत्तर दिया, वह केवल एक कूटनीतिक पलटवार नहीं था बल्कि एक सावधानीपूर्वक तैयार किया गया सार्वजनिक-कूटनीतिक संदेश और राष्ट्रीय नैरेटिव को अंतरराष्ट्रीय मंच पर दृढ़ता से पेश करने की रणनीति भी था। पेटल गहलोत ने 'राइट ऑफ रिप्लाई' का प्रयोग करते हुए पाकिस्तान पर आतंकवाद को पनाह देने और घटनाओं को विकृत तरीके से प्रस्तुत करने का आरोप लगाया और कहा कि विवादों को दो-पक्षीय तरीके से सुलझाया जाना चाहिए. इससे भारत ने पारंपरिक बहस को स्पष्ट, संक्षिप्त और निर्णायक शब्दों में पेश किया।

तकनीकी रूप से देखें तो 'राइट ऑफ रिप्लाई' वाकई अदालती प्रक्रिया जैसा नहीं बल्कि सार्वजनिक कूटनीति का एक औज़ार है, सीमित समय में प्रभावी, संदेश-केन्द्रित और दर्शकों के समक्ष तर्क प्रस्तुत करने का माध्यम। गहलोत का अंदाज़ सधे हुए आक्रामकपन का था जिसकी सबसे चर्चित पंक्ति रही कि यदि "टूटा हुआ रनवे और जला हुआ हैंगर विजय है" तो पाकिस्तान उसे एन्जॉय कर सकता है. यह व्यंग्यपूर्ण तंज न केवल आक्षेप को खारिज करता है बल्कि विपक्षी दावे की हास्यास्पदता भी उजागर करता है। इस तरह के शब्दजन्य प्रयोग से संदेश सरल, यादगार और मीडिया-फ्रेंडली बन जाता है।

राजनीतिक मायने में गहलोत का उत्तर तीन स्तरों पर प्रभावी था। पहला, यह भारत की उस लम्बे समय से चली आ रही रणनीति को दोहराता है कि हिंसा और आतंक से जुड़े मसलों को लेकर पाकिस्तान को जवाबदेह ठहराया जाए और विश्व समुदाय के समक्ष सबूत-आधारित कथन रखे जाएँ। दूसरा, यह संदेश था कि संवेदनशील द्विपक्षीय मामलों को बहुपक्षीय मंचों पर भड़काने वाले दावों को भारत नकारता है — यानी दोनों पक्षों के लिए "बिलेट्रलिज़्म" पर ज़ोर। तीसरा, यह घरेलू दर्शकों के लिये भी संकेत है कि अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत अपनी रेखा स्पष्ट, आत्मविश्वासी और संगठित तरीके से रखता है। इन बिंदुओं को कई प्रमुख समाचार रिपोर्टों ने उद्धृत किया है।

पेटल गहलोत का व्यक्तित्व और पृष्ठभूमि भी इस पल को खास बनाती है। वे पेशेवर कूटनीतिज्ञ हैं जिनका करियर विदेश मंत्रालय और भारत के स्थायी मिशन, यूएन में रहा है. उनकी भाषा-कुशलता, शैक्षिक योग्यता और बहु-संस्कृति अनुभव ने संभवतः तेज, तराशा हुआ और प्रमाणिक जवाब देने में मदद की। इस तरह के युवा, बहुभाषी और बहु-आयामी प्रतिनिधि अंतरराष्ट्रीय बेंचमार्क पर देश की छवि को आधुनिक और गतिशील दिखाते हैं।

दिलचस्प रूप से, उसी दिन सोशल मीडिया पर उनका एक पुराना वीडियो भी वायरल हुआ जिसमें वे गिटार बजाती और गाती दिखती हैं। यह वायरल होना एक तरह से युद्ध-कूटनीति और मानविकता के बीच का सेतु दिखाता है. औपचारिक और तीखे कूटनीतिक पलों के पीछे एक सामान्य, सृजनात्मक इंसान का चेहरा भी मौजूद है। मीडिया-सर्कुलेशन ने इस 'ह्यूमनाइज़िंग' तत्व को बढ़ाया जिससे गहलोत का वक्तव्य न सिर्फ दलील के रूप में बल्कि व्यक्तित्व-कहानी के रूप में भी प्रसारित हुआ। इसका नतीजा यह हुआ कि संदेश का पहुंच-विकिरण private और public दोनों ही दर्शक समूहों में बढ़ा।

फिर भी, यह साबुत सन्देश निहितार्थों के बिना नहीं है। यूनाइटेड नेशंस जैसी बहुपक्षीय सभाओं में तीखा भाषण अंतरराष्ट्रीय समर्थन जुटाने का त्वरित तरीका हो सकता है पर व्यवहारिक स्तर पर इससे सीमाओं, सामरिक फैसलों या दोनों देशों के बीच दीर्घकालीन जलवायु में तुरंत बदलाव नहीं आता। इसका वास्तविक महत्व 'नैरेटिव-वॉर' में है: किस देश ने किस बात को विश्व स्तर पर अधिक भरोसेमंद तरीके से पेश किया। ऐसे मौके दोनों पक्षों के लिए कूटनीतिक रूप से खतरनाक भी बन सकते हैं—क्योंकि भाषणों के बाद जनता एवं मीडिया का दबाव राजनैतिक हस्तक्षेपों को तेज कर सकता है।

भारत में ग्रामीण शिक्षा : विजय गर्ग

शिक्षा व्यापक दुनिया का द्वार है। शिक्षा हमें जीवन के प्रति बेहतर दृष्टिकोण प्रदान करती है तथा ग्रामीण भारत के बच्चों के लिए यह दरवाज़ा किस हद तक खोलने में सक्षम हुई है, इसके बिना ग्रामीण बुनियादी ढांचे का खुलासा अधूरा है। शिक्षा, जैसा कि हम सभी जानते हैं, बहुत महत्वपूर्ण है। शिक्षा न केवल व्यावसायिक उद्देश्य के लिए बल्कि व्यक्तियों की मानसिक वृद्धि के लिए भी आवश्यक है। उचित शिक्षा के बिना, आज की आधुनिक दुनिया में जीवित रहना बहुत कठिन है। यह एक तथ्य है कि अधिकांश भारतीय लोग अभी भी गांवों में रहते हैं और इसलिए भारत में ग्रामीण शिक्षा का विषय अत्यंत महत्वपूर्ण है। ग्रामीण लोगों के बीच शिक्षा के लिए सरकार कई प्रावधान प्रदान कर रही है। हालांकि, बड़ा सवाल यह है कि क्या ग्रामीण भारतीय शिक्षा की प्रगति का मूल्यांकन करने के लिए नामांकन और उपस्थिति सही पैरामीटर है तथा इस तथ्य पर विचार करना आवश्यक है कि संख्याओं की खोज में शिक्षा की गुणवत्ता को नजरअंदाज नहीं किया जा रहा है।

इन दिनों चिंता का मुख्य विषय नामांकन आंकड़े नहीं हैं, बल्कि ग्रामीण भारत में दी गई शिक्षा की गुणवत्ता है। शिक्षा की वार्षिक स्थिति रिपोर्ट (एएसईआर) नामक सर्वेक्षण से पता चलता है कि स्कूलों में पढ़ने वाले ग्रामीण छात्रों की संख्या बढ़ती जा रही है, लेकिन पांचवीं कक्षा के आधे से अधिक छात्र द्वितीय श्रेणी की पाठ्यपुस्तक नहीं पढ़ सकते हैं और सरल गणित संबंधी समस्याओं को हल करने में असमर्थ हैं तथा सामान्य जागरूकता शून्य थी। और जोड़ने के लिए, अंग्रेजी तथा हिंदी दोनों भाषाओं में गणित का स्तर और भी कम हो रहा है जो स्पष्ट रूप से हमारी ग्रामीण शिक्षा का स्तर दर्शाता है। यद्यपि कई अन्य सर्वेक्षण सरकारी तथा गैर-सरकारी समूहों द्वारा भी किए जाते हैं, लेकिन परिणाम समान पाए गए। हालांकि सरकार द्वारा प्रयास किए जा रहे हैं, लेकिन समस्या यह है कि वे सही दिशा में नहीं हैं। ऐसे व्यवहार के कारण कई हैं। शिक्षकों की खराब उपस्थिति, बुनियादी ढांचे का अभाव तथा सरकारी शिक्षकों की रुचि ग्रामीण स्तर पर गरीब शिक्षा के कारणों में से एक है।

शिक्षा और ग्रामीण भारत बाकी भारत की तुलना में शिक्षा के स्तर और शैक्षिक अवसरों में बहुत अंतर है। यह कहना गलत नहीं होगा कि ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक भी स्तर की शिक्षा से कम चिंतित हैं। यह ऐसा नहीं है कि हमारे शहरों और गांवों के बच्चों को अलग-अलग चीजें सिखाई जाती हैं। पाठ्यक्रम स्पष्ट रूप से एक ही मानक का होना चाहिए। लेकिन समस्या यह है कि भारत में औपचारिक शिक्षा की अवधारणा शुरू होने के समय से ही इन क्षेत्रों में शिक्षा का स्तर नजरअंदाज कर दिया गया था। और यह लापरवाही अभी भी प्रचलित है और ग्रामीण भारत में शिक्षकों को कोई सुधार करने की चिंता नहीं होती। यह पहचानना बुद्धिमानी होगी कि विभिन्न संदर्भों ने अलग-अलग अंतर्निहित कौशल और क्षमताओं को बढ़ावा दिया है। ग्रामीण बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा में अलग-अलग कौशल पर जोर दिया गया होगा। चूंकि उनका पालन-पोषण शहरी बच्चों से बहुत अलग है,

इसलिए ग्रामीण और शहरी बच्चों की क्षमताओं की तुलना करना वास्तव में अनुचित होगा। मूलतः, मुद्दा यह है कि इन ग्रामीण बच्चों को एक अलग गुणवत्ता बेसलाइन से शुरुआत करनी होगी।

न केवल छात्र और उनकी सामान्य क्षमताएं, बल्कि शैक्षिक वातावरण भी बहुत भिन्न होता है। अवसरों के संदर्भ में बहुत अंतर है; बुनियादी ढांचा तथा मानसिकता। कई ग्रामीण स्कूलों में कम मजबूत इमारतें हैं, मौसमी भिन्नताओं के साथ पहुंच में समस्याएं होती हैं और यहां तक कि यदि उनके पास अच्छे शिक्षक हों तो भी ज्ञान केंद्रों की एक श्रृंखला तक पहुंच कम होती है। ये समस्याएं ऐसी नहीं हैं जिन्हें हम नहीं जानते। हमारे ग्रामीण स्कूलों में इनमें से अधिकांश समस्याएं अच्छी तरह ज्ञात हैं। हर कोई जानता है कि अपर्याप्त बुनियादी ढांचे जैसी कुछ मूलभूत समस्याएं - ठोस दीवारें और छत जो लीक नहीं होती हैं, ग्रामीण छात्रों के लिए एक दूर का सपना है। अधिकांश में शौचालय या विश्वसनीय बिजली नहीं है। शिक्षण उपकरण मूलभूत ब्लैकबोर्ड और क्रिट तक ही सीमित है, तथा पाठ्यपुस्तक हमेशा समय पर छात्रों तक नहीं पहुंचते। ये सभी कारण हैं जो ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के निम्न स्तर के कुछ कारण हैं। ग्रामीण भारत में शिक्षा के स्तर को लगातार घटाने के लिए कई अन्य कारण भी हैं। हमारे ग्रामीण सरकारी स्कूलों में एक तिहाई से अधिक के पास पूरे विद्यालय के लिए एक शिक्षक है। इसका मतलब यह है कि यदि शिक्षक बीमार या अनुपस्थित हैं तो स्कूल बंद हो जाता है। इसका मतलब यह भी है कि प्रत्येक कक्षा न केवल एक बहु-क्षमता वर्ग होती है, बल्कि हर कक्षा में ऐसे छात्र होते हैं जिन्हें विभिन्न पाठ्यपुस्तकों के साथ अलग-अलग ग्रेड/मानक में अध्ययन करना होता है।

ग्रामीण भारत और सरकार भारत में चीन के बाद दूसरी सबसे बड़ी शिक्षा प्रणाली है। भारत ने शिक्षा को जनता के बीच सामाजिक परिवर्तन लाने का सबसे अच्छा तरीका माना। 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त करने के तुरंत बाद, शिक्षा को सभी लोगों तक पहुंचाना सरकार की प्राथमिकता बन गई थी और देश में ग्रामीण तथा शहरी दोनों क्षेत्रों में शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए विभिन्न योजनाएं शुरू की गईं। सरकार ने देश के शिक्षा मानकों को बढ़ाने के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने का अधिकार अधिनियम (आरटीई) तैयार किया। सरकार देश में शिक्षा के कारण को लेकर बहुत गंभीर है, लेकिन फिर भी रास्ते में कई बाधाएं हैं।

कुछ असफलताओं के बावजूद, ग्रामीण शिक्षा कार्यक्रम 1950 के दशक में भी निजी संस्थानों की सहायता से जारी रहे। गांधी ग्राम ग्रामीण संस्थान की स्थापना और भारत में 200 सामुदायिक विकास ब्लॉक स्थापित होने के समय ग्रामीण शिक्षा का एक बड़ा नेटवर्क स्थापित किया गया था। नर्सरी स्कूल, प्राथमिक विद्यालय, माध्यमिक विद्यालय और महिलाओं के लिए वयस्क शिक्षा के लिए स्कूल स्थापित किए गए। हमारी 50% से अधिक आबादी अभी भी ग्रामीण क्षेत्र के अंतर्गत आती है और हमारी सरकार उनकी उन्नति को लेकर बहुत गंभीर है। सरकार ग्रामीण शिक्षा को एक एजेंडा के रूप में देखती रही जो नौकरशाही पिछड़ेपन और सामान्य स्थिरता से अपेक्षाकृत मुक्त हो सकती है। हालांकि, कुछ मामलों में वित्तपोषण की कमी से भारत के ग्रामीण शिक्षा संस्थानों द्वारा प्राप्त लाभ संतुलित हो गए।

ग्रामीण विकास योजना के अंतर्गत कई कार्यक्रम और स्कूल आए। शिक्षा मंत्रालय प्रतिदिन इस समस्या से निपटने के लिए नए और अभिनव विचार लेकर आ रहा है, जिनमें से कुछ सही हैं जबकि उनमें से कुछ भारत के गरीबों में स्वीकार्य नहीं पाए गए और सरकार द्वारा किए गए निवेश कभी-कभी कम परिणाम दिए। आज सरकारी ग्रामीण स्कूलों में धन की कमी है। ग्रामीण विकास फाउंडेशन (हाइडराबाद) जैसी कई नींव उच्च गुणवत्ता वाले ग्रामीण स्कूलों का सक्रिय रूप से निर्माण करती हैं, लेकिन सेवा देने वाले छात्रों की संख्या कम है। आज समस्या से निपटने के लिए कुछ जागरूकता और सशक्तिकरण लाने की आवश्यकता है। सरकार अपनी ओर से काम कर रही है, और अब सरकार द्वारा खर्च किए जा रहे संसाधनों का प्रभावी उपयोग सुनिश्चित करने की आवश्यकता है तथा इसके लिए जागरूकता आवश्यक है।

समस्या से निपटने के तरीके भारत सरकार, साथ ही राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की सरकारें कई दशकों से इन क्षेत्रों में प्राथमिक शिक्षा के लिए पर्याप्त ग्रामीण शिक्षा बुनियादी ढांचे स्थापित करने का प्रयास कर रही हैं। सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न आंगनवाड़ी केंद्र भी बनाए हैं। जैसा कि हमने पहले चर्चा की थी, अधिकांश सरकारी स्कूलों में मजबूत स्कूल भवन, कक्षाएं, ब्लैकबोर्ड, प्रभावी ढंग से बैठने और अपने शिक्षकों को सुनने के लिए उचित बेंच, पेयजल, मनोरंजन और अन्य अवकाश सुविधाओं के लिए खेल स्थल, शौचालय सुविधाएँ, विद्यालय परिसर की सफाई आदि जैसी बुनियादी संरचना नहीं है। उदाहरण के लिए, कठोर ब्लैकबोर्ड कुछ कुशल शिक्षकों को भी इस पर कुछ लिखने के लिए प्रोत्साहित नहीं करता। इससे शिक्षकों को कुछ महत्वपूर्ण चित्रों और इसलिए केवल मौखिक शिक्षण से बचने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। इससे छात्रों के लिए ज्ञान का स्तर कम हो जाएगा।

कुछ गंभीर सुधारों की आवश्यकता है। इस समय की आवश्यकता बुनियादी लेकिन सबसे महत्वपूर्ण सुविधाओं में तुरंत सुधार करना है। अधिकांश सरकारी स्कूलों में शिक्षकों और अन्य प्रशासनिक कर्मचारियों के बीच जवाबदेही की कमी है। शिक्षक अपने काम में नियमित नहीं होते, साथ ही जब वे आते हैं तो वे ईमानदारी से अपना काम करने के मूड में भी नहीं रहते। स्कूल प्रशासनिक कर्मचारियों और शिक्षकों के बीच मित्रता शिक्षा के कई पहलुओं की लापरवाही के लिए जिम्मेदार है। यह इस तथ्य से स्पष्ट है कि पिछले कुछ वर्षों में निजी स्कूल कई परीक्षा परिणामों में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं। कुछ स्कूलों में भी जवाबदेही और पारदर्शिता की कमी के कारण लेखा विभाग में भ्रष्टाचार प्रचलित है। कई शिक्षक और अन्य कर्मचारी भी आलसी हैं। इस प्रकार इन सभी गलत प्रथाओं के अंतिम पीड़ित निर्दोष बच्चे हैं जो जीवन में उत्कृष्ट बनना चाहते हैं। शिक्षा मंत्रालय को स्कूलों में नियमित जांच करने के साथ-साथ आश्चर्यचकित निरीक्षण करना चाहिए कि क्या सब कुछ ठीक चल रहा है। इसके अलावा, छात्रों से शिक्षकों की प्रतिक्रिया मांगनी चाहिए और स्कूल के परिणाम को ध्यान में रखते हुए विभिन्न विद्यालयों और क्षेत्र प्रमुखों के बीच नियमित बैठक होनी चाहिए जो किसी विशेष क्षेत्र में शिक्षा योजनाओं का ध्यान रखती हैं।

शिक्षकों को स्कूलों के निदेशकों की सहायता और परामर्श से बच्चों को प्रेरित करना चाहिए। स्कूलों में छोड़ने की दर को कम करने के लिए बहुत प्रचारित मध्याह्न भोजन योजना अपेक्षित परिणाम नहीं दे रही है। यह योजना के लिए निर्धारित धन का दुरुपयोग, खराब प्रबंधन, कार्यान्वयन अधिकारियों में गंभीरता की कमी, धन हस्तांतरण, गरीब बच्चों के माता-पिता के बीच जागरूकता की कमी आदि के कारण है। कुछ रिपोर्टों के अनुसार, परोसे जाने वाले भोजन की गुणवत्ता कम है। सरकार द्वारा उनकी योजनाओं और कार्यक्रमों के बारे में उचित जागरूकता होनी चाहिए। सभी लाभार्थियों को अपने अधिकारों के बारे में उचित जानकारी होनी चाहिए। इसलिए आज की आवश्यकता हमारे देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए लोगों में जागरूकता और प्रेरणा पैदा करना है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

"बदला हुआ भारत: क्रिकेट और आत्मसम्मान का नया अध्याय"

"एशिया कप 2025 के फाइनल में भारत का रुख़ और खेल के मैदान से परे राष्ट्रीय गौरव की झलक"

एशिया कप 2025 का फाइनल केवल क्रिकेट का खेल नहीं था। भारत ने पाकिस्तान को हराने के साथ ही ट्रॉफी स्वीकार करने से इनकार कर दिया, क्योंकि पुरस्कार देने वाला पाकिस्तान का प्रतिनिधि था। इससे प्रस्तुति समारोह घंटों तक लंबित रहा। इस कदम ने केवल खेल में जीत नहीं दिखाई, बल्कि राष्ट्रीय आत्मसम्मान और राजनीतिक संदेश भी स्पष्ट किया। समर्थक इसे "नए भारत" की शक्ति और साहस मानते हैं, जबकि आलोचक खेल भावना पर चोट मानते हैं। यह घटना भारतीय क्रिकेट के इतिहास में एक यादगार मोड़ है, जो खेल, राजनीति और राष्ट्रीय गौरव को जोड़ती है।

- डॉ. प्रियंका सौरभ

एशिया कप 2025 का अंतिम मुकाबला केवल क्रिकेट का रोमांचक खेल नहीं था। यह खेल से कहीं अधिक एक कूटनीतिक और सांस्कृतिक संदेश बनकर उभरा। भारत ने पाकिस्तान को न सिर्फ़ मैदान पर हराया बल्कि मैच के बाद की औपचारिकताओं में भी ऐसा रुख़ अपनाया जिसने पूरी दुनिया का ध्यान खींच लिया। भारतीय खिलाड़ियों ने एशियाई क्रिकेट परिषद के अध्यक्ष, जो पाकिस्तान से हैं, से ट्रॉफी स्वीकार करने से साफ़ इनकार कर दिया। परिणाम यह हुआ कि पुरस्कार वितरण समारोह घंटों तक खिंचता रहा और अंततः अधूरा रह गया। यह घटना भारतीय क्रिकेट के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ है। सवाल केवल इतना नहीं है कि ट्रॉफी किसने थामी, बल्कि यह कि भारत ने यह कदम क्यों उठाया और इसके परिणाम क्या हैं।

क्रिकेट को अक्सर ₹जेंटलमैन का खेल₹ कहा जाता है, लेकिन भारत और पाकिस्तान के संदर्भ में यह खेल कभी केवल खेल नहीं रहा। यह दोनों देशों के बीच राजनीतिक तनाव, सांस्कृतिक टकराव और राष्ट्रीय पहचान का प्रतीक बन चुका है। जब भारतीय खिलाड़ियों ने ट्रॉफी लेने से इनकार किया, तो यह स्पष्ट संदेश था कि मैदान की जीत से आगे बढ़कर भारत अपने आत्मसम्मान को सर्वोपरि मानता है। एक तरह से यह "खेल और कूटनीति का उल्टा रूप" था। जहाँ खेल को आमतौर पर राजनीति को नरम करने का साधन माना जाता है, वहीं भारत ने खेल का मंच उपयोग करके राजनीतिक संदेश दिया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में बार-बार यह दावा किया गया है कि भारत अब झुकता नहीं, बल्कि अपनी शर्तें तय करता है। इस संदर्भ में टीम इंडिया का रुख़ उसी मानसिकता का विस्तार माना जा रहा है। भारत के लिए ट्रॉफी लेना केवल एक औपचारिकता था, लेकिन जब देने वाला वही देश हो जिससे लगातार आतंकवाद, घुसपैठ और सीमा पर तनाव चलता रहा है, तो उस औपचारिकता का महत्व बदल जाता है। यह नया भारत केवल आर्थिक और सैन्य शक्ति की भाषा में नहीं बोलता, बल्कि खेल के मंच पर भी राजनीतिक संदेश देने में पीछे नहीं है। इसके साथ ही घरेलू राजनीति में भी इस घटना का गहरा असर पड़ा। समर्थक वर्ग इसे मोदी युग का साहसिक कदम बता रहा है, जबकि विपक्ष इसे खेल भावना पर चोट मानता है। हालांकि जनता में इसे व्यापक रूप से आत्मगौरव की जीत के रूप में देखा गया।

हर साहसिक कदम के साथ आलोचना भी जुड़ती है। भारत के इस रुख़ को लेकर कई सवाल उठे। आलोचकों का कहना है कि क्रिकेट का मूल उद्देश्य देशों के बीच दोस्ती और सौहार्द बढ़ाना है। जब आप ट्रॉफी लेने से इनकार करते हैं, तो आप खेल की आत्मा पर चोट करते हैं। अंतरराष्ट्रीय मीडिया ने इस घटना पर मिला-जुला रुख़ अपनाया। कुछ ने इसे भारत की "दबदबा दिखाने की नीति" कहा, तो कुछ ने इसे "अहंकार" बताया। सवाल यह है कि क्या इससे भारत की "नरम शक्ति" को नुकसान होगा। साथ ही यह भी बहस छिड़ी कि क्या खिलाड़ियों ने यह कदम अपनी इच्छा से उठाया या बोर्ड और सरकार के दबाव में? अगर खिलाड़ी राजनीतिक निर्णयों में केवल मोहरे बन जाएँ, तो उनकी स्वतंत्रता और खेल की पवित्रता पर सवाल उठना स्वाभाविक है।

भारत और पाकिस्तान के क्रिकेट में विवाद कोई नई बात नहीं है। 1987 में जब पाकिस्तान के राष्ट्रपति जयपुर टेस्ट देखने आए थे, तब इसे "क्रिकेट कूटनीति" कहा गया। 1999 में कारगिल युद्ध से पहले चेन्नई टेस्ट में पाकिस्तान की जीत और उसके बाद की राजनीतिक हलचल को भी आज तक याद किया जाता है। 2008 में मुंबई हमलों के बाद भारत ने पाकिस्तान के साथ द्विपक्षीय श्रृंखला हमेशा के लिए रोक दी। 2023 में एशिया कप को लेकर स्थान विवाद खड़ा हुआ, जहाँ भारत ने पाकिस्तान जाने से इनकार कर दिया और अंततः प्रतियोगिता "संयुक्त रूप" में आयोजित हुई। इन घटनाओं की पृष्ठभूमि में देखें तो 2025 की घटना कोई अलग-थलग घटना नहीं, बल्कि उसी लंबे सिलसिले का हिस्सा है जहाँ क्रिकेट हमेशा राजनीति के साए में खेला गया।

इस घटना के दूरगामी परिणाम भी हो सकते हैं। एशियाई क्रिकेट परिषद का मुख्यालय भले ही दुबई में है, लेकिन पाकिस्तान लंबे समय से इसमें प्रभाव बढ़ाने की कोशिश करता रहा है। भारत ने यह स्पष्ट कर दिया कि उसकी सहमति के बिना कोई ढांचा नहीं चल सकता। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद तटस्थता का दावा करती है, लेकिन अगर बड़ी टीमों में से एक यानी भारत इस तरह के कदम उठाकर राजनीतिक संदेश देती है, तो परिषद को मजबूरी में अपना रुख़ तय करना होगा। बांग्लादेश, श्रीलंका और अफगानिस्तान जैसी टीमें इस खींचतान के बीच कहाँ खड़ी होंगी, यह भी देखने वाली बात है। भारत का दबाव इन्हें प्रभावित करेगा, लेकिन लंबे समय में यह क्षेत्रीय सहयोग को कमजोर कर सकता है।

भारत का यह रुख़ निश्चित रूप से "नए भारत" का प्रतीक है। यह भारत का वह चेहरा है जो आत्मगौरव को सर्वोपरि मानता है और औपचारिकता या परंपरा को उसके आगे झुका देता है। लेकिन इसी के साथ यह भी सच है कि खेल की आत्मा को राजनीति से बहुत अधिक जोड़ना कभी-कभी नुकसानदेह भी हो सकता है। क्या भारत ने सही किया? समर्थकों के लिए जवाब सीधा है — हाँ, क्योंकि यह आत्मसम्मान का सवाल था। आलोचकों के लिए जवाब है — नहीं, क्योंकि खेल का मंच राजनीति का अखाड़ा नहीं होना चाहिए।

असल सवाल यह है कि क्या क्रिकेट अब केवल क्रिकेट रहेगा या यह उपमहाद्वीप में हमेशा से राजनीति का विस्तार ही रहेगा। एशिया कप 2025 की यह घटना इस सवाल को और तीखा बना देती है। एक बात तय है — यह बदला हुआ भारत है। मैदान पर भी, मंच पर भी।

केवल राजाओं का राज्य ही नही मंत्रियों का कुर्सी तक छीन लेती दुर्गा की पर्याय मां पाउडी

झारखंड से लेकर मयूरभंज ओडिशा तक चर्चे का विषय हैं गढदेवी मां पाउडी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

सरायकेला , सिंहभूम की अधिष्ठात्री देवी कभी राजाओं को ही नहीं छोड़ा तो आज मंत्री सासंदों तक कैसे कुर्सी लुट लेती यह सरायकेला में देखा समझा जा सकता ।जिसकी एक घटना इन दिनों झारखंड, ओडिशा में चर्चे का विषय बना है ।

चार वर्ष पूर्व केंद्र व झारखंड सरकार के दो कद्दावर मंत्री केंद्रीय जनजातीय मंत्री अर्जुन मुंडा तथा झारखंड राज्य के आदिवासी कल्याण एवं परिवहन मंत्री चम्पई सोरेन साथ में पूर्व मुख्यमंत्री मधुकोड़ा की सांसद पत्नी गीता कोड़ा ने उस जगन्नाथ भूईयां की मां पाउडी देवी स्थल की जमीन पर जाकर एक सरकारी आवासीय विद्यालय का आधार शीला तो रख दिया पर आज तीनों की की कुर्सी चली गयी - इसे आप क्या कहेंगे मां दुर्गा पर्याय पाउडी की अभिशाप या भ्रम । जगन्नाथ भूईयां कौन थे , सरायकेला राज्य से उनका संबंध यहां घर घर की जुवां पर आज भी गुंजता आया है देवी का महान भक्त के रूप में ।

वीर जगन्नाथ भूईयां की उक्त जमीन पर बिहार झारखंड के एक विधायक अनंत राम टूडू रहते आये हैं , आज पूजा भी वही करते पाउडी की ।जबकी जगन्नाथ भूईयां जो कुचुंग पीढ के वीर जमींदार रहे उनकी इतिहास इस बात से जाना जा सकता है कि वे मां पाउडी देवी के अनन्य भक्तों में से अलग ऊंचे ओहदे के रहे हैं ।जिन्होने मयूरभंज महा राजा को भी हिला कर रखा था कभी , जब यह इलाका मां किचकेश्वरी का प्रदेश कुचूग के नाम से जाना जाता था । उनके जीवन अन्तिम की सच्चाई बेहद अफसोसजनक रही उनके समुदाय के लिए आज भी ।जिसे जीक्र करना यहां उचित नहीं होगा ।।

परन्तु नेताओं आजकल के अनेक हरकत व अधिकारियों की कार्यशैली जिसको लेकर सिंहभूम भूईयां समाज के अध्यक्ष परेश नायक ने भारत सरकार को अवगत भी कराया है। पुछा है संबंधित देवत्व जमीन पर सरकारी स्कूल कैसे बनाया गया। इतना ही नहीं जिस उपायुक्त अरवा राजकमल ने उक्त देवता की जमीन अधिग्रहण करवाई उनके न्यायालय में पूर्व विधायक अनंतराम ने दरवाजा खटखटाया था ।पर जिला के जमीन संबंधी मामले पर उपायुक्त , अनुमंडल पदाधिकारी , भूमि सुधार उपसमाहर्ता का न्यायलय वर्षों से किस प्रकार चलाता आया है तीनों सिंहभूम में यह उच्चस्तरीय जांच का विषय है न केवल झारखंड वल्कि बिहार सरकार के कार्यकाल के लिए भी केंद्र के लिए महत्वपूर्ण जांच पड़ताल का मामला है ।जहां अंचलों में अनेक खाता २ फाड़ कर फेंके जाते हों। अधिकारियों के मार्फत नेता दलाल तिजोरी भरते आये है परन्तु , सरायकेला की जमीन तथा शासन आदि का मामला सुप्रीम कोर्ट में अपना अस्तित्व बचाने हेतु प्रथम मामला के रूप में दर्ज होने का परिचय देता है ।यह भी भी ऊपर रूख कर सकता । इसकी देवस्य, धर्मस्य, राज , गौचर, जमीन अनेकों अधिकारियों द्वारा की गयी हेरा फेरी उन्हें ले डुबने में सक्षम है ।

ओड़िशा मे बड़ा रेल हादसा टला

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वरः सिग्नल नहीं मिला, शताब्दी एक्सप्रेस प्लेटफार्म से टकरा गई। स्टेशन मास्टर के लिए एक बड़ा हादसा टल गया। हादसे के लिए ज़िम्मेदार नहीं रहे दो लोको पायलटों को गिरफ्तार कर लिया गया। ऐसा ही एक नज़ारा रविवार शाम मारकोना रेलवे स्टेशन पर देखने को मिला। यह रेलवे स्टेशन एक बड़े हादसे से बच गया।हावड़ा से पुरी जाने वाली शताब्दी एक्सप्रेस ट्रेन को सर रेलवे स्टेशन पार करने के बाद मारकोना स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर दो से गुजरना था। लेकिन स्टेशन मास्टर के सिग्नल देने से पहले ही लोको पायलट ने तेज़ गति से आ रही ट्रेन को स्टेशन के अंदर धकेल दिया। हालाँकि, स्टेशन मास्टर द्वारा तुरंत ट्रेन को रोक देने से एक बड़ा हादसा टल गया। बताया जा रहा है कि इस घटना में दो लोको पायलटों को हिरासत में लिया गया है।

पुरी से आने वाली शताब्दी एक्सप्रेस और भुवनेश्वर से आने वाली जन शताब्दी एक्सप्रेस। कल हावड़ा से भुवनेश्वर आने वाली जन शताब्दी एक्सप्रेस शाम 5:35 बजे सर स्टेशन पहुँची। स्टेशन मास्टर ने शाम 5:46 बजे ट्रेन को स्टेशन से रवाना होने के लिए हरी झंडी दे दी। तभी अचानक, मुख्य लाइन पर हावड़ा से पुरी आ रही शताब्दी एक्सप्रेस स्टेशन के अंदर आ गई। यह ट्रेन लाल सिग्नल के बावजूद धीरे-धीरे स्टेशन परिसर के पास पहुँची। जन शताब्दी एक्सप्रेस, जिसे पहले हरी झंडी मिल चुकी थी, का सिग्नल स्थिति के कारण लाल हो गया। जब जन शताब्दी एक्सप्रेस ने अपनी यात्रा शुरू की, तो दोनों ट्रेनों का आपस में टकराना लगभग तय था। तभी, सूर स्टेशन मास्टर ने सिग्नल न मानने वाली हावड़ा-पुरी शताब्दी एक्सप्रेस को मारकोना स्टेशन पर रुकने की सूचना दी। भुवनेश्वर आ रही जन शताब्दी एक्सप्रेस को सूर स्टेशन पर रोक दिया गया। सिग्नल न मानने वाले शताब्दी एक्सप्रेस के लोको पायलट, सहायक लोको पायलट और गार्ड को तुरंत ड्यूटी से हटा दिया गया और एक नया स्टॉप तैनात किया गया। इसके बाद, दोनों ट्रेनों ने अपनी यात्रा शुरू की। ट्रेन निर्धारित समय से डेढ़ घंटे देरी से मारकोना रेलवे स्टेशन से रवाना हुई। रेलवे विभाग के वरिष्ठ अधिकारी मौके पर पहुँचे और तीनों कर्मचारियों से पूछताछ की और जाँच जारी रखी।

महिलाएं अब रात्रि पाली में काम करेंगी, राज्य मंत्रिमंडल ने लिया फैसला

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वरः श्रम क्षेत्र में बड़े सुधारों के उद्देश्य से, श्रम विभाग के दो महत्वपूर्ण कानूनों, वाणिज्यिक प्रतिष्ठान अधिनियम, 1956 और कारखाना अधिनियम, 1948, में संशोधन को मंज़ूरी दे दी गई है। नए नियमों के अनुसार, दैनिक कार्य समय 9 घंटे से बढ़ाकर 10 घंटे कर दिया गया है, जिसमें 30 मिनट का ब्रेक भी शामिल होगा।

सप्ताह में 48 घंटे से अधिक काम करने वाले कर्मचारियों को दोगुना वेतन मिलेगा।

एक महत्वपूर्ण बदलाव के तहत, महिला कर्मचारियों के लिए रात्रिकालीन कार्य पर प्रतिबंध हटा दिया गया है। अब से, महिला कर्मचारी चाहें तो अपनी लिखित सहमति देकर रात में भी काम कर सकती हैं। इसके लिए राज्य सरकार उनकी सुरक्षा और आवागमन की उचित व्यवस्था करेगी। ये सभी नियम उन प्रतिष्ठानों में लागू होंगे जहाँ 20 से अधिक कर्मचारी हैं और प्रतिष्ठानों में ओड़िया भाषा में साइनबोर्ड लगाना अनिवार्य होगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण और 'व्यापार सुगमता' के लिए ये सुधार आवश्यक हैं। यह बदलाव प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में लाया गया है और इससे देश में 13 लाख करोड़ रुपये का निवेश होगा और 13 लाख लोगों के लिए रोजगार का सृजन होगा।

शिक्षा के क्षेत्र में, गोदावरी आदर्श विद्यालय योजना को मंज़ूरी दी गई है। इसका उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति के लक्ष्यों को पूरा करते हुए प्रत्येक पंचायत में गुणवत्तापूर्ण बुनियादी शिक्षा प्रदान करना है। पहले चरण में, लगभग 12,000 करोड़ रुपये की लागत से 2,200 मॉडल स्कूल बनाए जाएँगे। प्रत्येक स्कूल को 5 करोड़ रुपये की लागत से बेहतर बुनियादी ढाँचा और शिक्षक प्रदान किए जाएँगे।

अन्य प्रस्तावों में क्योंझर जिले के घाटगाँव तारिणी मंदिर परिसर के लिए एक व्यापक विकास योजना शामिल है। श्रद्धालुओं की बढ़ती संख्या को ध्यान में रखते हुए, 59 एकड़ से अधिक क्षेत्र में विकास कार्य किए जाएँगे। इस योजना के तहत 246 बिस्तरों वाला यात्री छात्रावास, बाज़ार परिसर, नारियल गोदाम और अन्य सुविधाओं के निर्माण पर 226 करोड़ रुपये खर्च होंगे।

ड्रम्स का विज्ञान और रिदमशाला: तनाव से मुक्ति का सर्वोत्तम साधन

आज की तेज़ रफ्तार ज़िंदगी में तनाव हर किसी का साथी बन गया है। युवाओं से लेकर बच्चों और बड़ों तक, हर कोई किसी न किसी रूप में तनाव का सामना करता है। ऐसे में ज़रूरत है ऐसे उपाय की, जो न केवल मन को शांत करे बल्कि भीतर की ऊर्जा को सकारात्मक दिशा दे। ड्रमिंग (Drumming) ऐसा ही एक अद्भुत साधन है, और रिदमशाला (Rhythmshala) इसी कला को युवाओं तक पहुँचाने का अनूठा प्रयास है।

ड्रमिंग का विज्ञान

ड्रम बजाना केवल एक संगीत साधना नहीं है, बल्कि यह विज्ञान और मनोविज्ञान से भी गहराई से जुड़ा है।

शोध बताते हैं कि जब हम ड्रम बजाते हैं तो शरीर से एंडॉर्फिन (Endorphin) नामक हार्मोन निकलते हैं, जो प्राकृतिक रूप से तनाव कम करते हैं।

ड्रमिंग के दौरान शरीर और दिमाग़ के बीच तालमेल (coordination) बढ़ता है, जिससे एकाग्रता (concentration) और आत्मविश्वास (confidence) विकसित होता है।

यह एक प्राकृतिक ध्यान (meditation) की तरह काम करता है, जहाँ हर बीट (beat) हमें वर्तमान क्षण में जीना सिखाती है।

युवा और ड्रमिंग की ज़रूरत

आज के युवा मोबाइल और स्क्रीन की दुनिया में उलझे रहते हैं। मानसिक दबाव, प्रतियोगिता और भविष्य की चिंता उन्हें भीतर से तोड़ने लगती है। ऐसे में ड्रमिंग न केवल एक कला है बल्कि जीवन जीने की नई दिशा भी है।

यह युवाओं को अनुशासन, टीमवर्क और नेतृत्व का पाठ सिखाती है।

ड्रमिंग सीखने से क्रोध और नकारात्मक ऊर्जा संगीत में ढल जाती है, जिससे मन हल्का और प्रसन्नचित्त हो जाता है।

यह आत्म-अभिव्यक्ति (self-expression) का सबसे आसान और प्रभावी माध्यम है।

रिदमशाला की भूमिका

रिदमशाला सिर्फ़ एक संगीत मंच नहीं है, बल्कि यह युवाओं के लिए आत्म-खोज और आत्म-विकास की यात्रा है। यहाँ बच्चों और युवाओं को ड्रमिंग के ज़रिए जीवन की धड़कन महसूस कराई जाती है। ड्रमिंग सिखाने के साथ-साथ उन्हें यह भी समझाया जाता है कि कैसे ताल और लय केवल संगीत तक सीमित नहीं हैं, बल्कि यह जीवन का मूल मंत्र है।

ड्रमिंग का विज्ञान बताता है कि यह केवल संगीत नहीं, बल्कि जीवन को तनाव-मुक्त और ऊर्जावान बनाने का अद्भुत साधन है। युवाओं को इसे केवल एक हॉबी की तरह नहीं, बल्कि आत्म-विकास की यात्रा के रूप में अपनाना चाहिए। रिदमशाला का संदेश भी यही है—

"ज़िंदगी को अपनी लय में ढालो, और हर धड़कन को उत्सव बना दो।"

भारत वर्ष का हर्ष

तुम नमक नहीं, चंदन हो, वीर,
हर चौके, छक्के में दिखा दिया धीर।
देशभर में फैल गया अद्भुत हर्ष,
सदा चमकते रहो हमारे भारत वर्ष।

साहस तुम्हारा निखरा यूँ हर पल,
चुनौती भी थमी, सूरज गया ढल।
दर्शकों के दिलों में बसा भारत वर्ष,
गूँजा गगन में तब भारत का हर्ष।

खिलाड़ी नहीं केवल, प्रेरणा हो तुम,
विश्व ने देखा विजय का तिलक हो तुम।
हर रन और कैच में बरसा हर्ष,
सारे दिलों में गूँजा अद्भुत भारत वर्ष।

नमन है तुम्हें, आज रणवीरों की तरह,
विकट परिस्थितियों में शूरवीरों की तरह।
वीरता की गाथा गूँजी पूरे भारत वर्ष,
जो सजाता मैदान को बनकर हर्ष।

हार की परवाह न की, झुके नहीं कभी,
सपनों को सच कर दिखाया मैदान में सभी।
सशक्त और निर्भीक भारत का हर्ष,
सफलता की धूप खिली पूरे भारत वर्ष।

तुम नमक नहीं, चंदन हो, वीर,
सदा चमकते रहो, रखो मन में धीर।

– डॉ सत्यवान सौरभ

रैगिंग पर अंकुश लगाना सामूहिक जिम्मेदारी है

डॉ.मुश्ताक़ अहमद शाह

रैगिंग एक गंभीर और सामाजिक रूप से चिंताजनक समस्या है जो आज भी देश के अनेक शैक्षणिक संस्थानों में विद्यमान है। यह केवल मज़ाक या मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि विद्यार्थियों के जीवन और व्यक्तित्व पर गहरा और कभी-कभी स्थायी प्रभाव डालने वाली मानसिक और शारीरिक प्रताड़ना है। रैगिंग के कारण नए छात्रों में गहरी दहशत और डर पैदा हो जाता है। कई बार यह डर उनके आत्मविश्वास को तोड़ देता है और वे अपने शैक्षणिक जीवन में ठीक से आगे नहीं बढ़ पाते। मानसिक प्रभाव के रूप में छात्र तनाव, चिंता, अवसाद और अकेलेपन जैसी समस्याओं का सामना करने लगते हैं, जो कभी-कभी आत्महत्या जैसे गंभीर कदम उठाने तक पहुंच जाती हैं। शारीरिक प्रभाव में बलपूर्वक कार्य कराना, शारीरिक यातना, मारपीट या अपमानजनक कार्य शामिल होते हैं जो उनके शरीर पर स्थायी नुकसान पहुँचा सकते हैं। शैक्षिक प्रभाव यह होता है कि भय और तनाव के कारण छात्र अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते और उनके प्रदर्शन पर प्रतिकूल असर पड़ता है। व्यक्तित्व के स्तर पर यह आत्मविश्वास की कमी, आत्मसम्मान का ह्रास और सामाजिक रूप से अलग-थलग पड़ जाने की स्थिति उत्पन्न करता है। भारत में रैगिंग को कानूनी अपराध माना गया है और इसके विरुद्ध सख्त प्रावधान बनाए गए हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने सभी शैक्षणिक संस्थानों को रैगिंग विरोधी समितियाँ बनाने, सहायता हेल्पलाइन स्थापित करने और दोषियों पर कठोर अनुशासनात्मक कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। प्रत्येक संस्थान में एंटी-रैगिंग सेल होना चाहिए और शिकायत दर्ज कराने के लिए गोपनीय व सुरक्षित माध्यम उपलब्ध कराना अनिवार्य होना चाहिए। रैगिंग करने वाले छात्रों को न केवल संस्थागत दंड मिलना चाहिए जैसे निष्कासन, जुर्माना या निलंबन बल्कि उन पर कानूनी कार्यवाही भी होनी चाहिए। रैगिंग को रोकने के लिए केवल सख्त कानून पर्याप्त नहीं हैं बल्कि शिक्षा संस्थानों को संवेदनशील और सहयोगपूर्ण वातावरण तैयार करना होगा। नए छात्रों का स्वागत सकारात्मक गतिविधियों से करना चाहिए ताकि उनमें आत्मीयता और अपनापन बढ़े। वरिष्ठ और कनिष्ठ छात्रों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों को बढ़ावा देने के लिए सांस्कृतिक और खेलकूद गतिविधियाँ आयोजित की जा सकती हैं। माता-पिता और शिक्षकों को भी सतर्क रहकर बच्चों में किसी भी व्यवहारिक परिवर्तन को गंभीरता से देखना चाहिए। रैगिंग पर अंकुश लगाना सामूहिक जिम्मेदारी है। यह केवल प्रशासन या कानून का कार्य नहीं बल्कि हर छात्र, शिक्षक और अभिभावक की नैतिक जिम्मेदारी भी है। डर और दहशत के वातावरण में शिक्षा का सच्चा उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता। इसलिए आवश्यक है कि हम रैगिंग के खिलाफ एकजुट होकर आवाज उठाएँ और छात्रों को एक सुरक्षित, सहयोगपूर्ण व सम्मानजनक माहौल प्रदान करें ताकि वे आत्मविश्वास और सफलता के साथ अपने शैक्षिक और व्यक्तिगत जीवन में आगे बढ़ सकें।

तेलंगाना राज्य की राजधानी हैदराबाद शहर शिवराम पल्ली में निवास करते हुए...

तेलंगाना राज्य की राजधानी हैदराबाद शहर शिवराम पल्ली में निवास करते हुए, मैं आपको अपने बारे में बताना चाहता हूं। मेरा नाम धर्माराम ढाका है, और मैं एक किसान परिवार के बेटे के रूप में 1971 में राजस्थान के पाली जिला जैतारण शहर में जन्मा था।

मैंने 1988 से हैदराबाद में जाट समाज के ढाका परिवार के साथ अपना जीवन शुरू किया और यहां एक व्यापार शुरू किया। इसके बाद, मैंने हैदराबाद जाट समाज की कई संस्थाओं और अन्य संस्थाओं में अध्यक्ष पद पर सेवाएं प्रदान की हैं।

मेरे पद और जिम्मेदारियां:

- प्रदेश अध्यक्षः तेलंगाना जाट एकता मंच
- संस्थापक एवं परामर्शदाताः जाट समाज ट्रस्ट हैदराबाद
- पूर्व चेयरमैनः जाट समाज ट्रस्ट हैदराबाद
- परामर्शदाता सहयोगीः विर

तेजाजी जाट समाज भोनगिरी तेलंगाना
- ज्वाइंट सेक्रेटरीः तेलंगाना पॉन ब्रोकर्स एसोसिएशन
- प्रबंध उपाध्यक्ष एवं प्रचार मंत्रीः महानगर ज्वेलर्स एण्ड पॉन ब्रोकर्स असोसिएशन, हैदराबाद
- हैदराबाद कारवान जियागुड़ा डिवीजन भाजपा उपाध्यक्ष
- मैत्री मेम्बरः हैदराबाद पुलिस डिपार्टमेंट
- प्रधान संयोजकः रामदेव नवयुवक मण्डल शिवरामपल्ली, हैदराबाद
- सहयोगीः रामदेवरा दरबार शिवारामपल्ली
- अध्यक्षः गायत्री परिवार शाखा शिवरामपल्ली, हैद्राबाद

मेरी उपलब्धियां:

- महाराज सुरजमल वेलफेयर फाउण्डेशन (भारत) तेलंगाना प्रदेश अध्यक्ष बने हैं
- कोरोना काल में बहुत अच्छा सहयोग किया
- आज हैदराबाद में ढाका नाम से एक पहचान बनाई है और ढाका नाम से ही जाने जाते हैं
- सर्व समाज के लिए हमेशा सेवा में तैयार रहते हैं

*मेरी कर्म भूमि हैदराबाद और जन्म भूमि जैतारण है ।मैं हमेशा अपने समाज और देश के लिए काम करने के लिए तैयार रहता हूं। सर्व समाज के लिए सेवा में कभी तैयार रहते हैं।

प्रतिरोध कभी मरता नहीं

(रिपोर्ट : शांतनु डे, अनुवाद : संजय पराते)

अपने संस्मरण ₹मेमोरी ऑफ़ फ़ॉरगेटफुलनेस₹ में, प्रतिष्ठित फ़िलिस्तीनी कम्युनिस्ट कवि महमूद दरवेश ने अपने मित्र, प्रसिद्ध क्रांतिकारी कवि फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ के साथ एक गहन बातचीत का वर्णन किया है। यह प्रभावशाली पुस्तक लेबनानी गृहयुद्ध के दौरान बेरूत की 88 दिनों की भयावह घेराबंदी और 1982 में लेबनान पर इज़राइली आक्रमण का वर्णन करती है।

पाकिस्तान से हमारे महान मित्र, फ़ैज़ अहमद फ़ैज़, एक और सवाल पूछने में व्यस्त हैः

'कलाकार कहाँ हैं?'

'कौन से कलाकार, फ़ैज़?' मैं पूछता हूँ।

बेरूत के कलाकार।'

'आप उनसे क्या चाहते हैं?'

'इस युद्ध को शहर की दीवारों पर चित्रित करना।'

'आपको क्या हो गया है?' मैं चकित हूँ।

'क्या आपको दीवारें गिरती हुई नहीं दिख रही हैं?'

फ़ैज़ और दरवेश अब हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनकी विरासत ज़िंदा है। बेरूत की आत्मा आज भी ज़िंदा है, अटूट। लेबनान ज़िंदा है। और उनकी आत्मा कवियों, कलाकारों और लेखकों की आवाज़ों में ज़िंदा है।

दीवारें खड़ी हैं, अपने निशान और चटक रंगों के साथ। पिछले साल सितंबर में इज़राइली आक्रमण के बाद बचे खंडहरों में भित्तिचित्र -- जो विनाश से उपजी एक चुनौतीपूर्ण कला है -- जान फूंकते हैं।

यह शहर भूमध्य सागर के बिल्कुल किनारे बसा है, और यदि आप यहां घूमेंगे, आप देखेंगे कि ऊँची, बहु-मंज़िला इमारतों की दीवारें अद्भुत, चमकदार भित्तिचित्रों से सजी हैं। यहाँ तक कि छोटी, ढहती दीवारें भी प्रतिरोध की शक्तिशाली पुकार हैं। उदाहरण के लिए, क्राउन प्लाज़ा की ओर जाने वाले रास्ते को ही लें, जहाँ एक छोटी-सी दीवार, जो सिर्फ़ 2.5 फ़ीट ऊँची है, पर लाल सुलेख में एक आकर्षक भित्तिचित्र बना है : 'निरंतर संघर्ष की शपथ'। यह अरबी लिपि में लिखा है, और उसके ऊपर दाहिने कोने में अंग्रेज़ी अनुवाद लिखा है— 'आज का गौरव सिर्फ़ गोली के लिए है'। कैफ़े में, आपको अक्सर स्टालिन, चे ग्वेरा और कभी-कभी पुतिन के चेहरे भी भित्तिचित्र कला में साथ-साथ दिखाई देंगे।

विद्रोही बेरूत की दीवारें क्रांतिकारी कला से सजी हैं। शहीद चौक के पास, लाल रंग से लिखे जीवंत भित्तिचित्रों पर बेबाकी से लिखा है, '#फिलिस्तीन + लेबनान = क्रांति।' यह प्रतिष्ठित चौक लंबे समय से विरोध प्रदर्शनों का केंद्र रहा है, जिनमें फिलिस्तीन के प्रति एकजुटता जताने वाले प्रदर्शन भी शामिल हैं।

हसन हमदान, जिन्हें महदी अमेल के नाम से ज़्यादा जाना जाता है, एक प्रसिद्ध मार्क्सवादी विचारक थे, जिन्होंने मार्क्सवादी अवधारणाओं को अरब संदर्भ में ढालने के लिए अथक प्रयास किया। हालाँकि वे अब इस दुनिया में नहीं हैं, लेकिन उनकी विरासत आज भी कायम है। स्टेंसिल द्वारा बनाए गए उनके चित्र बेरूत में जगह-जगह लगे हैं, जिन पर लिखा है— 'महदी अमेल को पढ़ें!' अमेल लेबनानी विश्वविद्यालय में प्रोफ़ेसर और लेबनानी कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के एक प्रमुख सदस्य थे। 18 मई, 1987 को उनके घर के पास अल्जीरिया स्ट्रीट पर उनकी हत्या कर दी गई थी। उनका पसंदीदा कथन है : 'जब तक आप प्रतिरोध कर रहे हैं, तब तक आप पराजित नहीं होते।'

यही कारण है कि लेबनान और लेबनानी कम्युनिस्ट पार्टी आज भी दृढ़ता से यह विश्वास करती है कि प्रतिरोध कभी मरता नहीं -- यह दृढ़ विश्वास इस शक्तिशाली धारणा में निहित है कि जब तक आप प्रतिरोध करते हैं, तब तक आप पराजित नहीं होते।

इससे पहले हमारी चर्चा में शामिल, 20वीं सदी के महानतम उर्दू शायरों में से एक, फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ ने जून 1982 में इज़राइली आक्रमण के बीच, ₹एक नगमा कर्बला-ए-बेरूत के लिए₹ (बेरूत के युद्धक्षेत्र के लिए एक गीत) लिखा था। यह कविता बेरूत को इस प्रकार चित्रित करती हैः

हर योद्धा, सिकंदर महान की ईर्ष्या का विषय,
हर लड़की, लैला जैसी खूबसूरत।
बेरूत, लेबनान का हृदय,
बेरूत, हमारी दुनिया का श्रृंगार,
बेरूत, जन्नत के बगीचे जैसा सुंदर।

17 सितंबर, 2024 को लेबनान की सड़कों पर छोटे-छोटे विस्फोटों की एक श्रृंखला गूंज उठी, जिससे व्यापक भ्रम और आतंक फैल गया। पेजर हमले के नाम से जानी जाने वाली इस घटना ने लेबनान के विरुद्ध इज़राइल के युद्ध में एक निर्णायक मोड़ ला दिया। अगले दिन, विस्फोटकों से लदे वॉकी-टॉकियों में धमाके होने से भय की एक और लहर दौड़ गई, जिससे लेबनानी जनता और भी अधिक स्तब्ध हो गई।

22 सितंबर को, इजरायली दैनिक हारेत्ज़ ने बताया कि नेतन्याहू के प्रवासी मामलों के मंत्री अमीचाई चिक्ली ने घोषणा की कि लेबनान को 'एक राज्य के रूप में परिभाषित नहीं किया जा सकता' और इसलिए इजरायली सेना को लेबनानी क्षेत्र पर 'कब्जा' करने और एक 'बफर ज़ोन' स्थापित करने का अधिकार है।

23 सितंबर को, जो 1975-1990 के गृहयुद्ध के बाद से देश का सबसे घातक दिन था, इज़राइल ने हवाई हमलों की एक विनाशकारी श्रृंखला शुरू की, जिसके पहले दौर में लेबनान में 500 से ज़्यादा लोग मारे गए।

27 सितंबर को, इज़राइल ने दक्षिणी बेरूत के एक उपनगर दहियाह पर हमला करके लगभग 80 बंकर-तोड़ बम गिराकर हिज़्बुल्लाह के लंबे समय से महासचिव रहे हसन नसरल्लाह की हत्या कर दी, जिसके परिणामस्वरूप कम से कम 33 लोग मारे गए। इसके बाद शुरू हुआ इज़राइली बमबारी अभियान दो महीने से ज़्यादा समय तक चला, जिसमें 3,000 से ज़्यादा लोगों की जान गई और हज़ारों विदेशी नागरिकों और मज़दूरों सहित लगभग दस लाख लोग विस्थापित हुए।

27 नवंबर को, हिजबुल्लाह और इजरायल के बीच युद्ध विराम सुबह के शुरुआती घंटों में लागू हो गया, जो संघर्ष में एक महत्वपूर्ण विकास को चिह्नित करता है, (लेबनान के भयानक वर्ष : विस्फोटक पेजर से लेकर इजरायल के कब्जे तक! -- अल-जजीरा, 17 सितंबर, 2025)।

लेबनानी कम्युनिस्ट पार्टी के 'पीपुल्स एड' संगठन ने इस कमी को पूरा करने के लिए आगे आकर संसाधन जुटाने, आश्रय स्थलों की खोज करने और भोजन की आपूर्ति के लिए एक अभियान शुरू किया है। कम्युनिस्ट स्वयंसेवक भीड़ भाड़ वाली सड़कों और शहरों में गश्त करते हैं, लोगों को शरण दिलाने और चिकित्सा सहायता प्रदान करने में मदद करते हैं। क्रूर हवाई हमलों से पहले, लेबनानी कम्युनिस्ट पार्टी (एलसीपी) के पोलित ब्यूरो ने दुनिया भर की कम्युनिस्ट और मज़दूर पार्टियों को एक खुला पत्र जारी कर एकजुटता की अपील की थी।

एक साल बाद, लेबनानी कम्युनिस्ट पार्टी (एलसीपी) ने लेबनानी और फ़िलिस्तीनी जनता के साथ एक अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता यात्रा का आयोजन किया। एलसीपी के अनुसार, 'फ़िलिस्तीनी जनता के ख़िलाफ़ हो रहे नरसंहार, क्षेत्र के लोगों और राज्यों के ख़िलाफ़ ज़ायोनी आक्रमण के बढ़ने, और लेबनान और उसकी जनता पर आपराधिक ज़ायोनी आक्रमण के बाद—और लेबनानी राष्ट्रीय प्रतिरोध मोर्चा की स्थापना की वर्षगांठ के उपलक्ष्य में — एलसीपी ने 14 से 17 सितंबर तक बेरूत, लेबनान में एक अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता यात्रा का आयोजन किया था।

इस एकजुटता यात्रा में भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) सहित ग्रीस, पुर्तगाल, बेल्जियम, जर्मनी, साइप्रस, स्वीडन, सर्बिया, आयरलैंड, स्पेन, रोमानिया और हंगरी सहित कई देशों की 33 कम्युनिस्ट पार्टियों, समाजवादी पार्टियों, मज़दूर दलों और प्रगतिशील आंदोलनों ने भाग लिया। इस यात्रा में उत्तरी अफ्रीका और मोरक्को के साथ-साथ फ़िलिस्तीन, सीरिया, तुर्की, जॉर्डन, कुवैत और इराक की कम्युनिस्ट पार्टियों ने भी भाग लिया। वेनेज़ुएला की कम्युनिस्ट पार्टी का भी प्रतिनिधित्व था।

इस यात्रा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बेरूत में फ़िलिस्तीनी शिविर का दौरा करना और विचारों का आदान-प्रदान करना और संवाद में शामिल होना था। पाँच घंटे से ज़्यादा समय तक चले एक दिवसीय सेमिनार में 'जन संघर्ष और अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता' पर ध्यान केंद्रित किया गया। अगले दिन, अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों और पार्टी की स्वास्थ्य शाखा, 'पॉपुलर एड एसोसिएशन' के बीच दहियेह (शाब्दिक रूप से 'उपनगर') में एक विस्तृत चर्चा हुई, जो अभी भी इज़राइली बमबारी के निशान झेल रहा था। दहियेह के रास्ते में, बहु-मंज़िला इमारतों के अवशेषों में तबाही साफ़ दिखाई दे रही थी, जो खंडित भूसी में तब्दील हो गई थीं और मलबे की परतों के नीचे दबी हुई थीं, जो 27 सितंबर और 11 अक्टूबर के बीच इज़राइल द्वारा निशाना बनाए गए 50 स्थानों की भयावह याद दिलाती हैं।

इज़राइल राज्य द्वारा बसाई जा रही उपनिवेशवादी बस्तियां एक 'ग्रेटर इज़राइल' की अपनी महत्वाकांक्षा से प्रेरित है। यह लक्ष्य 18 जनवरी, 2024 को तब रेखांकित हुआ, जब इज़राइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने आई-24 के साथ एक साक्षात्कार में विवाद खड़ा कर दिया। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि 'समझौते के साथ या उसके बिना, इज़राइल राज्य को जॉर्डन नदी के पश्चिम के संपूर्ण क्षेत्र पर सुरक्षा नियंत्रण रखना होगा,' और प्रभावी रूप से 'नदी से समुद्र तक' फ़िलिस्तीन पर एकमात्र संप्रभुता का दावा करना होगा।

हाल ही में बनी एक डॉक्यूमेंट्री, 'इज़राइलः एक्सट्रीमिस्ट्स इन पावर' में, नेतन्याहू सरकार में एक अति-दक्षिणपंथी व्यक्ति, इज़राइली वित्त मंत्री बेज़ेलेल स्मोट्रिच ने एक 'यहूदी राज्य' के अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट किया। बाइबिल की भविष्यवाणी का हवाला देते हुए, स्मोट्रिच ने घोषणा की कि 'यरूशलेम का भविष्य दमिश्क तक विस्तार होगा', और आगे कहा कि यह विस्तारवादी दृष्टिकोण जॉर्डन, सीरिया, लेबनान, इराक, मिस्र और सऊदी अरब के क्षेत्रों को भी शामिल करता है। नेतन्याहू के नेतृत्व में रंगभेदी ज़ायोनी शासन का दृष्टिकोण बिल्कुल स्पष्ट है -- विस्तृत इज़राइल।

हमारा नारा, 'नदी से समुद्र तक, फ़िलिस्तीन आज़ाद होगा', पूर्व में जॉर्डन नदी और पश्चिम में भूमध्य सागर के बीच की ज़मीन को दर्शाता है। गौरतलब है कि नेतन्याहू की लिकुड पार्टी का अलग दृष्टिकोण के साथ : 'समुद्र और जॉर्डन के बीच, केवल इज़राइली संप्रभुता होगी।' वास्तव में, उनका अंतिम लक्ष्य संपूर्ण पश्चिमी तट है, जिसे स्मोट्रिच 'यहूदिया और सामरिया' कहते हैं।

सीपीआई(एम) प्रतिनिधिमंडल में नीलोत्पल बसु (पीबीएम), शांतनु डे और वी.पी. सानु शामिल थे, जो क्रमशः पश्चिम बंगाल और केरल राज्य समितियों के सदस्य थे। इसी पृष्ठभूमि में, प्रतिनिधिमंडल के नेता नीलोत्पल बसु ने संगोष्ठी को संबोधित करते हुए जन संघर्ष को व्यापक स्तर पर मज़बूत करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा, ₹अमेरिका-इज़राइल धुरी का सामना करने, फ़िलिस्तीन की आज़ादी की लड़ाई का समर्थन करने और क्षेत्र की संप्रभुता व न्यायपूर्ण शांति के संघर्ष को मज़बूत करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता बढ़नी चाहिए।"

इस अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी ने माँग की :

-- गाजा में नरसंहार बंद करो!

-- फ़िलिस्तीन से दूर रहो - ज़ायोनवादी इज़राइली कब्ज़ा ख़त्म करो!

-- फ़िलिस्तीन को तुरंत आज़ाद करो!

-- पश्चिम एशिया में इज़राइली आक्रमण बंद करो!

-- दुनिया पश्चिम एशिया में शांति चाहती है!

(रिपोर्टर वामपंथी कार्यकर्ता हैं, जो लेबनान में अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता यात्रा में शामिल थे। अनुवादक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं।)

भाजपा जिला अध्यक्ष के नेतृत्व क्षमता पर सवाल

परिवहन विशेष न्यूज

राउरकेलाः प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शनिवार को झारसुगुड़ा कार्यक्रम में राउरकेला भाजपा के मंडल अध्यक्षों की उदासीनता व पीएम के कार्यक्रम से दूरी बनाने के मामले ने जिला अध्यक्ष पूर्णिमा केरकेटा की नेतृत्व क्षमता पर सवाल खड़ा कर दिया।पीएम के दौरे से पहले राउरकेला भाजपा में गुटबाजी और असंतोष खुलकर सामने आ गया। जिला अध्यक्ष पूर्णिमा केरकेटा की नेतृत्व क्षमता को लेकर मंडल अध्यक्षों ने गंभीर सवाल खड़े किए और कहा की वे कार्यकर्ताओं को अपने खर्च से पीएम के कार्यक्रम में जा सकते थे और जाने की इच्छा भी थी, लेकिन जिला अध्यक्ष व उनके एक दो लोगों के गैर जिम्मेदाना व मनमाने व्यवहार ने उन्हे व्यथित किया।पार्टी हाई कमान को इस ओर ध्यान देने की जरूरत है।

जानकारी के अनुसार, पीएम के कार्यक्रम में शामिल होने को लेकर शुक्रवार शाम जिला स्तर पर प्रस्तुति बैठक आयोजित की गई थी, लेकिन अधिकांश नेताओं ने इसमें रुचि नहीं दिखाई। बैठक में प्रत्येक मंडल से 40 कार्यकर्ताओं को एक बस के माध्यम से कार्यक्रम स्थल तक ले जाने का निर्देश दिया गया था। इसके एवज में उपेक्षा पूर्ण तरीके से दो हजार रुपये देने की बात कही गई, जिस पर तीखी बहस और हंगामा हुआ। कई मंडल अध्यक्षों का आरोप था कि जिला अध्यक्ष का समन्वय कमजोर और व्यवहार गैर जिम्मेदारना है। वह केवल चंद करीबी लोगों के नियंत्रण में आकर मनमानी करती हैं।

आधा दर्जन मंडल अध्यक्षों ने यहां तक आरोप लगाया कि पार्टी हाईकमान की ओर से एक मंडल के लिए दो हजार से अधिक रुपये की व्यवस्था थी, लेकिन जिला स्तर पर केवल दो हजार रुपये ही बताए गए। इससे साफ झलकता है कि कुछ लोगों ने पीएम के कार्यक्रम को निजी लाभ का साधन बना लिया।

यह पहली बार नहीं है जब पूर्णिमा केरकेटा पर सवाल उठे हों। इससे पहले अगस्त माह में तिरंगा अभियान के दौरान भी धन के दुरुपयोग और निजी स्वार्थ साधने के आरोप लगे थे।

अब झारसुगुड़ा में पीएम मोदी के कार्यक्रम से दूरी बना कर कई मंडल अध्यक्षों का न जाना न केवल जिला अध्यक्ष की कार्यशैली पर सवाल खड़ा करता है, बल्कि भाजपा की आंतरिक अनुशासन और एकजुटता पर भी गहरी चोट पहुँचाता है।जो आने वाले दिनों में और अधिक गंभीर रूप ले सकता है।

खान विभाग के अधीन बालू घाट आने से राजस्व में गिरावट

22 करोड़ की जगह मात्र 2.50 करोड़ रुपये ही सरकारी खजाने में पहुँचे

राउरकेलाः सुंदरगढ़ जिले के बालू घाट, पत्थर और मोरम मिट्टी खदान समेत लघु खनिजों का खनन अब राजस्व विभाग के बजाय खान विभाग के अधीन हो गया है। इसके बाद अवैध खनन माफिया सक्रिय हो गए हैं और बिना नीलामी के खनन तथा भारी वाहनों से परिवहन जारी है। इस कारण राजस्व विभाग का नियंत्रण लगभग समाप्त हो गया है।

2023-24 में जब लघु खनिज राजस्व विभाग के अधीन थे, तब 21.63 करोड़ रुपये राजस्व प्राप्त हुआ था। वहीं, 2024-25 में मात्र 2.50 करोड़ रुपये की वसूली हो पाई। जिले के 69 बालू घाटों में से 45 में खनन हो रहा है, जबकि कुल 173 लघु खदानों में से 117 बंद और 60 चल रहे हैं। इसमें 45 बालू घाट, 14 पत्थर खदान और एक मोरम मिट्टी खदान शामिल हैं। जानकारों के अनुसार विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न घाटों पर सिंडिकेट बनाकर बालू माफिया रेत निकालने के क्रम में खनन विभाग के कर्मचारियों से ही लगातार संपर्क में है वहीं नाम न छापने के शर्त पर सिंडिकेट के ही एक सदस्य ने कहा कि यदि समय के अनुसार फोन कॉल रिकॉर्ड व व्हाट्सअप चेक किए जाएं तो फोन के आधार पर ही इन सिंडिकेट के साथ संलग्न खनन कर्मचारी व तहसील के विभिन्न राजस्व निरीक्षकों के संपर्क होने का खुलासा स्वतः ही हो जाएगा। वहीं गाड़ियों को जब्त कर नाम मात्र जुर्माना के कारण वाहन मालिक भी अवैध लोडिंग से गुरेज नहीं करते इसलिये यहां झारखंड राज्य के तर्ज पर राजसात कर गाड़ियां जब्त कर नीलामी का प्रावधान होने पर ही अवैध लोडिंग पर लगाम लग सकेगा। तहसील व खनन के कुछ कर्मचारियों के भी सिंडिकेट में शामिल होना कहीं ना कहीं इस अवैध कारोबार को स्वतः बढ़ावा दे रहा है।

नीलामी वाले और बिना नीलामी वाले खदानों में अवैध खनन के कारण कोयल, देव, ब्राह्मणी और शंख नदियों सहित अन्य नदियों से जेसीबी, प्रोकलेन और ट्रैक्टर एंव हाइवा सह भारी व्यवसायिक वाहन के माध्यम से खनिज का परिवहन हो रहा है। बारिश के दौरान भी मशीनों के द्वारा नदी से लगातार बालू निकालकर वृहद मात्रा में आपूर्ति जारी है।

राजस्व मंत्री सुरेश पुजारी के निर्देश पर पानपोष अनुमंडल स्तर पर एनफोर्समेंट टीम गठित की गई है। राउरकेला खान विभाग के उप निदेशक विंबाधर सेठ ने बताया कि बालू और अन्य लघु खनिजों पर नजर रखने के लिए विशेष खान अधिकारी नियोजित हैं और अवैध खनन रोकने के लिए छापेमारी जारी है।

सुप्रीम कोर्ट द्वारा सारंडा को अभ्यारण बनाने का प्रयास राज्य सरकार के लिए बड़ा नुकसान

लोगों की राय जानने मंत्रियों का समूह गठित, 30 सितंबर को 56 गांव के मुंडा –माणकी हो रहे है गोलबंद

कार्तिक कुमार परिच्छा स्टेट हेड - झारखंड

किरीबुरू, झारखंड के पश्चिमी सिंहभूम स्थित सारंडा वन क्षेत्र को सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर वन्यजीव आश्रयणी घोषित करने की तैयारी शुरू हो गई है. राज्य सरकार ने मंत्रियों का समूह गठित कर स्थानीय लोगों से राय लेने की प्रक्रिया शुरू की है.

यह समूह मंगलवार को सारंडा का दौरा करेगा. खनन विभाग के अनुसार प्रस्तावित आश्रयणी क्षेत्र में आने वाले लगभग 4,710 हेक्टेयर के लौह अयस्क खदानों को बंद करना पड़ेगा, जिससे राज्य को करीब 13.22 लाख करोड़ रुपये के राजस्व का संभावित नुकसान होगा.

तेज कर दिया है. वे 30 सितंबर को छोटानागरा फुटबाल मैदान में सुबह 10 बजे से आमसभा करेंगे.

इस आमसभा में क्षेत्र के हजारों ग्रामीण जुटेंगे. आयोजकों ने ग्रामीणों से पारंपरिक हथियार और पहनावे के साथ शामिल होने की अपील की है. स्थानीय ग्रामीणों और जनप्रतिनिधियों का कहना है कि यदि सारंडा को सेंचुरी घोषित किया गया, तो यहां के मूल निवासियों का जीवन संकट में पड़ जाएगा. सभा का मकसद यह संदेश देना है कि सारंडा के लोग जल, जंगल और जमीन के सवाल पर किसी भी कीमत पर समझौता नहीं होगी .

ग्रामीणों का स्पष्ट कहना है कि सरकार को कोई भी निर्णय लेने से पहले स्थानीय लोगों की भावनाओं और अधिकारों का सम्मान करना चाहिए. सभा में 56 गांवों के मुण्डा-मानकी और पंचायत प्रतिनिधि शामिल होंगे. इनमें लागुड़ा देवगम (मानकी), बामिया मांझी (पूर्व जिला परिषद सदस्य), जेना वाडिंग, दुला चाम्पिया, सोहन मांझी, लालसय चाम्पिया, सुनिल बारला, लेबेया सिदू, सिताराम मांझी, मोहन देवगम, ओड़ेया पुरती, रामो सिदू, मोटाये सिदू, कुदा चाम्पिया, मांगता सुरीन, अमर सिंह सिदू, बुधराम सुरीन, मंगल देवगम, लालू बेसरा, लखन चाम्पिया, टुकुई हांसदा, सुखनात बाहंदा समेत कई स्थानीय नेता और बुद्धिजीवी उपस्थित रहेंगे.

सभा में जोबा माझी, सांसद, चाईबासा लोकसभा, दीपक बिरूवा, मंत्री, झारखंड सरकार, जगत माझी, विधायक, मनोहरपुर, सोनाराम सिंकू, विधायक, जगन्नाथपुर, निरल पुरती, विधायक, माझगांव, दशरथ गगराई, विधायक, खरसावां, सुखराम उरांव, विधायक, चक्रधरपुर को बुलाया गया ह।

गैंगस्टरों से जुड़े अपराधों की रिपोर्ट हेल्पलाइन '1800-330-1100' पर करें – पुलिस प्रमुख

एडीजीपी की सीधी निगरानी में तुरंत की जाएगी कार्रवाई

पंजाब पुलिस सरहद पार से हो रही नशे और हथियारों की तस्करी रोकने के लिए सक्रिय

बॉर्डर बेल्ट के पुलिस अधिकारियों के साथ सुरक्षा को लेकर बैठक

त्योहारों को ध्यान में रखते हुए पंजाब भर में कड़े सुरक्षा इंतज़ाम – 57 अतिरिक्त कंपनियां तैनात

अमृतसर, (साहिल बेरी)

मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के दिशा-निर्देशों के तहत संगठित अपराध के खिलाफ जंग को और मज़बूत करने के लिए अहम कदम उठाते हुए पंजाब पुलिस ने नागरिकों के लिए एक समर्पित टोल-फ्री हेल्पलाइन 1800-330-1100 शुरू की है। इस हेल्पलाइन के ज़रिए लोग डराने-धमकाने, ज़बरन वसूली और गैंगस्टरों से जुड़ी अन्य संगठित आपराधिक गतिविधियों की गुप्त रूप से रिपोर्ट कर सकते हैं।

अमृतसर में आयोजित प्रेस मीट के दौरान यह जानकारी देते हुए पंजाब के डीजीपी गौरव यादव ने बताया कि यह हेल्पलाइन पंजाब पुलिस की एंटी-गैंगस्टर टास्क फोर्स (AGTF) द्वारा संचालित होगी, जो नागरिकों को अपराध की सूचना देने के लिए सीधा और गोपनीय चैनल उपलब्ध कराती है।

डीजीपी गौरव यादव ने भरोसा दिलाया कि हेल्पलाइन पर कॉल करने वालों की पहचान पूरी तरह सुरक्षित रखी जाएगी और प्राप्त शिकायतों पर त्वरित व समन्वित कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने बताया कि इस हेल्पलाइन की निगरानी एडीजीपी (AGTF) प्रमोद बान करेंगे ताकि हर सूचना पर प्रभावशाली और तुरंत कार्रवाई सुनिश्चित की जा सके।

आज अमृतसर में बॉर्डर ज़िलों के पुलिस प्रमुखों—डीआईजी बॉर्डर रेंज एस. नानक सिंह, अमृतसर, बटाला, तरनतारन, गुरदासपुर और पठानकोट के पुलिस अधिकारियों तथा AIG SSOC के साथ सुरक्षा संबंधी बैठक के बाद डीजीपी ने कहा कि पंजाब पुलिस राज्य में अमन-कानून और सुरक्षा बनाए रखने के लिए लगातार काम कर रही है। त्योहारों के सीज़न में बीएसएफ और अन्य फोर्स की 57 अतिरिक्त कंपनियों को भी तैनात किया गया है।

उन्होंने कहा कि ऑपरेशन संधूर के बाद पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी राज्य में शांति भंग करने की लगातार कोशिश कर रही है, लेकिन पंजाब पुलिस ने बीएसएफ के साथ समन्वय करके हर साज़िश को नाकाम किया है। इसी तरह हालिया बाढ़ का फायदा उठाकर पाकिस्तान से नशे और छोटे हथियारों की तस्करी की कोशिश की गई, जिसे पंजाब पुलिस ने विभिन्न स्थानों से बरामद कर नाकाम कर दिया।

डीजीपी ने बताया कि अब तक एंटी-गैंगस्टर टास्क फोर्स के सहयोग से 2347 गैंगस्टरों को गिरफ्तार किया जा चुका है और 886 आपराधिक मॉड्यूल ध्वस्त किए जा चुके हैं। इस दौरान 1968 हथियार भी बरामद किए गए हैं।

पंजाब सरकार द्वारा नशे के खिलाफ छेड़े गए युद्ध की जानकारी देते हुए श्री यादव ने बताया कि इस मुहिम के तहत पंजाब पुलिस ने 20,469 एफआईआर दर्ज की हैं, जिनमें 31,252 आरोपियों पर कार्रवाई की गई है। इनसे 1350 किलो हेरोइन, 433 किलो अफीम, 24,855 किलो भुक्की/पोस्त, 498 किलो गांजा, 36 लाख से अधिक नशीली गोलियां और 12.72 करोड़ रुपये की ड्रग मनी बरामद की गई है।

फिरौती संबंधी आ रही कॉलों के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने पंजाबवासियों से अपील की कि वे ऐसे अपराधियों के खिलाफ खुलकर सामने आएं ताकि इनका सफाया किया जा सके। उन्होंने बताया कि 90 प्रतिशत मामलों में फिरौती कॉल स्थानीय अपराधियों द्वारा की जाती हैं। पंजाब पुलिस की साइबर टीमें हर केस की जांच करके, चाहे आरोपी दुनिया के किसी भी कोने में हो, उसे क़ानूनी कार्रवाई में लाती हैं।

इस मौके पर एडीजीपी प्रमोद बान, एडीजीपी काउंटर इंटेलिजेंस अमित प्रसाद, कमिश्नर गुरप्रीत सिंह भुल्लर सहित कई वरिष्ठ पुलिस अधिकारी मौजूद थे।

पूजा पंडालों में पॉल्यूशन बोर्ड का जागरूकता अभियान केवल उपहास : डॉ. यादव

राउरकेला, संवाददाता।

स्टेट पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड (SPCB) द्वारा शहर और आसपास के विभिन्न पूजा पंडालों में चलाए जा रहे जागरूकता अभियान को लेकर सवाल उठने लगे हैं। राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा – ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव ने इसे "एक उपहास और खानापूर्ति मात्र" करार दिया है।

डॉ. यादव ने कहा कि विभाग वास्तविक जिम्मेदारियों से भटककर केवल औपचारिकता निभा रहा है। प्रदूषण नियंत्रण के नाम पर कर्मचारियों की कमी का बहाना बनाकर विभाग अनैतिक तरीके से क्रेशर, खदान और अन्य औद्योगिक संस्थानों को अनुमति देता है, जबकि प्रदूषण नियंत्रण की दिशा में कोई ठोस कदम नहीं उठाए जाते।

उन्होंने आरोप लगाया कि कुआरमुंडा क्षेत्र में एक लाख प्रेशर क्षमता वाले क्रेशर को बंद करने की सिफारिश कई महीने पहले की गई थी, किंतु आज तक कार्रवाई नहीं हुई। वहीं, आम नागरिकों की शिकायतों को भी नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है। यहाँ तक कि सूचना का अधिकार (RTI) जैसी संवैधानिक व्यवस्था को भी उनके कार्यालय में गंभीरता से नहीं लिया जाता।

डॉ. यादव ने बताया कि हाल ही में जनहित याचिका के एक मामले में अदालत ने स्वतंत्र जांच के आदेश दिए थे, जिससे विभाग की कार्यप्रणाली पर गंभीर प्रश्नचिह्न खड़ा हुआ है। उन्होंने कहा कि शिकायत दर्ज कराने का मतलब विभाग में आज भी "ढाक के तीन पात" से अधिक कुछ नहीं है।

उन्होंने जोर देकर कहा कि बोर्ड को दिखावटी जागरूकता कार्यक्रम छोड़कर प्रदूषण फैलाने वाले संयंत्रों और औद्योगिक इकाइयों की निष्पक्ष व पारदर्शी जांच करनी चाहिए। तभी पर्यावरण और जनहित की वास्तविक सुरक्षा संभव हो पाएगी।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023